रूहों का सफर

मौत के बाद

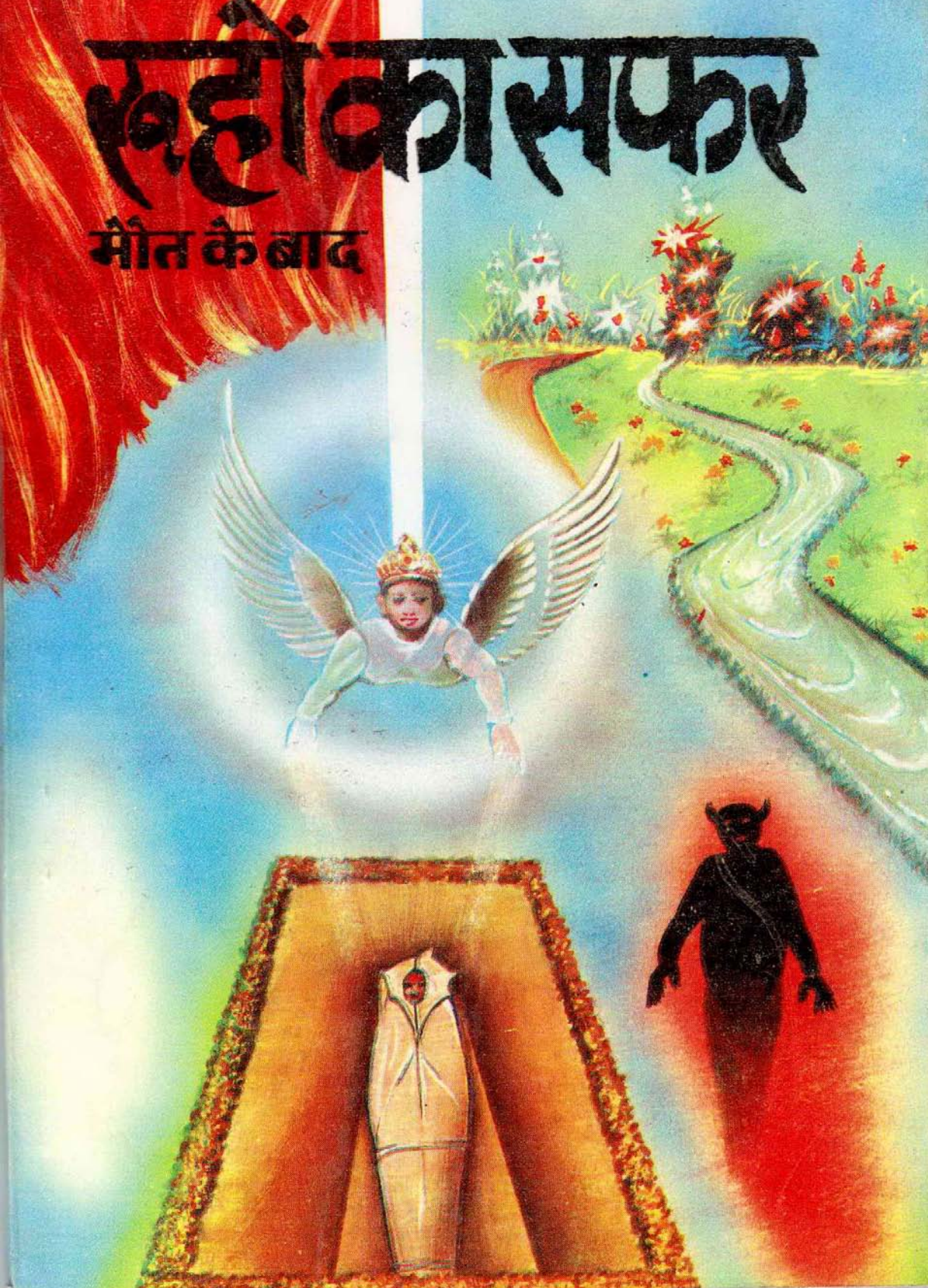

السفر الارواح بعد الممات

یا علی الاعلیٰ

रुहों का सफ़र

मौत के बाद क्या होगा?
आलमे बर्ज़ख़ की कैफ़ियत क्या है?

लेखक :
इज़रत हुज्जतुल-इस्लाम आक़ाए
सै॰ हसन नजफ़ी क़ोचानी

अनुवाद :
जनाब मिर्ज़ा
मोहम्मद अतहर साहब
एम॰ ए॰, बी॰ एड॰

हिन्दी लिपि परिवर्तन
सैय्यद मोहर्रम अली ज़ैदी

मिलने का पता

हैदरी कुतुब ख़ाना

१४/१४ मिर्ज़ा अली स्ट्रीट इमामबाड़ा रोड,
बम्बई-४०००००९

हदिया Rs. 20/-

https://downloadshiabooks.com/

नाम किताब : रुहों का सफ़र-मौत के बाद क्या होगा?

लेखक- हजरत हुज्जतुल-इस्लाम आक़ाए
सैय्यद हसन, क़ौचानी मद्देज़िल्लहू

अनुवाद जनाब मिर्ज़ा मोहम्मद अतहर
एम० ए०, बी० एड०

हिन्दी लिपि- सैय्यद मोहर्रम अली ज़ैदी

ज़ेरे एहतिमाम: सैय्यद मोहम्मद नकी

प्रकाशक : शानदार बुक डिपो लखनऊ-४

इन्सानी रुहें आस्मानी परिन्द हैं जो बश्री
अज्साम के क़फ़स में कैद हैं (रसूले-अकरम)

मौत को समझे हैं ग़ाफ़िल इखतितामे ज़िन्दगी,
है यह शामे ज़िन्दगी, सुब्हा दवामे ज़िन्दगी।
-इक़बाल

हैदरी कुतुब ख़ाना
१४/१४ मिर्ज़ा अली स्ट्रीट इमामबाड़ा रोड,
बम्बई-४०००००९

https://downloadshiabooks.com/

पढ़ने वालों से गुज़ारिश

काफ़ी दिनों से उर्दू में छपी किताब "रूहों का सफ़र" को पढ़ कर उर्दू–अरबी पढ़े लिखे लोग फ़ायदा उठा रहे थे और जिन्हें अल्लाह ने तौफ़ीक़ दी वह अपनी आख़ेरत संवारने की जुस्तजू में लग गये हैं। किताब की तारीफ़ सुनकर हिन्दी पढ़े लिखे लोग भी पढ़ना चाहते थे। इसी ज़रूरत के पेशे नज़र मैंने शानदार बुक डिपो को हिन्दी में छापने की गुज़ारिश की। चूंकि उनको बहुत से लोग इस के लिये ख़त लिख चुके थे। इस लिये उन्होंने मेरी गुज़ारिश क़ुबूल की। ख़ुदा उन्हें जज़ाए ख़ैर दे। शानदार बुक डिपो के इसरार पर मुझ जैसे कम इल्म ने इस किताब को हिन्दी रस्मुलख़त में तब्दील किया। चूंकि अरबी व उर्दू का हिन्दी में सही लिखना व पढ़ना बहुत मुश्किल काम है इस लिये इसमें ग़ल्तियां भी हुई हैं जिनके लिये मैं ख़ुदा वन्द करीम से माफ़ी चाहता हूँ। उम्मीद करता हूँ कि मोमनीने कराम भी मेरी कम इल्मी और ख़ुलूसे दिल को मद्दे नज़र रखते हुए जो ग़ल्तियां अन्जाने में या सहवन हो गई हैं उन्हें माफ़ फ़रमायें और मुत्तला फ़रमाने

https://downloadshiabooks.com/

की ज़हमत गवारा फ़रमायें ताकि जब दोबारा इस किताब की छपाई हो तो इसलाह कर ली जाय।

आख़िर में मैं क़ौम के उन नौजवानों से दर्दमन्दाना गुज़ारिश करता हूँ कि जो अरबी व उर्दू नहीं पढ़े हैं वह ख़ुद भी अरबी व उर्दू पढ़ें और बच्चों को भी इसकी तालीम दिला कर अपनी आख़ेरत संवारें। क्योंकि ज़्यादा तर दीनी किताबें इन्हीं ज़बानों में हैं। दरअस्ल हिन्दी में दीनी किताबें ग़ैर मुस्लिमों या जो भाई किसी मजबूरी से अरबी उर्दू नहीं पढ़े हैं उनके लिये है और यह सोच कर हिन्दी में छपी हैं कि न जानने से बेहतर है कि कुछ जाना जाय और जब ख़ुदा नेक जज़्बा अता करेगा तो फिर ख़ुद ही मोमिन दीनी तालीम हासिल करके अपनी दुनिया व आख़ेरत संवार लेगा इन्शाअल्लाह।

आख़िर में बारगाहे ख़ुदावन्दी में दुआगो हूँ कि वह अपनी रहमत के सदक़े में हमारे वालेदैन को अपनी जवारे रहमत और क़ुर्बे मोहम्मद व आले मोहम्मद अता फ़रमाए। आमीन

फ़क़ीर दरे-अहलेबैत

सैय्यद मोहर्रम अली ज़ैदी

सलोन–रायबरेली

https://downloadshiabooks.com/

भाग १

मंज़िले क़ब्र और बरज़ख़ की इब्तेदा

सयाहते-ग़र्ब

(यानी मग़रिब में सूरज डूबने की जगह)

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम

अलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन मालिके ौमिद्दीन०

हज़ार हज़ार दुरूद व सलाम पैग़म्बरे-इस्लाम और उनकी औलादे पाक पर जिन्हों ने फ़रमाया कि दुनिया की ोस्ती एक बड़ी बीमारी है और औलादे आदम की ामाम बीमारियों की असल यही है। बाक़ी बीमारियां ्सी असल की शाखें हैं और मौत की याद इन बीमारयों ा इलाज है। अमा बाद यह बन्दये ख़ुदा कहता है कि ्सके क़ब्ल १३०७ शम्सी में मैंने अपनी गुज़ारिशात ्ब्तेदाए तालिब इल्मी से लेकर आख़िर तक लिखीं और ्याहते शर्क़ (यानी मशरिक़ में सूरज निकलने की जगह)

https://downloadshiabooks.com/

का नाम दिया और अब जबकि १३१२ शम्सी है मैं आलमे-बरज़ख़ के हालात लिखने बैठा हूँ और इसका नाम सयाहते-ग़र्ब तजवीज़ करता हूँ ताकि यह मेरी तरफ़ से यादगार रहे और मिल्लत के लिये पिन्द व नसीहत का ज़रिया बने ।

हक़ीक़त यह है कि हमारा बदने अन्सरी व माद्दी अपनी तबीयत के लिहाज़ से एक दबीज़ (मोटा) पर्दा है और यह इस क़दर दबीज़ और सख़्त है कि इन्सान इसमे मावरा (पार कर) दूसरे आलम पर नज़र नहीं कर सकता और मौत उस दबीज़ पर्दे से बाहर आ जाने का नाम है कि उस मोटे पर्दे के हट जाने के बाद आदमी वह सब कुछ देखने लगता है जो इससे पहले देख नहीं सकता था और उन हक़ाएक़ (असलियत) तक पहुँच जाता है जहाँ इससे पहले नहीं पहुँचा था ।

"लक़द कुन्ता फ़ी ग़फ़लतिम्-मिन हाज़ा फ़-कशफ़ना अन्का ग़िता-अका फ़बा-सरोकल-यौमा हदीद" (सूरा क़ाफ़ आयत २२) यानी तू इस दुनिया में आज तक बेख़बर था हमने तेरी निगाहों के सामने से (मौत के बाद) माद्दी पर्दे हटा दिये कि तू मौत के बाद के आलम को रोज़े-रौशन की तरह देखता है) चुनांचे मैं मर गया तो मरने के बाद

https://downloadshiabooks.com/

मैंने देखा कि मैं खड़ा हुआ हूँ और मेरे जिस्म में जो बीमारी थी वह दूर हो चुकी है। मैं बिल्कुल तन्दुरुस्त और ठीक हूँ और मेरे अज़ीज़ व अक़ारिब (सगे संबन्धी) मेरी लाश के चारों तरफ़ रो पीट रहे हैं। मैं इन सब के रोने पीटने से दुखी हो रहा हूँ और उनसे कहता हूँ कि मैं मरा नहीं हूँ बल्कि मेरी तो बीमारी दूर हो गई है मगर मेरी बात कोई नहीं सुनता।

शायद वह मुझे देखते ही नहीं और न मेरी आवाज़ ही सुनते हैं[1]। मैंने समझ लिया कि अब यह लोग मुझसे दूर हैं। चुनाँचे मैंने अपना पूरा ध्यान अपने जनाज़े पर लगा दिया। ख़ास कर चेहरा व बाएं पहलू पर नज़रें जमा दीं। क्योंकि यह दोनों चीज़ें खुली थी। बाद में मेरी लाश को ग़ुस्ल व कफन दिया गया और दूसरे कामों से फ़ुरसत पा कर इसे (मेरे जनाज़े को) क़ब्रस्तान की तरफ़ ले चले। मैं ख़ुद भी अपने जनाज़े के जुलूस में शामिल था। मैंने इस जुलूसे जनाज़ा में हर क़िस्म के जंगली जानवर और दरिन्दे देखे जिनसे मुझ ख़ौफ़ लगने लगा। मगर दूसरे लोग जो जनाज़े के साथ थे न तो उन्हें इन

१–(अ) किताब मनाज़िल आख़िरह अज़ मोहद्दिस क़ुम्मी मरहूम।
२–(ब) किताब हक़्क़ुल-यक़ीन अज़ मरहूम मजलिसी।
३–(स) कैफ़ाए स-आदत तालीफ़ हुज्जतुल-इस्लाम ग़ज़ाली।

https://downloadshiabooks.com/

जानवरों से कोई ख़ौफ़ था और न उनसे अज़ीयत महसूस कर रहे थे। गोया वह सब उनके पालतू जानवर हों और उनसे इन्तेहाई मानूस हों। इसी तरह क़ब्रस्तान पहुँचे। मैं अपनी क़ब्र में खड़ा हुआ यह माजरा देख रहा था कि मेरे जनाज़े को सर के बल क़ब्र में उतारा गया। जनाज़े का कब्र में पहुँचना था कि वहां क़िस्म-क़िस्म के जानवर न मालूम कहां से आ गये। उन्हें देखकर मेरे ख़ौफ़ व दहशत की इन्तेहा न रही कि इतने में क़ब्र में पैदा होने वाले जानवरों ने जनाज़े पर हमला कर दिया मगर जो शख़्स जनाज़े को क़ब्र में उतार रहा था उस पर न इन जानवरों का ख़ौफ़ तारी हुआ और न वह इनसे मोतरिज़ हुआ गोया उसने इन जानवरों को देखा ही नहीं।

इसके बाद वह शख़्स मेरे जनाज़े को क़ब्र में लिटा कर क़ब्र से बाहर निकल गया। लेकिन मेरा इस मुर्दा जिस्म से तालुक़ था इसलिये मैं क़ब्र ही में रहा। मैंने कोशिश की कि इन जानवरों को दूर भगा दू मगर वह बहुत ज्यादा थे इसलिये मुझ पर ग़ालिब रहे। एक वजह यह भी थी कि मेरे ऊपर ख़ौफ़ व दहशत का इतना ग़ल्बा था कि मेरा वजूद लरज़ रहा था। इसलिये मैंने बाहर खड़े हुए लोगों को अपनी मदद के लियेपुकारा मगर कोई मेरी मदद को न आया बल्कि वह लोग अपने काम में लगे रहे।

https://downloadshiabooks.com/

ानी क़ब्र में जो हंगामा हो रहा था उसको वह देख ही ाहीं रहे थे । एक बारगी क़ब्र में कहीं से कुछ लोग आ गये और उन्होंने मेरी मदद की । जानवर उन्हें देख कर भाग ाये । चुनांचे मैंने उनसे पूछा कि भाई आप लोग कौन हैं? बड़े कठिन वक़्त में मेरी मदद की । उन्होंने मुस्करा कर जवाब दिया कि हम आपकी नेकयां हैं और यह जानवर तेरे बुरे काम थे । क्या तूने नहीं सुना कि "इन्नल-हसानात यज़-हबानस सय्येआत" यानी नेकियां गुनाहों को भगा देती हैं । यह कह कर वह सब ग़ाएब हुए ।

इस हंगामे के खत्म होते ही मेरे होश व हवास बजा हुए तो मैंने देखा कि लोग क़ब्र को बन्द कर चुके हैं और मुझे तंग व तारीक क़ब्र में अकेला छोड़ दिया है । गोया मैं देख रहा था कि वह अपने घरों की तरफ़ वापस जा रहे हैं यहाँ तक कि मेरे क़रीबो दोस्त अज़ीज़ व अक़ारिब आल व औलाद सब मुझे अकेला छोड़ कर चल दिए यह वही लोग थे जिनकी असाइश व आराम के लिए मैंने दिन रात एक कर दिया था एक तो इन लोगों की बेवफाई का ग़म दूसरे तंग व तारीक क़ब्र की वहशत । मैं इतना रंजीदा था कि क़रीब था कि मेरा कलेजा फट जाय ।

ऐसी ग़ुरबत व ख़ौफ़ व वहशत से मुझे कभी साबेक़ा नहीं पड़ा था इस लिए मैं सिवाय खुदा के सबसे

https://downloadshiabooks.com/

मायूस होकर हसरत व यास के आलम में जनाज़े के सरहाने बैठ गया कि देखूं कि अब क्या होता है ? मैंने एक बारगी महसूस किया कि क़ब्र लरज़ रही थी और लहद की छत और दीवारों से ख़ाक गिर रही है खुसूसन क़ब्र की पांयती की तरफ़ तलातुम ज्यादह था ऐसा मालूम होता था गोया कोई बडा जानवर है जो क़ब्र को शिगाफ़ता करके अन्दर आया ही चाहता है। आख़िरकार उस तरफ़ से क़ब्र शक़ हो गई और मैंने देखा कि दो शख़्स जिनके चेहरे निहायत हैबतनाक थे और वह निहायत क़वी थे मेरी क़ब्र में दाख़िल हो गये।

यह लोग क़वी हैकल देव के मानिन्द थे। इनके मुँह और नथनों से धुआं और आग निकल रही थी। उनके हाथ में लोहे के गुर्ज़ थे जो आग से ऐसा सुर्ख़ थे गोया उनमें से शोले उठ रहे हों। यकायक उनकी कड़क दार आवाज़ क़ब्र में गूंजीं। ऐसी आवाज़ थी कि उस की कड़क से ज़मीन व आसमान लरज़ गये। उन्होंने उसी आवाज़ में जनाज़े से सवाल किया "मन रब्बोका" (यानी तेरा रब कौन है ?) उनकी हैबत और दहशत से मेरे होश व हवास उड़ चुके थे। ज़बान में जवाब की ताक़त न थी, हिम्मत जवाब दे चुकी थी। मैंने सोचा यह जसदे बे रूह इनके सवाल का जवाब न दे सकेगा और मुझे यक़ीन हो गया

https://downloadshiabooks.com/

कि यह अपने गुर्जों से इस जनाज़े को मारेंगे और क़ब्र आग से भर जायेगी। पस मैंने सोचा कि एक तो इस वहशत ही से मेरे होश उड़े हुए हैं अगर क़ब्र आग से भर गई तो यह नई मुसीबत नाज़िल हो गी इस लिये बेहतर यही है कि इनके सवाल का मैं खुद ही जवाब दूं।[1]

चुनांचे मैंने अल्लाह से लौ लगाई कि ऐ मुसीबत ज़दों के वाली और ऐ बेचारों के चारा साज़ मदद फ़रमा और दिल में मौलाए कायनात अली इब्ने अबी तालिब अलै० का वसीला पकड़ा क्योंकि मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था मेरा अक़ीदा था कि वह मुश्किल कुशा हैं। मैं उनकी क़ूवत व मनज़िलत से भी वाक़िफ़ था, कि वह हर आलम और हर मनज़िल में मदद कर सकते हैं। उन्हीं की मोहब्बत में ज़िन्दगी गुज़ारी थी और उन्हीं की मोहब्बत पर मौत आई थी। मैं जानता था कि यह वसीला अल्लाह की वह नेमत थी कि ख़तरनाक से ख़तरनाक तरीन मौक़े पर जब आदमी अपने होश व हवास खो बैठता है तो यही नेमत काम आती है "वता-रन्नासा सुकारा वमाहुम बेसुकारा—" सूरह हज

१—अज़ाबे क़ब्र, माजराए सवालात मुनकिर व नकीर और क़ब्र में सांप व बिच्छू वग़ैरह का पैदा होना बाज़ रवायात में वारिद हुआ है। तफ़सीलात के लिये चाहिये कि अक़ाएद की किताब मसलन शेख सद्दूक़ अलैहिर-रहमा व मजलिसी अलैहिर-रहमा की तरफ़ रूजू किया जाय।

https://downloadshiabooks.com/

आयत २ (यानी क़यामत के मैदान में तू लोगों को देखेगा कि वह नशे में मदहोश हैं और तुम क्या जानो कि यह मदहोशी क्या है ? यह अल्लाह का शदीद अज़ाब है) मगर उस वक़्त भी मौला ही काम आते हैं। चुनाँचे जैसे ही मैंने उनका वास्ता दिया तो बावजूद इस हैबत व दहशत के मेरे दिल में क़ूवत आ गई ओर ज़बान खुल गई। मगर इतनी देर तक मेरे ख़ामोश रहने की वजह मे इन दोनों हज़रात का ग़ुस्सा तेज़ हो गया। आँखों से शोले निकलने लगे, चेहरा और ज़्यादा डरावना हो गया और पहले से कहीं ज़्यादा कड़क दार आवाज़ में उन्होंने अपना सवाल फिर दोहराया बतलाओ तुम्हारा ख़ुदा व परवरदिगार कौन है ? और इसके साथ ही उन्होंने अपना गुर्ज़ बलन्द किया कि गोया मारा ही चाहते हैं।[1]

मगर अब मुझ में वह पहले जैसा ख़ौफ़ नहीं था। चुनांचे मैंने निहायत धीमी आवाज़ में जवाब दिया "मेरा माबूद ख़ुदाए यगाना व बेहम्ता है" "होवल्लाहुल्लज़ी ला इलाहा इल्ला होवा आलेमुल ग़ैबे वश्शहादते होवर-रहमानर्रहीम • होवल्लाहुल्लज़ी ला इलाहा इल्ला होवा

१-रवायात से पता चलता है कि अनवारे विलायत आइम्मा अलैहिस्सलाम मौत के बाद पुर ख़तर हालात में शीओं और मुहिब्बों की मदद फ़रमाएं गे।

https://downloadshiabooks.com/

अल मलेकुल-क़ुद्दूसुस-सलामुल मूमेनुल मोहैमेनुल अज़ीज़ुल जब्बारुल मुताकब्बिर • सुब्हानल्लाहे अम्मा युशरे कून•".
(आयत २२ व २३ सूरए हश्र)

तरजुमा–वह ख़ुदा है कि उसके अलावा कोई ख़ुदा नहीं, वह ग़ैब व हाज़िर का जानने वाला है और रहमान व रहीम है। वह ख़ुदा है कि उसके अलाबा कोई ख़ुदा नहीं। वह बादशाह है, हर ऐब व नुक़्स से पाक है, अमान देने वाला है, सारे जहान का नेगेहबान है और ग़ालिब और क़ादिर है, बा जबरूत व बुज़ुर्ग है, वह हर ऐब से पाक है और उस चीज़ से मुनज्जह है कि लोग उसका शरीक क़रार देते हैं।[1]

क़ुर्आन की यह आयत मुझे इसलिये याद आ गई कि मैं दुनिया में नमाज़ सुबह की ताक़ीब में (वजीफा) इसे हमेशा पढ़ा करता था इसलिये उनके सामने इसकी

१–यह हाज़िर जवाबी व आमादगी मोअल्लिफ़ (लेखक) मरहूम के हस्बे हाल है कि उन्होंने सारी ज़िन्दगी कस्बे मारफ़त व ख़िदमते ख़ल्क़, आमाले नेक और फ़ज़ाएल एखलाक़ में गुज़ारी जो मरहूम जैसे होंगे उनका हाल भी ऐसा ही होगा मगर बेख़बर दुनिया परस्त जाहिल व बेरहेम लोगों का हाल इससे बिल्कुल मुख़तलिफ़ बल्कि तबाह होगा। इस लिये इन्सान को चाहिये कि अच्छे आमाल बजा लाने की कोशिश करे और गुनाहों से तौबा करे।

https://downloadshiabooks.com/

तिलावत इसलिये ज़रूरी समझी कि आने वालों पर अपना अफ़ज़ल होना साबित कर दूं ताकि उनके दिल में यह ख़याल न गुज़रे कि औलादे आदम फ़ज्ल व कमाल से खाली है इसलिये कि उन्होंने रोज़े अव्वल ही ख़िलक़ते बनीये–आदम पर ऐतराज़ जड़ दिया था कि इन लोगों में फ़साद व ख़ूंरेज़ी के सिवा कुछ है ही नहीं। अलबत्ता यह ज़रूर हुआ कि जैसे ही मैंने इस आयए मुबारेका की तिलावत की उनका ग़ुस्सा उतर गया। चेहरे की सख्ती दूर हो गई उनमें से एक ने दूसरे से कहा मालूम होता है कि इसका तअल्लुक़ उल्माए इस्लाम से है। इसलिये हमें चाहिये कि बाक़ी सवालात नरमी से करें।

मगर दूसरे ने कहा कि हम इससे सवालात पूछने पर अल्लाह की जानिब से मामूर हैं और सवाल दरयाफ़्त करने की यही रफतार आख़िर तक बाक़ी रहना चाहिये। क्योंकि इससे हमारे सवाल पूछने के तरीक़े में तबदीली आखरी सवाल के सही जवाब पर मुनहसिर है और वह अभी नहीं मालूम है। इसलिये हमें अपनी ड्यूटी बहर हाल सही तौर पर अंजाम देना है और यह शख़्स जो कोई भी है अभी इसका हमारी नज़र में कोई ऐतबार नहीं है। आपस की इस बात-चीत के बाद उन्होंने दूसरा सवाल किया।

https://downloadshiabooks.com/

"मन नबीयेका" यानी बतलाओ तुम्हारा नबी कौन है ?

मगर अब मेरे क़ल्ब में अच्छी ख़ासी क़ूवत आ चुकी थी आवाज़ में भी पहले जैसा धीमांपन नहीं था। ज़बान खुल चुकी थी। लिहाज़ा इस सवाल का मैंने बिला तकल्लुफ़ फ़ौरन जवाब दिया "नबी व रसूलल्लाहे इलन्नासे काफ़तुम मोहम्मद इब्ने अब्दुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही ख़ातेमिन-नबीयीन व सय्यदुल मुरसलीन"

इस जवाब के बाद उनका ग़ैज़ो-ग़ज़ब बिल्कुल ख़त्म हो गया और उनके चेहरों पर बशाशत के आसार पैदा हो गये और मेरे ऊपर भी जो दहशत सवार थी वह ख़त्म हो गई। चुनांचे इसके बाद इन हज़रात ने किताब व क़िब्ला व इमाम व ख़लीफ़ा रसूल अल्लाह के बारे में सवालात किये। मैंने जवाब में अर्ज़ किया "किताबी क़ुरआनिल-करीम व क़द नज़ला मिनर-रहीम अला नबीयिल-हकीमे व क़िबलता काबा वल-मस्जिदिल-हरामे हैसो-माकुन्तुम फ़ावल्लू वजूहकुम शतारल-मस्जिदिल-हराम ज़ाहेरन व बातेनन अल्हक़्क़ो मनआलुन वजहतो वजही लिल्लज़ी फ़तारुस्समावाते वल अर्ज़े हनीफ़न व मुस्लेमन व मा अनल मुशरेकीना व अ-इम्मती व

https://downloadshiabooks.com/

ख़ुल्फ़ाए नबी इस्ना अशारा इमामन अव्वालोहुम अली इब्ने अबीतालिब व आख़िर हुम हुज्जतु-ब्बुलहसन साहेबुल अस्र वज़्ज़माने मुफ़तरेज़ुम अत्ताअतो व मासूमूना मिनल ख़ताऐ वज़्ज़ुलाले शोहदाए दारुलफ़नाए व शफ़ाए दारुल बकाए'

तर्जुमा :–यानी मेरी किताब क़ुरआने करीम जो अल्लाह रहमान व रहीम की तरफ़ अना व बैना पैग़म्बर पर नाज़िल हुई है। क़िब्ला मेरा काबा है कि तुम जहाँ कहीं भी हो इबादत के वक़्त इसकी तरफ़ रुख़ कर लो जैसा कि इब्राहीम अलै० का क़ौल है कि अपना रुख़ मैं ख़ुदा की तरफ़ करता हूँ जिसके हुक्म से जमीन व आसमान की गर्दिश क़ायम है। मैं मुस्लिम हनीफ़ हूँ और मुशरिकों में से नहीं हूँ और मेरे इमाम व ख़ुलाफ़ाए नबी बारह हैं जिनमें पहले हज़रत अली इब्न अबीतालिब अलै० और आख़िरी हज़रत हुज्जत इब्न हसन अस्करी अलै० हैं। यह सब हज़रात वाजेबुल-इताअत हैं, मासूम हैं। हर क़िस्म की ख़ता व गुनाह से पाक हैं। यह दुनिया में मेरे आमाल के गवाह और आख़ेरत में मेरी शिफ़ाअत करने वाले हैं।

फिर मैंने उनमें से एक एक इमाम का नाम व हसब व नसब तफ़सीलात से बयान किया।

https://downloadshiabooks.com/

पस उन्होंने कहा यह लम्बी चौड़ी तफ़सीलात बयान करना ज़रूरी नहीं। एक कल्मे का जवाब सिर्फ़ एक कल्मा हुआ करता है। मैंने फ़ौरन कहा मगर आपके लिए इससे ज़्यादा तफ़सील ज़रूरी थी क्योंकि आप हज़रात हमलोगों से रोज़े अव्वल ही से बदगुमान थे। आपने हमारी खिल्क़त पर ऐतराज़ किया गोया फ़ेले-हकीम पर ऐतराज़ किया और उस दिन से जब से मैंने आप हज़रात के ऐतराज़ को समझा है मेरे दिल में कुछ गरानी पैदा हो गई है और मैंने अहेद किया था कि कभी आप हज़रात से मुठभेड़ हुई तो मैं ख़ुद आप लोगों से सवालात करके अच्छी तरह बहेस करूँगा। मगर अफ़सोस कि मुलाकात भी हुई तो किस आलम में! जब कि मैं मुसीबत में गिरफ़्तार-हूँ और आप हज़रात अल्लाह की तरफ़ से मुझसे आक़ाएद के बारे में सवाल करने पर मामूर हैं। अब मेरी मजाल कहाँ ?

यह कह कर मैंने ख़ामोशी अख़्तियार कर ली और मुन्तज़िर रहा कि देखूं कि अब मुझ से क्या सवाल होता है। लेकिन उन्होंने मज़ीद कोई सवाल न किया बस सख़्त लहजे में सिर्फ़ इतना पूछा कि यह जवाबात तुमने कहाँ से सीखे। इस सवाल पर मुझे फ़िक्र दामनगीर हुई। इसलिए कि अक़ाएद व उसूले दीन के मुताबिक़ जो दलाएल मैंने दारेफ़ानी में तैयार किये थे क्या ज़रूरी है कि वह सही

https://downloadshiabooks.com/

हों। मुम्किन है कि ख़ुद अरस्तू जो फ़लसफ़याना दलाएल का बावाए-आदम समझा जाता था ग़ल्ती पर हो। इस लिए कि उसकी बाज़ फ़लसफ़याना लरजिशें मेरे पेशे-नज़र थीं। दूसरे यह कि अगर वह दलायल व बराहीन सही भीं थे तो दुनियाए तीरा व तारीक के लिए थे। क्योंकि असा की ज़रूरत अंधेरे में है। मगर अब जब कि तारीकियाँ छट चुकी हैं हर चीज़ रोज़े-रौशन की तरह साफ़ और वाज़ेह हैं। यहाँ तो अंधे को भी असा की ज़रूरत नहीं वह दलाएल मेरे यहाँ किस काम आयेंगे। फिर यह लोग आख़िर मुझसे चाहते क्या हैं? ख़ुदारा मैं यहाँ नौवारिद हूँ और अभी इस जहान की इस्तेहालात और यहाँ के मख़लूक़ात व अशख़ास की उफ़तादे-तबा से बिल्कुल ना-बलद हूँ। परवरदिगार तुझे वास्ता अली इब्न अबीतालिब का मेरी मदद फ़रमा।

मैं इसी तरह अपने तफ़ककुरात में गुम था और मुनाजात में मशग़ूल था कि उनका नारा जो आसमानी बिजली से ज़्यादा कड़कदार था फ़िज़ा में गूंजा। बतलाता क्यों नहीं कि तूने जो कुछ कहा वह कहाँ से सीखा ?[1]

१—मतलब यह है कि दीने इस्लाम के अक़ाएद व उसूल मसलन तौहीद, अद्ल, नबूवत, इमामत और क़यामत को अक़ली दलाएल के ज़रिये समझ

https://downloadshiabooks.com/

अब जो मैंने उनकी तरफ़ नज़र की तो गोया निगाह चेहरे पर ठहरती ही न थी उनकी आँखे गुस्से से सुर्ख थीं। उनसे शोले निकल रहे थे, चेहरे ख़ौफ़नाक हो गये ऊँट की तरह से उन्होंने मुंह फाड़ रखे थे और उनके बड़े बड़े ज़र्द व ख़ौफ़नाक दाँत नज़र आते थे। उन्होंने अपने गुर्ज़ हाए आतशीं बुलन्द कर रखे थे गोया

कर जानना चाहिये कि इस मामले में तक़लीद हराम है और सिर्फ यह दलील कि मेरे बाप दादा का दीन भी यही था उनकी कोराना तक़लीद आलमे-आख़ेरत में काम न आएगी क्योंकि दीने इस्लाम मनतिक़ व बुरहान का दीन है। इसलिये मुसलमान को चाहिये कि उसूले दीन को अक़ली दलाएल से समझ कर क़ुबूल करे ताकि शक व शुब्हा न रहे और अगर ऐसा नहीं है तो उसूले दीन ही में शुब्हा पैदा होगा और शुब्हा करने वाले का शुमार आख़ेरत में मुसलमानों के ज़ुमरे में हरगिज़ नहीं हो सकता। ईमान एक क़ल्बी अम्र है और यह जब ही हासिल होता है जब दीन को दलाएल अक़ली से हासिल किया जाय। वैसे हर बच्चा मुसलमान के घर पैदा हुआ हो अपने मां-बापकी पैरवी में मुसलमान है मगर बालिग़ होने के बाद तकालीफ़ शरीआ और उसूले दीन को अक़ली दलाएल से समझना जरूरी है वरना जो इस्लाम तक़लीदी तौर पर हासिल होता है वह आख़री व क़त तक बाक़ी नहीं रहता और इन्सान को अमल की तरफ़ राग़िब नहीं करता। जब अक़ली दलाएल से दीन को समझे गा तो दीन की मारफ़त हासिल होगी और कमाल मारफ़त अमल की मोहरिक हो गी और जो सही अक़ाएद के साथ ख़ुलूस से आमाल भी बजा लाएगा तो उनका अज्र व फल वह आखेरत में पायेगा इन्शाअल्लाह वरना अन्जाम बख़ैर होना मशकूक है।

https://downloadshiabooks.com/

मारने वाले हैं। यह देखकर शिद्दते हैबत व दहशत से मेरे होश उड़ गये। उस वक़्त गोया मुझ पर इल्हाम हुआ चुनाँचे मैंने नफ़ीह आवाज़ में उन्हें जवाब दिया "हदानेयललाह इलैह" यानी इन अवामिर की तरफ़ ख़ुदा ने मेरी हिदायत फ़रमाई है। पस उनकी आवाज़ आई "नम नौमतल उरूस" यानी इस तरह सो जाओ जैसे दुल्हन हुज्लए उरूसी में सोती है। पस वह चले गये मगर मेरा हाल यह था कि गोया मैं सो गया हूँ या शिद्दते-खौफ़ से बेहोश हो गया हूँ मगर मैंने महसूस किया कि इस दहशत व इज़्तेराब से मुझे नजात मिल गई और मैं वाक़ई चैन से सो गया।

जब मेरे होश व हवास ठिकाने आये और मेरी आँख खुली तो मैंने अपने आपको एक हुजरे में देखा जिसमें बहतरीन फ़र्श बिछा हुआ था और निहायत ख़ूबसूरत नौजवान जिसके बाल निहायत हसीन थे। उसके जिस्म से ख़ुशबू आती थी, मेरे क़रीब बैठा था मेरा सर उसके ज़ानू पर था और वह मेरे जागने का मुन्तज़िर था। मैं उसकी ताज़ीम व तवाज़े के लिए उठकर बैठ गया और मैंने उस नौजवान को सलाम किया वह भी मुस्कुराता हुआ उठा और मेरे सलाम का जवाब दिया मुझसे बड़ी मोहब्बत से पेश आया गले मिला और

https://downloadshiabooks.com/

मुझ से कहा कि बैठ जाओ, मैं कोई पैग़म्बर या इमाम नहीं हूँ बल्कि तेरा रफ़ीक़ व दोस्त हूँ। मैंने दरयाफ़्त किया कि जनाब की तारीफ़? और हुज़ूर का इस्म मुबारक क्या है? यह मेरी ख़ुश नसीबी है कि आप मेरे रफ़ीक़ हैं। मैं चाहता हूँ कि हमेशा आप ही के साथ रहूँ।

उसने जवाब दिया कि मेरा नाम हादी है और मुझे अबुलवफ़ा और अबूतुराब भी कहते हैं। वह आख़री जवाब जो तूने दिया मैंने ही तेरे दिल में अल्क़ा किया था अगर तू वह जवाब न देता तो वह लोग तेरी उन आहनी गुरज़ों से अच्छी तरह मरम्मत करते और तेरी क़ब्र जहन्नम की आग से भर जाती।

मैंने अर्ज़ की आपके मराहिम व एहसानात का मैं बेहद शुक्र गुज़ार हूँ कि वाक़ई मैं आपका आज़ाद करदा हूँ मगर मेरे नज़दीक वह आख़री सवाल ओ उन्हों ने किया बे फ़ायदा था और ख़्वाह-म-ख़्वाह बहेस को तूल देना थाँ। इस लिए मैंने अक़ाएदे इस्लामी के मुताल्लिक़ सवालात के जवाब दुरुस्त दिये थे और वह उमूर वाक़ई जिनका कोई शख़्स अपनी ज़बान से इक़रार करता है उनमें चूं व चरा की कोई गुंजाइश नहीं होती। मसलन

https://downloadshiabooks.com/

अगर किसी के हाथ पर दहेकता हुआ अंगारा रख दें और वह कहे कि मेरा हाथ जल रहा है तो उससे यह कहना फ़ुजूल है कि तू क्यों कहता है कि मेरा हाथ जल रहा है ? और अगर कोई जाहिल पूछ बैठे तो उस का सीधा सादा जवाब यह है कि क्या तू अंधा है ? तुझे नज़र नहीं आता कि मेरे हाथ पर दहेकता हुआ अंगारा रक्खा हुआ है और यह उनका आख़री सवाल इसी क़िस्म के सवालात के जुमरे में आता है ।

हादी ने कहा कि ऐसा नहीं है इस लिये कि इन्सान का क़ौल उमूमन मुताबिक़ वाक़ेया नहीं होता । मुम्किन है कि ज़बान से तो सही कह रहा है मगर दिल से एत्क़ाद व अक़ीदा न रखता हो । क्योंकि दिल से पुख़्ता अक़ीदा रखना ज़रूरी है ताकि यह अक़ीदए-क़ल्बी अमल करने का मोहरिक बन सके वरना बद-अक़ीदा सिर्फ़ ज़बान से कहता है, अमल नहीं करता । जैसा कि फ़रमाया गया "ला तक़ूलू आमन्ना वलाकिन क़ूलू असलम्ना व-ल-मा यद ख़ोलुल ईमान फ़ी क़ुलूबेकुम" यानी यह न कहो कि हम ईमान लाए बल्कि कहो कि हम इस्लाम लाए और ईमान तुम्हारे क़ुलूब में दाख़िल ही नहीं हुआ है ।

रोज़ अव्वल भी अलस्तो बे रब्बेकुम के जवाब में

https://downloadshiabooks.com/

सब ने बला नहीं कहा था और इक़रार रुबूबियत व मआमवीयते-हक़ इस तौर पर नहीं किया था जैसा कि वाहिये था। मैंने दरयाफ़्त किया क्यों ?

जवाब मिला कि जहाने माद्दी में जब इन्सान तकलीफ़े-शरई की इम्तेहान-गाह में आता है तो बाज़ लोग एहकाम शरई बजा नहीं लाते और इम्तेहान गाह से ख़ारिज हो जाते हैं। यहां तक कि मौत के बाद इस आलम को पहुंचे मन्ज़िल में भी तक़रीबन सब मोमिन व मुनाफ़िक़ इन सवालात के जवाब दुरुस्त और मुनाबिक़ वाक़ेआ देते हैं और यह आख़री सवाल इसी लिए किया जाता हैं कि अगर अक़ीदा ने क़ल्ब में घर कर लिया है तो जवाब वह होता है जो तूने दिया और अगर दीन व ईमान व अक़ाएद तक़लीदी ले कर आया है तो गोया उस का तअल्लुक़ चूंकि क़ल्ब की गहराइयों से नहीं होता इस लिये यहां वह जिन्स बे फ़ायदा क़रार पाती है। जैसा कि तुम्हें ख़ुद मालूम है कि अहादीसे-मासूमीन अलै० में यही तफ़सील वारिद हुई है।

मैंने अर्ज़ किया कि बेशक अहादीसे-मासूमीन अलै. में यही तफ़सील वारिद हुई है लेकिन सवाल व जवाब के वक़्त की दहशत व वहशत की वजह से मेरे होश व हवास

https://downloadshiabooks.com/

ठिकाने न थे इस लिये मैं भूल गया था। आप मेरी मदद को पहुँचे। ख़ुदा आप को जज़ाए ख़ैर दे और ख़ुदा करे मुझ पर वह वक़्त न पड़े जब आप मेरे हमराह मौजूद न हों। अब फ़रमाइये कि आप मुझे कब से जानते हैं जब कि मेरा आप से साबक़ा कभी नहीं पड़ा और अब मुझे आप से इतनी मोहब्बत हो गई है कि आप की जुदाई को मैं अपने लिये हलाकत से कम नहीं समझता। उसने जवाब दिया कि मैं पहले दिन से ही तुम्हारे साथ हूँ और तुम से मोहब्बत रखता हूँ लेकिन तुमने कभी मुझे इस लिये महसूस नहीं किया कि जहाने-माद्दी में तुम्हारी बीनाई में यह ताक़त न थी कि तुम मुझे देख सकते।

मैं अस्ल में वही रिश्तए मोहब्बत व उलफ़त हूँ जो तुम्हें अली इब्न अबीतालिब अलै० और अहलेबैते पैग़म्बर अलै० से था जिस में यह मोहब्बत जितनी होती है उतना ही मेरा साबक़ा उस शख़्स से होता है यानी ब क़द्रे क़ाबलियत, और इसी वजह से मेरा नाम हादी है। यानी मोहब्बते-अहलेबैत आमाले ख़ैर की तरफ़ हिदायत करती है मगर बक़द्र इस्तेदाद (इल्मी) यानी मैं तुम्हारा हादी था। तुम्हारी निस्बत से और वह यानी अली इब्न अबी तालिब अलै० तमाम परहेज़गारों के हादी और पेशवा और इमाम हैं और "ज़ालेकल

https://downloadshiabooks.com/

किताबो लारैबा फ़ीहे होदंल-लिल-मुत्तक़ीन " यानी यह किताब है जिसमें कोई शक नहीं और यह साहेबाने-तक़वा के लिये हिदायत है कि वह और मैं तुम्हारा वही तमस्सुक व वाबस्तगी हूँ जो तुम्हें इन हज़रात से थी। यानी ' उरवतु लवुस्क़ा फ़मंइ-यक्फ़ुर बित्तागूते व यूमिन बिल्लाहे फ़क़ादिस-तम्सका बिल उरवतिल वुस्क़ा लन फ़ेसामा लहा " और मैं तुमसे हरगिज़ जुदा नहीं होता इल्ला यह कि तुम खुद रुवाहिशे-नफ़सानी की वजह से दूर हो जाओ और यही वजह है कि मेरी कुन्नियत अबुल-वफ़ा और अबू तुराब हो गई है[1]।

१—यहां मोअल्लिफ (लेखक) ने मोहब्बते अली व अहलेबैत अलै० को मुजस्सम बना कर पेश किया है ताकि यह मालूम हो सके कि मोहब्बते अहलेबैत हर मंजिल पर काम आती है। चुनांचे हुज़ूरे अकरम सल्ल० की यह हदीस बहुत मशहूर है कि "मन माता अला हुब्बे आले मोहम्मद माता शहीदा' यानी जो मोहब्बत अहलेबैत अलै० पर मरा वह शहीद मरा। इमाम मोहम्मद बाकर अलै० ने अबू खालिद काब्ली से इरशाद फरमाया कि ऐ अबू खालिद खुदा की क़सम ! अहलेबैत अलै० की मोहब्बत मोमिन के दिल में इस तरह नूर देती है जैसे चमकता हुआ सूरज दिन को रोशनी देता है। इमाम शाफई ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह की रस्सी को मज़बूत थाम रखा है और इसी का हमें हुक्म है और वह अल्लाह की रस्सी मोहब्बत अहलेबैत अलै० है। मगर मोहब्बत का सिर्फ ज़बानी दावा दुरुस्त नहीं है जब तक कि अमल न हो जैसा कि इमाम मूसा काज़िम

आगे पृष्ठ २२ पर देखें

https://downloadshiabooks.com/

क़िस्सा कोताह मेरी ख़िलक़त नूरे अली से है और मैं तेरे दिल में तेरी सलाहियत के मुताबिक़ रहा कि कितना तूने इस मोहब्बत के दावे के साथ उन जनाब के एहकामात पर अमल किया और मेरा तेरे साथ रहना मेरे अख़तियार के लिहाज़ से बस इतना था कि जब तू नेकियां करता था मैं तेरे हमराह होता था और जब तू मासियत (गुनाह) करता था मैं तुझ से दूर चला जाता था। इसी तरह इस आलम में भी मैं तेरे साथ उस वक़्त तक रहूँगा जब तुझे तेरी नेकियों का अज्र मिलेगा। मगर जब मासियत पर गिरफ़्त होगी तो तू मुझे अपने हमराह न पाएगा। जैसा कि क़ुरआन मजीद में सूरए आले इमरान में फ़रमाया "बे अन्नाल्लाहा लैसा बेज़ल्ला-मिल-लिल-अबीद वलाकिन कानू अनफ़ोसाहुम यज़लेमून०" यानी अल्लाह अपने वन्दों पर ज़ुल्म नहीं करता मगर यह बन्दे ख़ुद अपने नुफ़ूस पर ज़ुल्म करते हैं।

(पृष्ठ २१ का शेषांश)

अलै० ने फ़रमाया कि हमारे पास नारे जहन्नम से आज़ादी का परवाना नहीं है और हमारी शिफ़ाअत ख़ुदा के अदल पर ग़ालिब नहीं आ सकती जो उकसा फ़रमां बरदार है वह हमारा दोस्त है और जो उसका नाफ़रमान है वह हमारा दुशमन है। पस मालूम हुआ कि मोहब्बत का दावा जब ही दुरुस्त है जब आमाल भी ऐसे हों जो उन बुज़ुर्गवारों को पसन्द हों वरना मोहब्बत अहलेबैत के भरोसे पर गुनाह करते रहना ख़ुद अपने आप को धोका देना है।—अनुवादक

https://downloadshiabooks.com/

बहर हाल आज तेरी ज़िन्दगानी का आखरी दिन और आलमे आखेरत का पहला दिन है। अब मैं जाता हूँ तुम फ़िलहाल आराम करो। मैं तोएक अमानते-इलाही हूँ जो तुम्हें सिपुर्द की गई थी। मेरे ज़िक्र से क़ुरआने मजीद भरा पड़ा है मगर मुझे अफ़सोस तो इस बात का है कि तुमने क़ुरआन को बार बार पढ़ा और आज तुम मुझे पहचानते तक नहीं—खुदा हाफ़िज़

हादी चला गया और मैं अकेला रह गया। अब मैंने ग़ौर करना शुरू किया तो यह अक़ीदा खुला कि हक़ीक़त में इन्सान के लिये दुनयावी ज़िन्दगी एक ख़्वाब के मानिन्द है और मौत के बाद गोया वह ख़्वाब से बेदार होता है और इस बेदारी में उस ख़्वाब की ताबीर हक़ीक़त बन कर सामने आती है बिल्कुल जैसे सिकन्दर व ज़ुलक़र-नैन का क़िस्सा है कि जब वह बहरे-ज़ुल्मात पर पहुँचा तो जिसने वहाँ की रेत उठाई थी वह जब रौशनी में पहुँचा नादिम हुआ और जिसने नहीं उठाई वह भी पशेमान हुआ और अफ़सोस करता रहा।

हाँए अफ़सोस "अला मा-फ़र-रत्तो फ़ी जंबिल्लाहे (सूरा ज़मर आयत ५६) यानी अफ़सोस इस बात का है कि मैंने अल्लाह के जवार में गुनाह किया (यानी गुनाह

https://downloadshiabooks.com/

करता रहा और ख़ुदा को हाज़िर व नाज़िर न जाना) लेकिन अब अफ़सोस करना और नादिम होना बेकार है क्योंकि तौबा का दरवाजा बन्द हो चुका है मैं इसी ग़म व अन्दोह में गिरफ़तार था कि मुझे नींद आ गई। अभी कुच्छ देर न गुज़री थी कि एक और आफ़त का सामना हुआ। मैंने महसूस किया कि दो आदमी मेरे दाएं और बाएं बैठे हैं। दायीं तरफ़ वाला ख़ूबसूरत है जब कि बायीं तरफ़ वाला बड़ा बद शकल है। वह दोनों जिस्म के आज़ा को को सर से पैर तक सूंघ रहे हैं। उनके हाथ में बड़ी बड़ी फाइलें हैं और सूँघ सूंघ कर उनमें कुच्छ लिखते जा रहे हैं वह अपने साथ कुच्छ छोटे बड़े डिब्बे लाए हैं उनमें कुच्छ चीज़ें रखते जाते हैं और उन्हें मज़बूती से बन्द करके सर-ब-मोहर (सील बन्द) करते जाते हैं। बाज़ आज़ा मसलन दिल, क़ूवते ख़याल, क़ूवते वाहेमा, दिमाग, आंखें, ज़बान और कान वग़ैरह को बार-बार सूंघते हैं। आपस में सरगोशी करते हैं और फिर दोबारा व सहवारा सूंघते हैं उसके बाद लिखते हैं और इन डिब्बों में कुच्छ डालकर फिर सील कर देते हैं।

मैं ने अपने जिस्म को बिल्कुल साकित कर लिया कि कहीं उन्हें यह पता न चल जाये कि मैं बेदार हूँ। मगर मैं दहशत-ज़दा बहुत था क्यों कि मैं समझ चुका था

https://downloadshiabooks.com/

कि वह मेरे अच्छे बुरे आमाल को परख रहे हैं उन्हें तहरीर में ला रहे हैं। मालूम यह होता था कि वह खूबरू शख्स मेरा खैर ख्वाह था क्यों कि उनकी आपस की सरगोशियां जो मैं थोड़ी बहुत सुन पा रहा था उन से मालूम होता था कि वह खुश-शक्ल हस्ती मेरे बाज़ अफ़आल खबीसा (बुरे काम) को लिखने नहीं देती थी क्यों कि मैं इस अमल से तौबा कर चुका था बाज़ दफ़ा वह कहता था कि इसकी इस बुराई का फ़लां नेक अमल से अज्ज़ाला (बदला) हो गया और अब यह गुनाह नेकी से बदल गया जिस तरह अक्सीरे-खालिस मिट्टी को सोना बना देती है। इसी वजह से इस खुश-शक्ल आदमी से मुझे एक तरह से मोहब्बत सी हो गई थी। जब वह लिख चुके तो मैंने देखा कि उन्होंने अपने वह लिखे हुए दफ़्तर लपेट कर मेरी गरदन में तौक़ की तरह डाल दिये ओर वह सारे डिब्बे जो उन्होंने सील बन्द किये हुए थे वह एक बड़े थैले में रख कर वह थैला मेरे सर के पास रख दिया। इसकेबाद मैंने देखा कि वह एक आहनी शिकन्जा लाए। यह शिकन्जा बड़ा मज़बूत था और बिल्कुल मेरे जिस्म के बराबर था उन्होंने मुझे उस शिकन्जे में रखा उसके नट बोल्ट कसकर बन्द कर दिया। अब उन्होंने इसका लीवर घुमाया तो वह शिकन्जा आहिस्ता २ तंग

https://downloadshiabooks.com/

होना शुरू हुआ और आख़िर कार वह तना तंग हो गया कि सांस लेना मुहाल हो गया और मैं उसमें ऐसा गिरफ़तार हुआ कि किसी को मदद के लिए पुकार भी न सकता था वह उसके पेचों को जल्दी जल्दी घुमाए जा रहे थे यहां तक कि वह शिकन्जा जो मेरे जिस्म के बराबर था तंग होकर बिल्कुल एक छोटी पतीली की तरह हो गया, छोटा और गर्म। मेरी सारी हड्डियां चटख़ चटख़ कर टूट गईं और बिला तशबीह मेरे जिस्म का तेल निकल गया। यह तेल जो मिस्ल तारकोल के सियाह था, उन्होंने इस सियाह तेल को उठा लिया मगर मैं बेहोश हो गया और कुच्छ न समझा कि यह क्या हुआ।

अब जो होश आया तो सर हादी के ज़ानू पर था। मैंने कहा हादी माफ़ करना, मेरा हाल इतना ख़राब है कि उठ नहीं सकता और इस बे-अदबी के लिए मुझे माज़ूर व मजबूर समझिये। मेरे तमाम आज़ा शिकस्ता हो चुके हैं और अभी मेरे सांस की रवानी भी बहाल नहीं हुई, मेरे अल्फ़ाज़ भी टूट टूट कर अदा हो रहे हैं। इस वक़्त मेरी आवाज़ बिल्कुल कमज़ोर हो गई थी और आँखों से आँसू जारी थे। गोया मैं हादी का शिकवा कर रहा था कि आप ऐसे बक़्त क्यों मौजूद नहीं

https://downloadshiabooks.com/

थे। यह पहला फ़ेशार था जिससे मेरा वास्ता पड़ा था। हादी मुझे तसल्ली व तशफ़्फ़ी देता था और कहता था कि यह जो कुच्छ तुम्हें पेश आया इस जहान की मंज़िले-अव्वल के लवाज़मात (कार्यवाही) से है और यह वाक़े-आत हर शख़्श के साथ पेश आते हैं और यह सिर्फ़ तुमसे ही मख़सूस न थे। बहर हाल जो हुआ सो हुआ, अब उम्मीद है कि तुम्हें ऐसे हालात से साबेक़ा नहीं पड़ेगा। दूसरे यह कि आलमे-आख़ेरत के तमाम ख़तरात तुम्हारे अपने आमाल का नतीजा हैं।१

१—फ़ेशारे-क़ब्र व आलमे-बरज़ख़ के दीगर अज़ाब इन्सान के उन गुनाहों से तअल्लुक़ रखते हैं जिनकी तौबा न की गई हो। इससे ईमान व कुफ़ का तअल्लुक़ नहीं है। मुम्किन है कोई मोमिन ख़ालिस हो मगर चूंकि मासूम नहीं है इसलिए उसे गुनाह का ख़म्याज़ा भुगतना होगा इसलिये आदमी इतने गुनाह करे जितना अज़ाब सहने की उसमें सकत हो। जैसा कि रवायत में है कि हज़रत साद बिन मआज़ बुज़ुर्ग अस्हाबे पैग़म्बर में से थे। जब उनका इन्तेक़ाल हुआ तो हुज़ूर ब-नफ़्से-नफ़ीस बग़ैर एबा के और पा बरहना उनके जनाज़े के हमराह थे। ख़ुद आँ-हज़रत सल० ने उन्हें क़ब्र में लेटाया कि आपका जिस्मे-मुबारक मिट्टी से अट गया। आपने साद के लिए दुआए ख़ैर भी की और फ़रमाया कि उसके जनाज़े के हमराह जिब्राईल व मीकाईल व दीगर फ़रिशते हैं। मगर जब साद की माँ ने कहा कि ऐ साद तू ख़ुश-नसीब है कि तू ख़ुद हुज़ूर के हाथ से क़ब्र में गया और आपने तेरे जनाज़े की मशायत पा-बरहना फ़रमाई तो आपने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मादरे-

(आगे पृष्ठ २८ पर देखें

https://downloadshiabooks.com/

लेकिन जो शिकन्जा तुम ने देखा जिसे तुम हफ़्त-जौशन का नाम देते हो यह इन्सान के अपने एख़लाक़े-बद से तशकील पाता है। मुम्किन है बाज़ के लिए हज़ार जौशन हो। एख़लाक़े-बद मसलन (१) हिर्स (२) ख़ुद-पसन्दी (३) हसद। क्योंकि पहले ने आदम अ. को जन्नत से निकलवाया, दूसरे ने शैतान को रान्दए दर्गाहे इलाही कर दिया और तीसरे ने क़ाबील को जहन्नम का कुन्दा बना दिया और इन तीनों से हज़ारों शाख़ें फूटती हैं और इसकी कमी व ज़्यादती लोगों के अपने एख़लाक़ के फ़र्क़ से मुकम्मल मुनासेबत रखती है। हादी अच्छी अच्छी बातें करके मुझे तसल्ली देता था और अपना हाथ मेरे पहलू, पश्त व दीगर आज़ा पर फेरता जाता था। मेरी तकलीफ़ इसके हाथ फेरने से रफ़ा होती जाती थी और उसकी मेहरबानियों से मुझमें ताज़ा क़ूवत व तवानाई आ गई।

मेरे आज़ाए-जिस्मानी, कशाफ़त से पाक हो गये थे और शफ़्फ़ाफ़ व रौशन हो निकले थे। अब मैं समझा

(पृष्ठ २७ का शेषांश)

साद चुप रह। तू साद से फ़िशारे-क़ब्र को बरतरफ़ नहीं कर सकती क्योंकि इसका सुलूक अपने अयाल के साथ अच्छा नहीं था इसलिए इसपर फ़िशारे-क़ब्र हो रहा है—अल-अज़-मतुल्लाह।

https://downloadshiabooks.com/

कि यह फ़िशार एक तरह से तत्हीर का अमल था कि जिस शरूस में एखलाक़ी कशाफ़तें हों और कुदूरतें और ग़ेलाज़तें हों वह फ़ेशार के ज़रिये मानिन्द रोग़न सियाह निकाल दी गईं। जैसा कि मैंने देखा था और यही मक़सूद आइम्मा अलै. से वारिद हुआ है कि शीरे मादर दिमाग़ से ख़ारिज होता है। लेकिन चूंकि दूध की अस्ल ख़ूने-हैज़ है और वह सियाह होता है और नजासत की अक़साम से एक है इस लिए कोई हैरत न होनी चाहिये अगर उसका रंग कशीफ़ व सियाह हो (जो फ़ेशार में दूर हों)।

मेरे सवाल के जवाब में हादी ने मुझे बतलाया कि यह बडा थैला तेरा बार है इसे खोल मैं भी देखूं तुम्हारे पास ज़ादे-राह क्या है। मैंने थैला खोला उसमें से तमाम सील बन्द डिब्बे निकले। मैंने देखा कि बाज़ पर लिखा था कि फ़ुलां मंज़िल का ज़ादे-राह और बाज़ पर लिखा था फ़ुलां मंज़िल के ख़तरात व अज़ाब के लिए, कुच्छ बटुए भी थे जिन पर बाज़ मनाज़िल की निशान देही थी और लिखा था कि इन्हें वहां खोला जाय। मालूम हो जायगा कि इन में क्या है। मैंने फिर पूछा कि यह डिब्बे हैं क्या ? जवाब मिला कि यह तुम्हारी उम्र के साअते-लैलो-नेहार हैं जिनमें तुझ से अच्छे और बुरे आमाल वक़ू पज़ीर (किये गए) हुए हैं जब वह आमाल

https://downloadshiabooks.com/

तूने अंजाम दिये तो इन डिब्बों का मुंह सीपी के मुंह की तरह खुला और इन आमाल को इन्होंने अपने अन्दर मिस्ल क़ीमती मोती के महफ़ूज़ कर लिया अब वही साआते लैलो-नेहार डिब्बों की शक्ल में तेरे सामने मौजूद हैं।

मैंने दरयाप्त किया कि मेरी बर्दन में यह तौक़ कैसा है ? जवाब मिला कि यह तेरा नामए-आमाल है। क़यामत के दिन इसी से तेरा हिसाब व किताब होगा। फ़िल हाल यानी आलमे-बरज़ख़ में इसकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी जैसा कि क़ुरआने-मजीद में सूरए असरा की चौदहवीं आयत में इरशाद हुआ "और हमने हर इन्सान के नामए आमाल को उसके गले में लगा रखा है। हम उसके लिए क़यामत के दिन एक नोश्ता निकालेंगे जिसे वह फैला हुआ पायेगा।

पस हादी ने मुझसे कहा कि मैं देखता हूँ कि तुम्हारे पास तोशए-आख़ेरत बहुत कम है। तुम्हें चाहिये कि इस जगह चन्द जुमा क़याम करो शायद दुनिया वाले तुम्हारे दोस्त और पस-मान्दगान (वारिस) तुम्हारे लिए कुछ तोहफ़े भेज दें। जैसा कि पैग़म्बर सल० ने इरशाद फ़रमाया कि सफ़र में तोशा जितना ज्यादा हो बेहतर है अब मैं चलता हूँ ताकि दुनिया व दीन के बादशाह से तेरे

https://downloadshiabooks.com/

लिए पर-वानए राहदारी हासिल करूँ। क्योंकि इस सिलसिले में कोई हुक्म एक हफ़्ते से जारी नहीं हुआ और तुम शबे-जुमा में अपने घर वालों को जाकर देख लो शायद वह लोग तुम्हें याद करके तुम्हारे लिए रहमत व मग़फ़रत तलब कर रहे हों।

यह कह कर हादी रुख़सत हुआ और मैं इसके इन्तेज़ार में बैठ गया लेकिन मेरी रुकने की जगह बड़ी अच्छी थी। कमरे में बेहतरीन फ़र्श बिछा था। जिसपर खूबसूरत नक़शों-निगार बने हुए थे। यहाँ तक कि शबे-जुमा आन पहुँची मगर हादी की कोई ख़बर न आई। हादी की हिदायत के ब-मोजिब मैं एक सफ़ेद परिन्दे की शकल में दुनिया में आया, घर पहुँचा और एक दरख़्त की शाख पर बैठ कर हालात का ज़ायज़ा लेने लगा। १

१—अल्लामा मजलिसी अलैहिर-रहमा ने हक़्क़ुल-यक़ीन में लिखा है कि मुर्दो की अरवाह हफ्ते में कभी महीने में कभी साल में (अपनी मन्ज़िलत के हिसाब से) अपने अहले ख़ाना को देखने परिन्दों की शक्ल में आती हैं और घर की दीवार पर बैठ कर देखती हैं। अगर वह अच्छे आमाल करते हैं और ख़ुश व ख़ुर्रम हैं तो यह रूहें भी ख़ुश होती हैं। वरना अफ़सोस करती हैं दूसरी रवायत में वारिद है कि शबे-जुमा ग़ुरूबे-आफ़ताब के वक्त यह रूहें आती हैं और अरवाहे-मोमनीन के हमराह ख़ुदा वन्दे आलम एक फ़रिश्ते को भेजता है अगर उसके अहलो-अयाल सख्ती में गिरफ्तार हैं तो यह फ़रिश्ता उन्हें उनकी निगाहों से पोशीदा कर देता है ताकि मोमनीन को तकलीफ़ न पहुंचे।

https://downloadshiabooks.com/

मैंने अपने सगे-सम्बन्धियों को देखा मगर मुझे अफ़सोस हुआ वह बज़्मे-खुद मेरे लिए ईसाले-सवाब कर रहे थे। रिश्तेदार व दोस्त जमा थे मजलिस बरपा थी और क़ुरआन-ख्वानी हो रही थी। पुलाव पकाया गया था मगर मैंने महसूस किया कि यह सब कुछ सिर्फ़ रस्मे-दुनिया के तौर पर अंजाम दिया जा रहा था और उससे सिर्फ़ नमूदो नुमाइश मक़सूद थी। क्यों कि पुलाव खाने वाले सब अमीर थे उन्हें खाने की हाजत बिल्कुल नहीं थी और किसी एक मिसकीन या जरूरत-मन्द को उन्होंने खाने के लिए नहीं बुलाया था। भला ऐसे पुलाव से मुझे क्या फ़ायदा और खाने के लिए बुलाए जाने का मकसद भी सिर्फ़ रस्मे दुनिया को पूरा करना था। बल्कि अगर दावत वालों की खिदमत में कमी होती तो वह मरने वाले और उसके रिश्तेदारों को बुरा भला कहते थे और यह मजलिस में गिरया भी हुसैन इब्ने अली के वास्ते न था बल्कि वह अपने लिए था कि कोई कहता था मेरा सरपरस्त न रहा, कोई कहता था कि अब खाने पीने के लिए क्या होगा ? गोया उन्हें सिर्फ़ अपने आप से और अपनी जात से मतलब था न उन्हें मेरी फ़िक्र थी न अपनी आक़बत की। भला यह बातें मेरी किस काम की थीं ? उनके इन कामों से मुझे दुख हुआ कि-अल अयाज़ बिल्लाह

https://downloadshiabooks.com/

यह लोग गोया ख़ुदा की शिकायत कर रहे थे। जैसे ख़ालिक़ व मालिक ने उनपर ही ज़ुल्म कर दिया हो यह लोग ख़ुदा के काम पर एतराज़ कर रहे थे। पस मैं उनकी तरफ़ से ना उम्मीद हो गया और हाथ मलता अफ़सोस करता हुआ क़बरस्तान और अपनी रुकने की जगह की तरफ़ वापस लौटा··· क़रीब था कि मैं अपने रिश्तेदारों और औलाद से बेज़ारी ज़ाहिर करता मगर सच्चाई मालूम होना रुकावट बना कि इन लोगों के लिए यही बद-क़िसमती काफ़ी है कि मेरी ज़ात से महरूम हो गये हैं। वापस आकर सूराख़े क़ब्र से मैं अपनी क़ब्र में वापस आया। जब मंज़िल पर पहुँचा तो देखा कि हादी आया हुआ है। मैंने देखा कि एक क़ाब (बर्तन) में तरो-ताज़ा सेब हुज्रे के बीच में रखा है मैंने दरयाफ़्त किया यह कहां से आए हैं? जवाब मिला कि कोई शख़्स आज तेरी क़ब्र के पास से गुज़रा था और उसने तेरी क़ब्र पर फ़ातिहा पढ़ा। चूंकि उसका यह काम दिखावटी न था बल्कि दिल से किया गया था कि उसे तुझसे कोई लगाव न था इस लिए अल्लाह ने अपनी रहमत से उसका नक़द बदला तेरे वास्ते भेजा है। ख़ुदा उसपर भी अपनी रहमतें व बरकतें नाज़िल करे। यह जवाब देकर हादी मेरे कमरे की सफ़ाई व सजावट में लग गया। सोने के

https://downloadshiabooks.com/

तख्त व कुर्सियां बिछाता था और दीवारों पर झालरें लगा रहा था। छत में क़न्दीलें आवेज़ां कर रहा था। इन क़न्दीलों से ऐसी रौशनी निकलती थी जैसे सूरज चमक रहे हों।

यह देखकर मैंने पूछा कि आख़िर क्या बात है तुम आज मेरे कमरे को सजाने की बड़ी कोशिश कर रहे हो जब कि यह मेरी, आपके कहने के मुताबिक़ हमेशा रहने की जगह नहीं है ?

उसने जवाब दिया कि मुझे मालूम हुआ है कि वह इमाम-ज़ादे जिनकी क़ब्र की तुमने ज़िन्दगी में ज़ियारत की थी और वह उल्मा जिनका नाम नमाज़े-शब में लेते थे और उनके लिए दुआए-ख़ैर करते थे उन्हें यह इत्तेला मिली कि तुम सफ़र-आख़ेरत पर आये हो। इस लिये वह तुम्हारी मोहब्बत व दोस्ती का हक़ अदा करने तुम्हारी मुलाक़ात को आ रहे हैं। मैंने अर्ज़ की कि यह मेरी ख़ुश-क़िस्मती है। ज़हे तौफ़ीक़, ज़हे नसीब, यह ख़बर सुन कर मुझे अपने अहलो-अयाल (बाल बच्चों) की तरफ़ से जो दुख पहुँचा था वह ख़ुशी से बदल गया। १

१—उसूल काफ़ी में इमाम जाफ़र सादिक़ अलै० से मरवी है कि इस दुनिया

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

https://downloadshiabooks.com/

मैं बराबर सोचता रहा कहां मैं गुनहगार और कहां यह सआदत व ख़ुशनसीबी। मैंने हादी से कहा कि मेरा हुजरा बहुत छोटा है और यह इन हज़रात के शान के लाएक़ नहीं है। उसने जवाब दिया कि छोटा है मगर तेरे लिए, जब वह हज़रात तशरीफ़ लायेंगे तो यह उनके हस्बे-हैसियत बड़ा हो जाएगा।

नागहां यह हज़रात तशरीफ़ ले आए और हर एक अपने मरतबा और मुक़ाम के लिहाज़ से बैठ गया। इन हज़रात के चेहरे कैसे नूरानी और पुर-जलाल थे। इन सब में नुमायां-तरीन हस्तियां हज़रत अबुल फ़ज़लिल-अब्बास अलै० और हज़रत अली अकबर अलै० की थी। यह दोनों बुज़ुर्ग एक सोने के तख़्त पर तशरीफ़ फ़रमा हुए मगर मैंने देखा कि यह दोनों लिबासे-जंग पहने हुए हैं। ख़ोद, ज़िरह, तलवार वग़ैरह। मुझे तअज्जुब था

(पृष्ठ ३४ का शेषांश)

के मग़रिब में एक बहुत उम्दा बाग़ है जो फ़ुरात से सेराब होता है और अरवाहे मोमनीन इसमें रहती हैं। वह एक दूसरे को पहचानती हैं, एक दूसरे से मुलाक़ात करती हैं और सुबह के वक्त इस बाग़ से परवाज़ करती हैं और कुफ्फ़ार व तबाहकार रूहों के लिए मशरिक़ की तरफ़ एक वादी है जहां उनपर तरह तरह के अज़ाब होते रहते हैं। तआम तल्ख़ है और पानी बदबूदार (शायद इससे वादी-उस-सलाम व वादीये-बरहूत मुराद है)

https://downloadshiabooks.com/

कि इस आलम में भला इस लिबास की इन हज़रात को क्या ज़रूरत थी ? मगर रोब व जलाल की वजह से बोल न सका।

मैं और हादी और दूसरे लोग हज़रत अब्बास अलै० और हज़रत अली अकबर अलै० के सामने बा-अदब सीधे ताज़ीम के लिए खड़े हो गए। मैं सदर-नशीनों के जलाल व जमाल के नज़ारे में महो हो गया और खुद को फ़रामोश कर दिया।

नागाह हज़रत अब्बास अलै० की आवाज़ गूंजी, वह हादी से मुख़ातिब थे कि क्या तुमने इस शख़्स के लिए मेरे वालिद बुज़ुर्गवार से परवानये शहदारी हासिल कर लिया ?

हादी ने अर्ज़ की जी हां और सूरए रहमान की इस आयत की तिलावत की "या माशेरल जिन्ने वल इन्से इनिस-तताअ-तुम अन तनफ़ुज़ू मिन अक़तारिस्समा-वाते वल अर्ज़े फ़न फ़ज़ू ला तन फ़ज़ना इल्ला बे सुल्तान" (आयत) (यानी ऐ गिरोहे जिन व इन्स क्या तुम में यह ताक़त है कि तुम ज़मीन व आसमान के हुदूद से बाहर निकल सको ? हरगिज़ नहीं निकल सकते लेकिन अल्लाह की अता की हुई क़ूवत के साथ)

https://downloadshiabooks.com/

पस इस आयए मुबारेका को समाअत फ़रमाने के बाद हज़रत अब्बास अलै० मेरी तरफ़ मुतावज्जेह हुए और फ़रमाया सुल्ताने विलायत यानी मेरे वालिदे माजिद का यही तज़केरा तेरी नजात की वजह है। तुझे अपनी नजात की ख़ुशख़बरी मुबारक हो। मैं इस करम नेवाज़ी और बन्दा परवरी को देखकर झुका ज़मीन को बोसा दिया और फिर सीधा खड़ा हो गया। इस मुलाक़ात और इन बुज़ुर्गों की शफ़क़त का मुझ पर ऐसा असर पड़ा कि मैं जज़्बात पर क़ाबू न रख सका और मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए। हज़रत हबीब इब्ने मज़ाहिर जो मेरे पहलू में खड़े थे मेरी तरफ़ झुके और धीरे से मुझसे फ़रमाया कि इस राह में जो मुशकिलें तुझे पेश आने वाली हैं उनसे तूने आज़ादी पाई और अब मायूस मत हो इस लिए कि यह दोनों हज़रात और इनके मासूम वलिद तुझे नहीं भुलायेंगे और यह हज़रात यहां अपने पदराने-बुज़ुर्गवार के इशारे से ही आए हैं। इस लिए कि इनके वालिद इस आलम में यक़ीनन शीओं और चाहने वालों की मदद फ़रमाते हैं और इन दोनों का यहां तशरीफ़ लाना फ़क़त इस लिये था कि तुझे देख सकें और तुझे इतमीनान हो जाए और सुनो हज़रत ज़ैनब सलामुल्लाह अलैहा ने तुझे सलाम कहलाया है और फ़रमाती हैं कि

https://downloadshiabooks.com/

मैं हरगिज़ फ़रामोश नहीं कर सकती तेरा पियादा-पा मेरे मज़लूम भाई की ज़ियारत को जाना उनकी मुसीबत पर आंसू बहाना और राह की तकलीफ़ यानी भूक व प्यास को बरदाश्त करना।

यह सुनकर मेरा हाल क्या हुआ मैं बयान नहीं कर सकता। बस बे अख़तियार मेरी ज़बान से निकला "अलैका अलैहिस्सलाम व रहमतुल्लाहे व बरकातोह"

पस मैंने हबीब इब्ने मज़ाहिर से पूछा कि इस पूरे मजमे में फ़क़त यह मेरे वह ही आक़ाज़ादे लिबासे-जंग में क्यों हैं? हालां कि यह मैदाने जंग नहीं है।

मेरे इस सवाल पर हबीब इब्ने मज़ाहिर के चेहरे का रंग मुताग़य्यर हो गया आंखों से आंसू जारी हो गये। जवाब दिया कि इसकी वजह यह है कि करबला के मैदान में इन दोनों की हसरते-जंग निकल न सकी। इनका तो इरादा था कि पूरे लशकर को तहस-महस कर के उन मलाऊनों को जहन्नम की राह दिखलाते मगर अल्लाह की मर्ज़ी यह न थी यह अपने आहनी इरादे को पूरा कर लें। अल्लाह की मर्ज़ी के सामने इन्होंने अपने आप को पाबन्दे हुक्म ख़ुदा कर लिया मगर वह इरादा इनके दिल में गिरह की तरह रह गया। यह वही इरादा है जिसने यहां लिबासे जंग की शक्ल अख़तियार कर

https://downloadshiabooks.com/

रखी है यह लिबास इन हज़रात के जिस्म से उस वक्त अलग होगा जब हज़रत हुज्जत अलै० ज़हूर फ़रमायगे और ख़ूने हुसैन मज़लूम का इन्तेक़ाम ले लिया जायगा।

मैंने देखा वह हज़रात तशरीफ़ ले गये मेरा हुजरा पहले की तरह छोटा हो गया और मैं व हादी तन्हा रह गये। मैंने हादी से कहा कि अब मैं दोबारा अपने बच्चों के पास नहीं जाऊंगा। क्योंकि मैं उन लोगों की तरफ़ से मायूस हो चुका हूँ। वह लोग जो कुच्छ कर रहे हैं अगरचे मेरे ही नाम पर कर रहे हैं मगर मेरे लिये नहीं बल्कि इससे उनकी ग़रज़ सिर्फ़ अपना नाम रौशन करना है सिवाय इसके कि वहां जाकर मेरा दुख दर्द और बढ़े कोई फ़ायदा नहीं है। अब जो कुछ मेरे पास है मैं उसी पर क़नाअत व सब्र करूँगा। और अब जो भी ख़तरात मुझे पेश आयेंगे इन दोनों बुज़ुर्गवारों की मेहरबानी से उम्मीद रखता हूँ कि मैं इन ख़तरात से सलामती के साथ गुज़र जाऊंगा;

हादी ने जवाब दिया कि अब तुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है पहली तीन मंज़िलें तेरे लिये आसान हैं इस लिये कि दुनिया में पहली मंज़िल विलादत से तीन साल तक की है जब कि बच्चा बिल्कुल ना समझ है। दूसरी मंजिल तीन साल से पन्द्रह साल तक की है कि

https://downloadshiabooks.com/

इस दौरान इन्सान पर मज़हबी क़ानून लागू नहीं होते। तीसरी मंज़िल पन्द्रह से अट्ठारह साल तक की है कि इस उम्र में गो तकलीफ़ शराई का इतलाक़ है मगर अक़ल पुख़्ता नहीं होती और लोगों के आमाल के साथ रफ़तार उसकी अक़ल के मुताबिक़ होती है जैसा कि ख़ुदा वन्दे आलम ने अक़ल को पैदा फ़रमाने के बाद कहा कि "बेका ओ-आक़िबों व बेका असीबो" यानी सवाब व एक़ाब का मदार अक़्ल पर होता है और आलमे आख़ेरत की पहली मंज़िलें दुनयावी ज़िन्दगी की इन्हीं तीन मंज़िलों की रदीफ़ हैं।१

लिहाज़ा इन शुरू की तीन मन्ज़िलों में तुझे कोई ख़तरा नहीं है और अगर बिलफ़र्ज़ कोई ख़तरा हुआ भी तो जल्दी ही छुटकारा हो जायगा। इस लिये इन तीन मनाज़िल में तेरे साथ रहना ज़रूरी नहीं है। अब मैं चलता हूँ ताकि मन्ज़िल चहारुम पर तुझ से पहले पहुँच कर तेरा मुन्तज़िर रहूँ। तुम कल सुबह यहां से अपना सामान उठालो और अपना तोबड़ा और आमाल का थैला लेकर

१–गो इस सिलसिले में कोई रवायत नहीं है मगर अक्ल की मज़बूती के लिए अट्ठारह साल की क़ैद जरूरी नहीं है क्यों कि मुम्किन है बाज़ लोगों की पचास और सौ साल में भी पुख़्ता व बालिग़ न हो। इसी लिहाज़ से वहां अज्र व सवाब व अक़ाब की रफ़तार होगी। वल्लाह आलम

https://downloadshiabooks.com/

इस शाहराह पर जो क़िब्ला के सिम्त जा रही है, रवाना हो जाओ और चौथी मन्ज़िल पर मेरे पास पहुँच जाओ।

इस लिये हादी ने जो यह कहा तो मैं उससे लिपट गया और उससे कहा कि ऐ हादी तुम अच्छी तरह वाक़िफ़ हो कि तुम्हारी जुदाई मुझपर बहुत सख़्त और गराँ गुज़रती है। ठीक है यह रास्ता सीधा है और बड़ा और चौड़ा भी है और माना कि इस रास्ते में ख़तरात भी नहीं हैं मगर सोचो तो कि मैं तन्हा रास्ते से ना-वाक़िफ़ और तुम मेरे साथ न होगे। यह वह दर्द है जिस का कोई दरमाँ नहीं। भला मुझपर क्या गुज़रे गी और फिर पैग़म्बरे-अकरम का इरशादे गिरामी भी यह है कि "सफ़र शुरू करने से पहले हमसफ़र तलाश करो"।

हादी ने जवाब दिया कि इन तीन मनाज़िल में सिवाय इसके और कोई चारा नहीं कि तुम तन्हा सफ़र करो। क्योंकि मैं दुनिया में भी इन मनाज़िल के दौरान तुम्हारे हमराह नहीं था। मेरा वजूद तुम्हारे साथ सिर्फ़ उस वक़्त से है जब तुम्हारी अक़्ल पुख़्ता हो चुकी थी। क्योंकि मेरी तीनत इल्लीयीन से है और तीनते इल्लीयीन का काम सिर्फ़ रुश्दो-हिदायत करना है। इन मनाज़िले-मह-गाना में जो कुछ भी गुज़रे तुम्हारे अपने आमाल की वजह से होगा। "फ़लम नफ़्सका वला तलमनी" यानी

https://downloadshiabooks.com/

अगर मलामत करना है तो अपने नफ़्स को करो न कि मुझे। पस यह कह कर वह मेरे पास से परवाज़ कर गया और मैं अकेला रह गया और हादी की गुफ़्तुगू पर ग़ौरो-फ़िक्र करने लगा और मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि जो कुछ उसने कहा दुरुस्त था।

अब न हादी था न अबूतुराब न अबुलवफ़ा। अब मैं तन्हा था और तीन मनाज़िल का तवील सफ़र जो मुझे तै करना था। सच है "सुन्नतिल्लाहिल्लती लन तजेदा ले-सुन्नतिल्लाहे तब्दीला" यानी यह सुन्नते इलाही है और तुम सुन्नते इलाही में तब्दीली नहीं देखोगे। दारे-दुनिया और दारे-बक़ा के तमाम वाक़ेआत व हवादिस बाहम मुतालिक़ हैं। इनको बदला नहीं जा सकता। दारे-दुनिया को हमने समझ लिया और परख लिया। बस आलमे-आख़ेरत भी इसी के मुताबिक़ है और इसमें चूं व चरा करना नाफ़हमी की दलील है।

●★●

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय २

पहली मन्ज़िल की तरफ़ सफ़र

बहर हाल मैं यह सोच कर उठा कि हरचे बादा-बाद, अब चलना चाहिये। मैंने अपने बारे-आमाल का थैला अपनी कमर पर लादा और जिस रास्ते की हादी ने निशान देही की थी उसपर चल पड़ा। रास्ता बिल्कुल साफ़ था और बड़ी प्यारी ठंडी ठंडी हवा चल रही थी मैं ताज़ादम था, दूसरे मुझे हादी से मिलने का शौक़ था। जिस ने चौथी मंज़िल पर मिलने का वादा किया था इस लिये मैं तेज़ तर्क गामज़न मन्ज़िले मा दूरनेस्त, के हिसाब से बड़ी तेज़ी के साथ रास्ता तै कर रहा था। यहाँ तक कि दोपहर हो गई। अब मुझे कुछ कुछ थकन महसूस होने लगी। हवा में भी गर्मी बढ़ गई और मुझे प्यास महसूस होने लगी। रास्ता कुछ तंग हो गया और काँटे भी रास्ते में आ गये थे। इन से बचता हुआ एक पहाड़ी के दामन में पहुँच गया। आगे चढ़ाई थी, मैं चढ़ाई चढ़ रहा था। अपनी तन्हाई से दहशत ज़दा था कि मैंने पीछे की

https://downloadshiabooks.com/

तरफ़ पलट कर देखा, क्या देखता हूँ कि कोई शख़्स मेरे पीछे पीछे चला आता है। मैं ख़ुश हुआ कि चलो तन्हाई दूर हुई कोई सफ़र का साथी तो मिला। यहाँ तक कि वह मेरे क़रीब पहुँच गया।

मैंने देखा कि एक शख़्स है सियाह-रू, करीहुल-मन्ज़र, उसके होंटों पर बजाय मुस्कुराहट के कुलफ़त के आसार हैं, दाँत बड़े बड़े, ऊपर का होंट लटका हुआ, नाक चौडी मोहीब और बदबूदार। उसने मुझे सलाम किया मगर सलाम में से सिर्फ़ 'लाम' (लाम हिन्दी का 'ल' है) को हज़फ़ कर गया और इतना कहा कि अस्साम अलैक यह तरीक़ए सलाम मुझे शक और शुब्हे में डालने के लिए काफ़ी था क्योंकि यह तरीक़ए सलाम दुश्मनी की अलामत था और क़यास भी इस बात की शहादत देता था कि उसने सलाम का हरफ़ 'लाम' जान कर अदा किया था। लेहाज़ा मैं भी बजाए ख़ुद होशयार हो गया और जवाब में सिर्फ़ इतना कहा 'व अलैक'।

मैंने पूछा कहां का इरादा है ? वह बोला आप के साथ हूँ मगर मैं चूंकि उससे ख़ौफ़ व दहशत महसूस कर रहा था इस लिये मैं बिल्कुल नहीं चाहता था कि वह मेरे साथ सफ़र करे। मगर मैंने पूछा नाम क्या है ? उसने

https://downloadshiabooks.com/

कहा मैं आप का हमज़ाद हूँ। मुझे जिहालत कहते हैं, पुकारने का नाम कजरवी है और कुन्नियत अबुलहौल है और मेरा काम फ़ित्ना व फ़साद और गुमराही फैलाना है। यह तमाम बातें मेरी तबियत पर भारी गुज़रीं और मैं सख्त परेशान और घबराया हुआ सा हो गया। मैंने दिल में सोचा कि अजीब हमसफ़र मिला है इससे तो अकेले सफ़र करना हज़ार दर्जा बेहतर था। १

इससे मैंने दरयाफ़्त किया कि अगर कहीं दोराहा आ जाये तो क्या तुम वाक़िफ़ हो कि हमें किस रास्ते से जाना होगा ? उसने कहा मैं नहीं जानता ? मैंने कहा मैं प्यासा हूँ कहीं क़रीब में पानी मिलेगा ? जवाब मिला मैं नहीं जानता।

१—रवायत से पता चलता है कि शैतान के मरदूद होने के बाद उसकी यह इल्तेजा क़ुबूल हुई कि जब भी इन्सान का कोई बच्चा पैदा होता है साथ ही शैतान का भी एक बच्चा पैदा होता है और वह इस नोमौलूद इन्सान के साथ हर वक्त लगा रहता है उसी को हमज़ाद कहते हैं। उसका काम बहकाना है आलमे-बर्ज़ख़ में भी यह साथ साथ होगा अगर दुनिया में इन्सान ने नफ़्स को मग़लूब रक्खा तो आखेरत में यह हमज़ाद मग़लूब रहेगा और नुक़सान नहीं पहुंचा सकेगा और जितनी दुनिया में मासियत की होगीं आख़ेरत में यह हमज़ाद उतना ही तकलीफ़ पहुंचाए गा। ख़ुद पैग़म्बर ने फ़रमाया कि मेरा भी हमज़ाद था मगर "इन्ना शैतानी असलमा बे-यदी" यानी मेरे शैतान ने मेरे हाथ इस्लाम क़ुबूल कर लिया।

https://downloadshiabooks.com/

पूछा मंज़िल दूर है या नज़दीक ?

बोला मैं नहीं जानता ।

मैंने कहा दानाई व अक़्ल वजूद के साथ है तू क्यों नहीं जानता ?

वह बोला कि मैं सिर्फ़ इतना जानता हूँ कि तेरी पैदाइश के वक़्त से मैं तेरे साथ लगा हुआ हूँ और तुझसे कभी जुदा नहीं होता मगर यह कि तौफ़ीक़े खुदा तेरे साथ शामिले हाल हो और तू खुद मुझसे जुदा हो जाय ।

मैंने अपने आप से कहा कि इसके मानी यह हैं कि यही वह शैतान मलाऊन है जिसके बहकाने से मैं दुनिया में गुनाह किया करता था अब यह यहां आन मौजूद हुआ । अजब दुशमनी में गिरफ़्तार हूँ खुदाया रहेम फ़रमा और वह कम्बख़्त दो क़दम के फ़ास्ले पर मेरे पीछे पीछे चला आता था । रास्ता दुशवार था और चढ़ाई सख़्त थी ।

यहां तक कि मैं पहाड़ के ऊपर पहुँच गया । थकाबट दूर करने के लिये थोड़ी देर सुस्ताने के लिए बैठ गया वह मुजस्समये जिहालत भी मेरे पास पहुँच गया और मुझसे

https://downloadshiabooks.com/

कहने लगा कि मालूम होता है बहुत थक गए हो और अगर चाहो तो तुम्हें छोटा रास्ता (शार्ट कट) बतला दूं कि पांच फ़रसख़ की राह एक फ़रसख़ रह जाएगी ? मैंने कहा इस जेहालत व नादानी के बावजूद मालूम होता है तुम मोजज़ा भी दिखला सकते हो ।

उसने कहा ऐसा नहीं है बल्कि तुम यहां आओ मैं तुम्हें समझाता हूँ, देखो यह राह जिस पर तुम जा रहे हो यह हालांकि रौशन व साफ़ है मगर कमान की तरह मुड़ी हुई है और इसका तूल पांच फ़रसख़ से कम नहीं है और इस कमान का वत्र जो इस कमान नुमां रास्ते के दोनों सिरों को मिलाता है एक फ़रसख़ से ज़्यादा नहीं है और ज्योमेट्री के हिसाब से क़ौस अगरचे कितनी ही छोटी हो या निस्फ़ दायरे से बड़ी हो वह बहरहाल वत्र से बड़ी होती है और अगर हम इस मारूफ़ शाहराह को छोड़ कर इस वत्र पर होलें तो यक़ीनन यह रास्ता छोटा और शार्ट कट है । यह छोटा रास्ता एक फ़रसख़ से ज़्यादा नहीं है जब कि क़ौस वाला शाह राह का रास्ता पांच फ़रसख़ से कम नहीं है और अक़्लमन्द वह है जो तवील रास्ते के बजाय कम फ़ास्ला तै करे ।

मैंने कहा बेवक़ूफ़ शाहराह हमेशा मुसाफ़िरों के

https://downloadshiabooks.com/

कसरत से आने जाने से बनती है क्या वह लोग जो इस शाह-राह से गुज़रे अक़्ल से आरी थे कि उन्होंने यह तवील रास्ता अख़तियार किया। जब कि अक़्लमन्दों का यह क़ौल है कि हमेशा उस रास्ते पर सफ़र करो जिस पर ज़्यादा मुसाफ़िर सफ़र करते हैं (राह हमें रौ कि रह रवां रफ़्ता अंद)

उसने कहा तू अजीब बे शऊर आदमी है शाएरों और यादा गोयों को तू अक़्लमन्द समझ बैठा है और ख़ुद भी उन्हीं को पैरवी करना चाहता है हालांकि जो रास्ता मैंने बतलाया है वह ज़ाहिर-बज़ाहिर छोटा है फिर जो लोग इस रास्ते पर गये हैं मुमकिन है उनके पास ज़ादेराह बहुत हो मुमकिन है उनके पास सवारी का भी इन्तेज़ाम हो और दर्रा जो वत्र के शुरू में है वह उससे गुज़रना न चाहते हों या मुमकिन है उनकी सवारी इसमें से न गुज़र सकी हो और रहे हम और तुम तो हमें किस मुसीबत ने मारा है कि इस मुख़तसिर और मुफ़ीद रास्ते को इस्तेमाल न करें।

मुझसे यह ग़लती हुई कि मैं उसके कहने में आ गया और उसे अपना ख़ैरख़्वाह समझ बैठा और अस्ल राह को छोड़कर उस तंग दर्रे की राह से चल पड़ा।

https://downloadshiabooks.com/

गर वह रास्ता बिल्कुल बराबर न था, गहरे गहरे गढ़े जिनमें हर तरह के ख़श व ख़ाशाक थे सारा रास्ता ांटों से भरा था, तरह तरह के सांप व बिच्छू इस रास्ते ं मौजूद थे एक गहरी खाई पार न हो रही थी कि ूसरी सामने मौजूद होती थी। हवा सख़्त गर्म थी, प्यास के मारे मेरी ज़बान निकल आई थी। मेरे पैर ज़ख़्मी हो ाए थे, दिल ख़ौफ़ से लरज़ रहा था। या अल्लाह किस ुसीबत में फंस गया। उधर वह मेरा हमज़ाद मेरी ालत देख रहा था और क़हक़हे लगा रहा था, मज़ाक़ उड़ा रहा था। तवील अर्से तक चलता रहा और दस से ज़्यादा फ़रसख़ का रास्ता तै करके कहीं शाहराह पर पहुँचा। हर हर क़दम पर हज़ारों बलाओं से वास्ता पड़ा। थक कर चूर हो गया और इस जिहालत यानी हमज़ाद से मुझे कामिल नफ़रत पैदा हो गई। उससे मैंने कहा काश तेरे और मेरे दरमियान बादुल-मशरक़ैन होता। मगर वह आकर मुझसे कुछ फ़ासले पर खड़ा हो गया। मैं कुछ देर सुस्ताने के लिये बैठ गया, वह खड़ा रहा, आखिर कार मैं उठा और फिर रवाना हुआ। वह भी मेरे पीछे पीछे चला आया। मैंने देखा कि सड़क से कोई चौथाई फ़रसख़ के फ़ासले पर एक सब्ज़ा-ज़ार है इस मौक़े पर हमज़ाद जिहालत ने फिर मुझपर अपना वार

https://downloadshiabooks.com/

किया दौड़ा दौड़ा मेरे पास आया और कहा देखो वह सब्ज़ा-ज़ार है यक़ीनन पानी भी होगा। तुम प्यासे बहुत हो चलो चल कर देखते हैं पानी पीकर फिर आगे चलेंगे दिल तो चाहा कि इस की कोई बात न सुनूं मगर चूंकि प्यास शिद्दत की लगी हुई थी, थका हुआ भी बहुत था और मैं भी जानता था कि बाग़ व सब्ज़ा बग़ैर पानी के नहीं उगा करता। इस लिए मैं भी उसकी बातों में आ गया और हम दोनों उस सब्ज़ए-ज़ार में पहुँच गये मगर देखा कि वहाँ पानी नाम को भी न था। ज़मीन बिल्कुल संगलाख़ व चटयल थी वहाँ पहुँचने का रास्ता भी बड़ा नाहम्वार और तकलीफ़-देह था और इस संगलाख़ मैदान में काले काले बड़े बड़े सांप लोट रहे थे। वह सब्ज़ा ख़ुद-रौ जगली झाड़ियों का था जिन्हें पानी की मुतलक़ ज़रूरत नहीं होती। यह हर मौसम में हर जगह उग आती हैं। बहर हाल वहां से मायूस होकर वापस लौटा और बाद ख़राबिये-बसयार सड़क पर पहुँच गया। अब हम एक हमवार ज़मीन पर पहुँचे जहाँ बड़े बड़े तरबूज़ों का खेत था और पूरा खेत तरबूज़ों से भरा हुआ था। हमज़ाद (जेहालत) ने फ़ौरन उनमें से एक तरबूज़ तोड़ लिया और खाने लगा और मुझसे कहा कि तुम भी खाओ। तरबूज़ खा कर तुम्हारी प्यास बुझ जायेगी, मैंने

https://downloadshiabooks.com/

कहा यह पराया माल है और इसके मालिक की इजाज़त बग़ैर इसका खाना ठीक नहीं है।

वह इसी तरह खाने में मशग़ूल था। तरबूज़ का पानी उसकी दाढ़ी और सीने पर बह रहा था। मेरी बात सुन कर उसने सर को जुंम्बिश दी और कहा जनाब आप बड़े पारसा बन रहे हैं। सुनें, अव्वल तो एहतेमाल यह है कि यह ग़ालेबन ख़ुद-रौ हैं और किसी की मिलकियत नहीं हैं और अगर बिलफ़र्ज़ यह किसी की मिलकियत भी हैं तो हम लोग मुसाफ़िर हैं और शारये-मोक़द्दस (मज़हबी क़ानून) ने उन खेतों पर जो सरे-राह पड़ते हैं, मुसाफ़िरों का हक़ ज़रूरत भर रक्खा है। दूसरे प्यास की वजह से तुम हलाकत के क़रीब पहुँच चुके हो ऐसी हालत में तो मुरदार भी हलाल हो जाता है। जैसा कि सूरए बक़र: की आयत नं० १७४ में है "फ़-मनिज़-तोर्रा ग़ैरा बाग़िव वला आदिन फ़ला इस्मा अलैह० इन्नल्लाहा ग़फ़ूरुंर-रहीम" और तीसरे यह कि यह दारे तकलीफ़ यानी दुनिया नहीं है बल्कि आलमे-बरज़ख है और एहकामे शरीअत का तअल्लुक़ दुनिया की ज़िन्दगी से है। तुम मज़हबी लोग भी अजीब हो, बाज़ औक़ात ऐसे हुक्म लगाते हो जो अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल नहीं हुए।

https://downloadshiabooks.com/

मुझ अहमक़ पर फिर उसका वार चल गया। सोचा कि शैतान होने के बावजूद कम्बख़्त कैसी दलीलें देता है। बहर हाल मैंने उनमें से एक तरबूज़ तोड़ लिया अब जो चक्खा तो कड़ुवा ज़हर था। इतना तल्ख़ कि मेरा मुंह और हलक़ भी ज़ख़्मी हो गए। मैंने वह फेंक दिया और उससे कहा मालूम होता है यह शैतानी तरबूज़ है बल्कि जेहालत और अबूजेहल के तरबूज़ हैं। उसने कहा नहीं ऐसा तो नहीं है। मुमकिन है यह तुम्हारा वाला कड़ुवा निकला हो, मैंने दूसरा तोड़ा वह भी कड़ुवा ज़हर था, तीसरा भी ऐसा ही था। वह मुसलसल खाये जा रहा था और कहता जाता था बड़े मीठे तरबूज़ हैं। मैंने बढ़कर उससे एक फांक ली, चक्खी तो वह भी साँप के ज़हर की तरह कड़ुवी थी। मैंने वह क़ाश फेंक दी और उससे कहा तेरा खाना ख़राब हो तू इसे क्योंकर खा रहा है और कहता है कि मीठे हैं हालांकि साँप का ज़हर भी शायद इससे ज़्यादा कड़ुवा न हो। अब वह बोला कि मेरे मज़ाक़ के मुताबिक़ तो वाक़ई यह बहुत मीठे हैं क्यों कि मैं जेहालत हूँ और यह तरबूज़ अबूजेहल है और यह मुझसे मुनासबत रखते हैं। जो चीज़ मेरे लिये अच्छी है वह तुम्हारे लिए बुरी है क्योंकि मैं शैतान हूँ और तुम इनसान हो और यह तरबूज़ मेरी तबियत के मुताबिक़ हैं

https://downloadshiabooks.com/

तुम्हारी तबियत के मुताबिक़ नहीं हैं। [1]

नागहां एक ख़ौफ़नाक कुत्ते ने हमपर हमला कर दिया और एक शख़्स हाथ में लकड़ी लिये गालियां और फ़हेश बकता कुत्ते के पीछे आ रहा था ताकि वह हमें मारे। हमज़ाद शैतान (सैय्याहक)[2] एक ही जस्त में सड़क पर पहुँच गया। मैंने बहुत भागना चाहा मगर न भाग सका और कुत्ते ने मुझे आ लिया और मैं इस आफ़ते-नागहानी से खौफ़ खा कर ज़मीन पर गिर पड़ा यहां तक कि कुत्ते का मालिक आन पहुँचा और उसने उस लकड़ी से जो उसके हाथ में थी मेरी मरम्मत करना शुरू की हरचन्द मैं दुहाई देता था, फ़रयाद करता था मगर वह

१—इल्म फ़लसफ़ा में इस सिलसिले में तवील बहसें हैं जिन का निचोड़ यह है कि चीज़ों की अच्छाई या बुराई इनसान की तबियत के मुताबिक़ होती है बुरे लोग बुरे काम और मासियत को भी बुरा नहीं समझते बल्कि उनको ऐसे काम से राहत व सुकून मिलता है जब कि अच्छे लोग बुरे कामों को हमेशा वबाल समझते हैं। बल्कि जो लोग माल हलाल खाने के आदी हैं लुक़मये हराम उन्हें बीमार कर देता है।

२—मोअल्लिफ़ (लेखक) रहमतुल्लाह अलैह ने इस मुक़ाम से हमज़ाद या जेहालत के लिये "सैय्याहक" लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है। यह लफ़्ज़ बड़ा बलीग़ और पुरमानी है और हमज़ाद के लिये मुनासिब तरीन लफ़्ज़ है इसलिये मैं तरजुमे में इसी लफ़्ज़ को बिला तरजुमा इस्तेमाल करूंगा—(लेखक)।

https://downloadshiabooks.com/

मेरी एक न सुनता था। मैंने लाख कहा कि मैंने तुम्हरा तरबूज़ नहीं खाया उसने कहा इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है ? ग़ैर के माल को खाना और उसे बरबाद करके ज़मीन पर फेंक देना दोनों यक्सां हैं। बड़ी मुशकिल से जब वह मेरी उस लकड़ी से अच्छी तरह धुनाई कर चुका तो मैंने उससे रिहाई पाई और गिरता पड़ता सड़क पर आ गया। मगर मैं ज़ख्मों से चूर था। मार खाने की वजह से जोड़ जोड़ दुख रहा था। प्यास की शिद्दत थी और थकान बे इन्तेहा। मैं हादी के फ़िराक़ में नाला व फ़रयाद करता था कि ऐ हादी तू इस मुसीबत में मुझे तन्हा छोड़ कर कहां चला गया ?

सैय्याहक अपनी कामयाबी पर खुश था। मुझे इस मुसीबत में गिरफ़्तार देख कर दूर बैठा हुआ क़हक़हे लगा रहा था और कहता था कि हां और हादी को याद कर, वह तेरे यहां क्या काम आ सकता है ? क्योंकि दुनिया में तुमने आख़ेरत के इन मसाएब के बीजों को मेरे बाग़ में काश्त किया था अब उनका मज़ा चक्खो "इन्नद-दुनिया मज़द-अतुल आख़ेरते वल आख़ेरतो यौमल हेसार" यानी दुनिया आख़ेरत की खेती है और आख़ेरत उसी फ़सल के काटने का दिन है। तू आलिम बनता है और तेरी क़ुरआन पर नज़र नही थी, वहां साफ़ लिखा है

https://downloadshiabooks.com/

'व मन यामल मिस्क़ाला ज़र-रतिन शर-रईं यरह" यानी जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी तो वह आख़रत में उस बुराई को मौजूद पाएगा और देखेगा। भला क़ुरआन करीम की रौशन और क़वी हुज्जतों और दलीलों के मुक़ाबले में हादी तेरी मदद कर सकता है? चलो ठीक है वह मनाज़िल भी आया ही चाहती हैं जहाँ हादी भी तेरे साथ होगा मगर मैं भी साथ हूँ। तुम ऐसी बलाओं में गिरफ़्तार होगे कि हादी भी दम न मार सकेगा। क्या हादी ने तुझसे नहीं कहा था कि जब तुम गुनाह करते थे तो वह तुम्हारा साथ छोड़ कर भाग जाता था। अल्बत्ता वह फिर तुम्हारे पास आ जाता था जब तुम तौबा कर लेते थे। क्या तुम्हें अपने पैग़म्बर का जिनका तुम कल्मा पढ़ते हो यह इरशाद भी याद न रहा कि "ला यज़निल-मोमिन व होवा मोमिन" यानी मोमिन जब कि वह वाक़ई मोमिन है ज़िना नहीं करता[1]। फिर

१—अहादीसे मासूमीन से मालूम होता है कि लोगों में रूहे ईमान मोक़फ़्फ़ल नहीं होती। गुनाह व मासियत के वक्त रूहे-ईमान सल्ब हो जाती है और जब आदमी तौबा कर लेता है तो यह रूह दोबारा आ जाती है क्यों कि रूहे-ईमान इलाही व मलाकूती है। लेहाज़ा जब मोमिन झूट, ग़ीबा, ज़िना और दूसरे आमाले बद को अंजाम देता है तो रूहे ईमानी उसके साथ नहीं होती लेहाज़ा जेहल की तारीकी में वह मासियत में गिरफ्तार होता है। खुदा सब को तौबा की तौफ़ीक़ इनायत करे-आमीन।

https://downloadshiabooks.com/

बतलाओ जब इन मवाक़े पर हादी तुम्हारे साथ होता है नहीं था तो वह तुम्हारी मदद क्योंकर कर सकता है मैंने महसूस किया कि यह मलऊन अजब बलाए-बे दरम है। कम्बख़्त बा-इत्तेला है कि इसे एक एक बात का पता है। मैंने हादी हादी की रट लगाना भी छोड़ दी अपना तोबड़ा खोला और एक सेब निकाला उसे खाय इससे प्यास भी बुझ गई, ज़ख़्म भी ठीक हो गए। इसलिए मैं उठा और फिर आगे चल पड़ा।

मैं एक दोराहे पर पहुँचा, एक रास्ता तो एक पुरफ़ेज़ा और नूरानी शहर को जाता था और दूसरा एक ख़राबा की तरफ़ पहुँचाता था। एक शख़्स जो इस दोराहे पर खड़ा ड्यूटी दे रहा था उससे मैंने कहा।

भाई अगर मुम्किन हो सके तो यह कम्बख़्त सैय्याहक जो मेरे पीछे आ रहा है उसे यहीं रोक लें। आज इसने मुझे बड़ी तकलीफ़ें दी हैं। उसने जवाब दिया कि जिस तरह इन्सान का साया उसका साथ नहीं छोड़ता यह भी तेरे साथ साये की तरह रहेगा। लेकिन यह आज रात तेरे साथ न रह सकेगा। क्योंकि यह इस नूरानी व पुरफ़ेज़ा शहर में दाख़िल नहीं हो सकता। यह सैय्याहक इस ख़राबे में क़याम करेंगे जो तुम्हारे बायें हाथ की

https://downloadshiabooks.com/

तरफ़ है और इसके बाद जब तुम्हारा सफ़र दोबारा शुरू होगा तो यह फिर तुम्हारे साथ लग जायेगा। हाँ यह मुम्किन है कि आयन्दा यह तुम्हें कुच्छ कम तकलीफ़ पहुँचाये।

मैं इस शहर मामूरा में दाख़िल हो गया। यही पहली मंज़िल थी, वहाँ अलीशान इमारतें थीं, नहरें थीं, सब्ज़ा-ज़ार थे, दरख़्त फलों से लदे हुए थे, ख़ूबसूरत ख़ुद्दाम थे जिनकी शीरीं बयानी कुच्छ न पूछो। तय्यब व ताहिर लवाज़माते ख़ूराक। तरह तरह के ख़ुशगवार शर्बत मौजूद थे। तबियत ख़ुश हो गई और मैं जो अज़ीयतनाक बियाबानों को तय करके आ रहा था सैय्याहक की शरारतों की वजह से जो मुझे ईज़ायें पहुँची थीं वह कुल्फ़तें दूर हो गईं और राह के हवलनाक बियाबानों के मुक़ाब्ले में मुझे यह जगह बेहिश्ते-अम्बर शरिश्त मालूम हुई और अगर हादी से मिलने का शौक़ न होता तो मैं यहाँ म कभी बाहर न जाता।

इस मुक़ाम पर मुझे अपने चन्द शागिर्द मिले जो मुझसे पहले मर चुके थे। रात को हम लोगों ने आराम किया। सुबह हुई शहर की फ़िज़ाओं में नारंगियों की ख़ुशबू रची बसी थी। हम लोग चहेल क़दमी करने लगे और एक दूसरे का हाल अहवाल दरयाफ़्त कर रहे थे

https://downloadshiabooks.com/

और जो कुछ गुज़री सब एक दूसरे को सुना रहे थे। इस लिए कि आलमे आख़ेरत में ऐसी ही मंज़िलों में लोग एक दूसरे की ख़ैरियत व आफ़ियत वग़ैरह दरयाफ़्त करते। वरना सफ़र व हरकत के दौरान किसी को कहां होश होता है कि एक दूसरे की ख़ैरियत दरयाफ़्त करें। जैसा कि क़ुरआन में इरशाद है "लकल अमरो यौमा-अज़शान यग़नीहे" यानी क़यामत के दिन तू हर एक को एक दूसरे से ला-तअल्लुक़ और बे परवाह देखेगा। हम लोग शुक्र अदा करते थे कि इन सैय्याहकों से जान छूटी।

क़िस्सा कोताह इस शहर में हमें हर तरह की नेमत मोयस्सर थी। ख़ुशगवार आबो हवा, ख़ूबसूरत व ख़ूबसीरत लोग, तरह तरह के लवाज़मात खाने और पीने के और सबसे बड़ी बात यह कि वह क़बीह सूरत सैय्याहक साथ न थे। परवरदिगार तेरा शुक्र कि तूने दुनिया के मामूली आमाले-ख़ैर के बदले इन नेमतों से हमें निवाज़ा है "ले मिस्ले हाज़ा फ़ल-याऽमलिल-आ़मेलून" (सूरए साफ़ात आयत ६१) यानी उन नेमतों के लिए चाहिये कि आदमी कोशिश करे (ताकि उस रोज़ हसरत व निदामत न हो)।

★★★★★

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ३

दूसरी मन्ज़िल की तरफ़ कूच

अब घंटी बजने लगी और उसमें से -'हैय्याअ़ला ोरिल अ़मल" की आवाज़ आती थी। यह इस बात का ़लान था कि अगली मज़िल की तरफ़ कूच करो। हमने ापने अपने तोबड़े और पुश्ताज़ उठाए। सामान कमर र लादा और रवाना हो गए यहाँ तक कि हम सब एक ोराहे पर पहुँच गए। दूर से हमें सैय्याहक लोग नज़र ाए जो सियाह धुएं के मानिन्द हमारी तरफ़ बढ़े चले ाते थे।

मैंने वहाँ के ड्यूटी आफ़ीसर से दरयाफ़्त किया के आया कोई ऐसी तरकीब है कि यह सैय्याहक साहेबान ुमारे साथ न आ सकें? उसने कहा यह तुम्हारे नुफ़ूसे ैवानिया मसलन ज़ुल्म, तकब्बुर, शहवत व ग़ज़ब वग़ैरह की सूरतें हैं। इन लोगों से जुदा होना मुम्किन नहीं है ेकिन यहलोग मुख़तलिफ़ क़िस्म के हैं मसलन ख़ालिस सियाह काले भूत या सियाह व सफ़ेद या बिल्कुल सफ़ेद और इसी लिहाज़ से इनके नाम भी मुख़तलिफ़ हैं मसलन अम्मारा

https://downloadshiabooks.com/

लव्वामा, मुत्मइन्ना वग़ैरह। अगर तुम में से किसी क साथी सफ़ेद व मुत्मइन्ना है तो वह उसके लिए बहुत मुफ़ीद और कारामद है। बल्कि कभी कभी तो मलाएक से भी बेहतर क़रार पाता है और मुत्मइन्ना दरअस्ल एक नेमत है जो ख़ुदावन्द आलम ने तुम्हें दी थी। मगर तुमने इल नेमत का कुफ़रान किया कि इस मुत्मइन्ना क तुमने अपनी बदआमालयों से निक़मत और बदबख़्ती की सूरत दे दी। तुमने जहाने-माद्दी में जो कुछ किया है और जो कुछ बोया है यहाँ उसे काटना पड़ेगा। उस खेती का काश्त करना तुम्हारे अख़तियार में था। गन्दुम अज़ गन्दुम ब-रवैद जौज जौ यानी तुम चने की फ़स्ल काश्त कर के गन्दुम हासिल नहीं कर सकते। "आ अन्तुम तज़र-औ-नहू नहनल ज़ारेऊन" (सूरए वाक़ेआ आयत ६४) यानी दाना को तुम उगाते हो या हम, कि हम ख़ुदावन्द आलम हैं।

इतनी ही गुफ़्तगू हुई थी कि सैय्याहक साहेबान आ पहुँचे और हममें से हर एक अपने अपने सैय्याहक को साथ लिये मन्ज़िल की तरफ़ रवाना हुआ। मगर अब हम बाहम मुताफ़र्रिक़ हो गये। हम में से कुछ तो अपने अपने सैय्याहकों के साथ पीछे रह गए। बाज़ लोग मेरे पहलू ब पहलू चल रहे थे और मैं अपने सैय्याहक के साथ

https://downloadshiabooks.com/

चला जाता था कि एक पहाड़ी के दामन में पहुँच गये। रास्ता बहुत तंग और संगलाख़ था और पहाडी के एक तरफ़ एक बहुत बड़ा गहरा दर्रा था मगर यह दर्रा बड़ा ना-हमवार था। मेरे जी में आया कि मैं पहाड़ी के ऊपर जाऊँ क्योंकि नीचे जो दर्रा था उस की हवा बड़ी गर्म थी और दम घुटा जाता था। नागाह मेरा सैय्याहक मेरे पास आया और कहने लगा कि आप का ख़याल निहायत मुनासिब है। इस लिये कि दर्रा की तह में न सिर्फ़ यह कि हब्स है बल्कि वहाँ तरह तरह के दरिन्दे और मूज़ी जानवर भी हैं जो आपको नुक़सान पहुँचा सकते हैं और दूसरे यह कि पहाड़ की चोटी पर चूंकि आप बुलन्दी पर होंगे इसलिये अतराफ़ का नज़्ज़ारा भी करते चलिये गा। चूंकि दुनिया में भी मैं उमूमन लोगों पर अपनी बरतरी जताने के लिये बुलन्द आवाज से बोलता था और वैसे भी बुलन्द मरातिब हासिल करने का शौक़ था इस लिये मैं पहाड़ की बुलन्दी की तरफ़ चला। मगर ऊपर को जाने के लिए रास्ता नहीं था इस लिये मैं पहाड़ के पहलू में चल रहा था। मगर रास्ता ना-हमवार था।

दो तीन दफ़ा तो ऐसा हुआ कि मेरे पैर के नीचे की मिट्टी सरक गई। एक आध मर्तबा मैंने ठोकर खाई और क़रीब था कि मैं दर्रे में गिर पड़ूं। इस लिये मैंने

https://downloadshiabooks.com/

नज़दीक की ख़ारदार झाड़ियाँ पकड़ लीं और दर्रे
गिरने से महफ़ूज़ रहा। मगर मेरे हाथ और पहलू औ
पैर ज़ख़्मी होगये। एक दफ़ा जो गिरा तो मेरी नाक ए
पत्थर से टकरा गई, नाक की हड्डी टूट गई और ख़ू
जारी हो गया[1]। मैंने अपने सैय्याहक से कहा कि पहा
के ऊपर जाने में तो बड़ी तकालीफ़ बरदाश्त करना प
रही हैं इससे तो अगर दर्रा में से होकर गुज़रता तो
बेहतर था। वह मलऊन मेरी हालत देखकर हंसा और
बोला अख़ी "जो शख़्स दुनिया में तकब्बुर करता है अल्लाह
उसकी कमर तोड़ देता है और जो बुलन्दी चाहता है
अल्लाह उसको और उसके दिमाग की बड़ाई को ख़ाक में
मिला देता है। तअज्जुब है तुमने यह सब बातें पढ़ीं मगर
उनपर अमल करने की तौफ़ीक़ न हुई "ज़ुक़ इन्नका
अन्तल अ़ज़ीज़ुल-करीम[2]" (सूरए दख़ान आयत २५)
"यानी अब तुम अपने किये की सज़ा भुगतो"। वह

१—इस से उस तरफ़ इशारा है कि जो शख़्स दुनिया में तकब्बुर करता है अल्लाह आख़ेरत में उसके गुरूर को ख़ाक में मिला देता है और उसके मोंक़द्दर में पत्थर रह जाते हैं।

२—तफ़सीर अली बिन इब्राहीम में है कि अबूजेहल हमेशा कहता था कि "अना अज़ीज़ुल करीम" क़यामत में उससे और उस जैसे दूसरों से ख़िताब होगा कि ऐ अज़ीज़ुल-करीम अज़ाब का मज़ा चक्खो।

https://downloadshiabooks.com/

कहता रहा और मैं चलता रहा। राह में जितनी भी सख़्तियाँ आईं मैंने बरदाश्त कीं और आख़िर उस पहाड़ के दामन से कि जहाँ वाज़े रास्ता न था मैं बाद ख़राबिये-बसियार बाहर आ गया। दरआँ हालांकि मेरा सारा बदन ज़ख़मी था और तबियत मुकद्दर थी।

अब जो पलट कर देखा तो वह लोग जो मेरे पीछे और साथ साथ चल रहे थे इनके पैर फिसले और वह दर्रे की गहराइयों में गिर गये। इनके रोने और फ़रयाद की आवाज़ें आ रही थीं और उनके सैय्याहक उनके पास बैठे हुए क़हक़हे लगा रहे थे।

क़िस्सा मुख़्तसर बड़ी मुशकिलात के बाद हम हमवार रास्ते पर आ गए। वहाँ ऐसी कोई परेशानी और सख़्ती न थी सिवाय इसके कि थकावट बहुत ज़्यादा हो गई थी और जोड़ जोड़ दुख रहा था। ज़ख़्म दर्द कर रहे थे और प्यास महसूस हो रही थी। मेरे सैय्याहक ने दो एक मर्तबा कोशिश की कि वह मुझे बहला फुसला कर फिर किसी जाल में फाँस दे मगर मैंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। हालांकि बाज़ औक़ात उसकी बात मानने को दिल तो चाहता था मगर मैंने जी कड़ा कर लिया था। जब उसने देखा कि मैं उसकी बात मानता ही नहीं हूँ तो

https://downloadshiabooks.com/

वह पीछे रह गया। चलते चलते मैं एक बाग़ में पहुँचा। रास्ता भी बाग़ के ऐन वस्त में से गुज़रता था। मैंने देखा कि एक हौज़ है उसके कनारे चन्द लोग बैठे हैं और उनके पास तरह तरह के मेवा-हाए ख़ुश-रंग रक्खे हैं। जब उन्होंने मुझे देखा तो मेरे एहतराम में खड़े हो गए और मुझसे फ़रमाइश की कि मैं बैठूं और उनके साथ कुछ मेवा खाऊँ। मैंने दरयाफ़्त किया कि आप कौन साहेबान हैं और यह फल कैसे हैं ? जवाब मिला कि जब हमें मौत आइ तो हम रोज़ेदार थे और यह अफ़्तारी है जो ख़ुदाए रहमान व रहीम ने हमें भेजी है। हम लमझते हैं कि यह अफ़्तारी तुम भी खा सकते हो माना कि तुम दुनिया से आते वक़्त रोज़े दार नहीं थे मगर तुमने रोज़े दारों का रोज़ा आफ़्तार कराया है इस लिये तुम्हारे लिये इस अफ़्तारी का खाना रवा और जाएज़ है। पस मैं बैठ गया और उन लोगों के साथ थोड़ा सा खाया। प्यास भी बुझ गई और दर्द व रंज भी जाता रहा।

अब उन हज़रात ने मुझ से मेरे सफ़र के हालात दरयाफ़्त किये। मैंने कहा कि अल्हम्दो लिल्लाह जो गुज़रना था गुज़र गया और तमाम रंज और कुलफ़तें आप हज़रात को देखकर दूर हो गईं। मगर मेरे साथी पीछे रह गए हैं और उनके सैय्याहकों ने उन्हें पकड़ रखा है। जाल में

https://downloadshiabooks.com/

ाँसने की कोशिश तो मेरे लिए बहुत की थी मगर मैं
सकी बातों में नहीं आया और अब वह मुझ से पीछे
ह गया है। मुझे उम्मीद है कि अब वह मुझ तक नहीं
हुँच सकेगा।

वह हँसे और बोले कि ऐसा नहीं है। इस बाग़
ं तो वह सिर्फ़ अपना मक्रो-फ़रेब व झूट ही का हरबा
म पर इस्तेमाल कर सकते हैं। मगर हम आगे रवाना
ोंगे तो वह किसी मोख़तसिर रास्ते से ज़रूर हम तक
हुँच जाएंगे और हमें तबाह करने के लिये हम से
ाक़ाएदा जंग करेंगे। मैंने कहा हमारे पास अस्लहा तो
ै नहीं फिर हम उनसे कैसे जीतें गे ? उन्हों ने कहा कि
गर दुनिया में नफ़्स को मार कर अस्लहा तैय्यार कर
लिया होगा तो इन मनाज़िल में वह अस्लहा हमारे पास
इन्शा-अल्लाह पहुँच जाएगा जैसा कि क़ुरआने-मजीद की
सूरए अन्फ़ाल आयत नं० ६० में इरशादे रब्बुलइज़्ज़त है
कि "व अइद्दो लहुम्माइस्त-तातुम मिन क़ूवतिव व मिर-
रिबातिल-ख़ैले तुरहेबूना बेही अदूव्वुल्लाहे व अदूव्वकुम"
यानी दुश्मनों के लिए जो कुछ तुम्हारे बस व इमकान में
है मसलन ताक़त, घोड़े और हथियार और अस्बाब
मोहैय्या करो ताकि इन अस्बाब की वजह से अल्लाह के
दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन ख़ौफ़ज़दा हो ज एं।

https://downloadshiabooks.com/

मैंने कहा इस आयत से मैंने हमेशा अस्त्रा
जिहाद मुहैय्या करना मुराद लिया। उन्होंने कहा वि
क़ुरआन इसके एहकामात व क़वानीन हर आलम के लि
हैं। सिर्फ़ दुनिया पर मौक़ूफ़ नहीं हो जाते और अग
ऐसा होता तो क़ुरआन नाक़िस रह जाता। क्योंकि
क़ुरआन ख़ातेमुल कुतुबे समावा है और उसे लाने वाले
ख़ातेमुल-अंम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम
हैं।

★

हिन्दी व उर्दू में छपी

मज़हबी किताबों के लिए

हमारा पता हमेशा याद रक्खें

★

हैदरी कुतुब ख़ाना

१४/१४ मिर्ज़ा अली स्ट्रीट इमामबाड़ा रोड,
बम्बई-४०००००९

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ४

तीसरी मंज़िल की तरफ़ रवानगी

हम लोग उठे और आगे बढ़े। रास्ता बड़ा अच्छा और हमवार था। दोनों तरफ़ फलदार व सरसब्ज़ दरख़्त लगे थे और रास्ते के साथ साथ ठंडे और मीठे पानी की नहर जारी थी। ख़ुशगवार ठंडी ठंडी हवा चल रही थी कि उससे दिल व दिमाग़ मोअत्तर होते जाते थे। गोया जमाले-ख़ुदावन्दी था जिसकी तजल्ली हम देख रहे थे।

इस रास्ते में कोई ख़ास तकलीफ़ नहीं हुई। पूरा रास्ता यूं गुज़रा कि सफ़र और तकाने-सफ़र का एहसास ही नहीं हुआ। अब एक मंज़िल पर पहुँच गए। यही गोया तीसरी मंज़िल थी। हम में से हर एक के लिए एक अलग महल था जिस की ईंटे सोने चांदी की थीं। हम मे अपने अपने महल में क़याम किया ।

इन मकानों में से हर एक में जो अस्बाब था वह हर हैसियत में मुकम्मल था। किसी चीज़ की कमी नहीं थी बर्तनों की ख़ूबसूरती, फ़र्शो-फ़ुरूश की आराइश, दीवारों

https://downloadshiabooks.com/

की ज़ेबाइश ऐसी थी कि आँखें ख़ीरा हो जाती थीं और अ़क़्ल हैरान थी। हमारे अतराफ़ में जो ख़िदमतगार थे वह इन्तेहाई ख़ूबसूरत, ख़ूब-सीरत, ख़ुश-एख़लाक़ व ख़ुश गुफ़्तार थे। बेहतरीन साफ़ शफ़्फ़ाफ़ लिबास पहने थे। वह इन्तेज़ाम व इन्सेराम व ख़िदमत में दौड़े-दौड़े फिरते थे। गोया सूरए दहर आयत १९-२० की तस्वीर थी। "व यतूफ़ो अ़लैहिम विल्दानुँम-मुख़ल्लदूना इज़ा-र-ऐतहुम हसिब्तहुम लो-लोअंम-मन्सूरा ० ब इज़ा-र-अयता सम्मा र-अयता नईमंव व मुल्कन कबीरा ०" यानी उनके अतराफ़ में ख़ूबसूरत ख़िदमत-गुज़ार लड़के चक्कर लगाते होंगे गोया वह बिखरे हुए मोती हैं और तुम देखोगे उनके लिए बेहिश्त की नेमतें और अ़ज़ीम मुल्क मोहय्या किया गया है।

मुझे शर्म आती थी कि मैं इन लोगों से ख़िदमत लूं। नागाह मेरी नज़र एक बड़े से आईने पर पड़ी और मैंने अपना वह मर्तबा देखा जो अल्लाह ने मुझे अपने रहम व करम से अता किया था। उस वक़्त फ़ख़्र से मेरा सर बुलन्द हो गया और मैं तकिया की टेक लगा कर बैठ गया।

अब रात हो गई और महल में रौशनी हो गई। यह रौशनी कहां से आई ग़ौर किया तो दरख़्तों की

https://downloadshiabooks.com/

शाख़ों से यह रौशनी फूट-फूट कर निकल रही थी कि हज़ारों बरक़ी शमाएं भी उसके आगे हैच थीं। इस रौशनी ने सारे बाग़ और महलों को रौशन व मुनौवर कर दिया। मेरे ज़ेहन में यह ख़याल गुज़रा कि बारे-इलाहा यह क्या माजरा है ? तूने इतने चराग़ रौशन फ़रमाये हैं ! कि किसी की आवाज़ आई "म-स-लो नूरेही क-मिश्कातिन फ़ीहा मिस्बाह ० अलमिस्बाहो फ़ी ज़ोजा-ज: ० अज़्ज़ोजा-जतो क-अन्नहा कौकबुन दुर्री-युंव-यूक़दो मिन शजारतिम-मुबा-रका - तिन ज़ैतूनतिल - ला शर्क़ी-यतिव वला ग़र्बीयतिय-यकादो ज़ैतोहा योज़ीओ वलौलम तम्सस्हो नार ० नूरन अला नूर ०" (आयत ३६ सूरए नूर)

इस आयत को सुनते ही मैं समझ गया कि यह नूर शजरए मोहम्मद ब आले मोहम्मद सल. का नूर है और इस शहर को व इस के मुसाफ़िरों की जाए-ग्हाइश को शहरे - मोहब्बत कहते हैं और वह लोग जिन की मोहब्बत अहलेबैत से इन्तेहा तक पहुँच जाती है इसमें रुकते हैं और इस शहर के रहने वाले लोग ज़िक्र मोहम्मद सल. व दुरूद व सलाम में मशग़ूल रहते हैं ! हम इस शहर में बड़े आराम में थे। दिल में अल्लाह व उसके रसूल व आले - रसूल की एहसान मन्दी के जज़्बात थे। अब जो नज़र की तो शहर के दरवाज़े पर बड़ा मोटा-

https://downloadshiabooks.com/

मोटा लिखा था "हुब्बे अ़ली ह-स-नः ला यज़र मअहू सीअः" यानी मोहब्बते अली वह नेकी है और इसका सवाब इतना है कि इसके होते हुए कोई गुनाह नुक़सान नहीं पहुँचा सकता ।१

१–यह हदीस शिया व सुन्नी दोनों के यहां है और इसका मफ़ाद यही हो सकता है कि जिसके दिल में वाक़ई मोहब्बते अली है वह गुनाह का मुरत्तकब नहीं होता । यानी मोहब्बते अली गुनाहों की सिपर बन जाती है ।

हैदरी कुतुब ख़ाना

14/15, मिरज़ा अली स्ट्रीट, इमामावाड़ा रोड़

बम्बई-400009

कुछ हिन्दी प्रकाशन

* ताजे शफ़ाअत (हदीस) १०–००
* चौदह मजालिस (,,) ४–००
* मजालिसे अब्बासिया (,,) ४–००
* शिया नमाज़ व दीनयात १–५०
* लखनऊ के मशहूर नौहे ३–००
  (हर साल के नए नौहे छपते है)
* हदीसे किसा २–००
  (अरबी व उर्दू)

गुलदस्तए (मुनाजात) ३–००

* ज़हरा का लाल (हदीस) ९–००
* दुआए नूर (अनुवाद स०) २–००
* दुआए कुमैल ३–००
* मक़बूल कहानियां ३–००
  (छ मुरादी कहानियों का मजमुआ)
* क़ुरआन शरीफ़ ७५–००
  अनुवाद सहित
* तौज़ीउल-मसाएल २५–००
  (आक़ाए अबुल क़ासिम ख़ूई)

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ५

चौथी मंज़िल और हादी से मुलाक़ात

सुबह हुई तो हम लोग अगली मंज़िल की तरफ़ ाना हो गए। रास्ता बहुत वाज़े और साफ़ था। दो या सर-सब्ज़ व शादाब दरख़्त लगे थे। नहरें जारी , फूल खिले थे और ठडी और मोअत्तर हवा चल ी थी इस रास्ते की ख़ूबी बयान करने के लिए अल्फ़ाज़ ा ज़ख़ीरा नाकाफ़ी है। यहाँ तक कि हम हुदूदे-शहर से हर निकल आए। अब महसूस हुआ कि इस शहर की बियों ने कुछ राह तक यानी हुदूदे-शहर से बाहर तक ारी मशाइयत की थी।

इसके आगे रास्ता साफ़ और वाज़े नहीं था बल्कि ारीक और संगलाख़ था यह रास्ता एक दर्रे के रमियान से होकर गुज़रता था और यह दर्रा कभी दाईं ानिब कभीं बाईं तरफ़ पेच दर पेच था और अगर हम हुत से मुसाफ़िर एक साथ न होते तो यक़ीनन हम ास्ता भूल जाते। इस लिये इस रास्ते के बाईं तरफ़ एक

https://downloadshiabooks.com/

मुक़ाम पर बहुत से रास्ते जुदा होते थे। लेहाज़ा फ़ैसला करना आसान न था कि किस रास्ते पर जाना है। हम लोग इसी तरह चले जाते थे कि नागाह बाईं तरफ़ के एक रास्ते से सैय्याहक (हमज़ाद) हमारे साथ नमूदार हो गए।

मेरी नज़र अपने वाले सैय्याहक पर पड़ी उसके देखते ही मेरा दिल रंज व ग़म से भर गया और उसको देखने की वजह से ज़रा जो नज़र चूकी तो मेरा पैर एक पत्थर से टकराया और ज़ख्मी हो गया। अब मैं बड़ी मुश्किल से लंगड़ा लंगड़ा कर रास्ता तै कर रहा था। मेरे साथ वाले मुसाफ़िर तेज़ क़दम थे इस लिए आगे निकल गए और मैं पीछे रह गया और मेरा सैय्याहक मेरी बाईं तरफ़ चलने लगा। हम एक दोराहे पर पहुँचे मैं मुताहय्यर और हैरान था कि कौन सा रास्ता अख़तियार करूँ कि सय्याहक जल्दी से मेरे क़रीब आया बोला क्या सोच रहे हो? फिर इशारा किया बाएं हाथ की तरफ़ कि इस रास्ते पर चलो। बल्कि ख़ुद वह मलाऊन चन्द क़दम उस रास्ते पर चला भी, मैं उसके साथ नहीं गया बल्कि उसके मुख़ालिफ़ सिम्त वाले रास्ते पर चल पड़ा।[1]

१—कहना यह है कि कामयाबी और कामरानी नफ़्से-शैतान के खेलाफ़ काम करने में है। (मुतरज्जिम)

https://downloadshiabooks.com/

सय्याहक ने बहुत इसरार किया मगर मैंने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया इसलिए कि पहले उसके मशविरों पर अमल कर के मैं बड़ी तकलीफ़ें उठा चुका था। मैंने दिल में कहा कि आज़मूदा आज़मूदन जेहल अस्त (आज़माए हुए को आज़माना जिहालत है)।

थोड़ी ही देर में हम उस दर्रे से बाहर निकल आये। रास्ता बिल्कुल साफ़ और वाज़े सामने आ गया। इससे आगे दूर से एक चमने-ज़ार और बाग़ के दरख़्तों की सियाही नज़र आती थी। मैं समझ गया कि यही मेरी वह चौथी मंज़िल है जहां हादी ने मिलने का वादा किया था। हादी से मिलने के शौक़ में मेरी रफ़तार में तेज़ी आ गई गोया मैं तक़रीबन दौड़ कर चल रहा था। सय्याहक भी मुझ से मायूस हो कर पीछे रह गया। १ जल्द ही मैंने देखा कि हादी शहर के दरवाज़े पर खड़ा था। जब हस्बे वादा हादी को मैंने शहर के दरवाज़े पर मौजूद पाया जो मेरा इन्तिज़ार कर रहा था तो उसे देखते ही मैंने उसे सलाम किया और दौड़ कर उससे बग़लगीर हो गया गोया मुझे नई ज़िन्दगी मिली। उसके हाथ में हाथ डाले और मैं शहर में दाख़िल हो गया।

१–जब नफ़से शैतानी की मुसलसल ख़िलाफ़ वर्ज़ी की जायेगी तो वह गुमराह करना छोड़ देगा—(मुतारज्जिम)।

https://downloadshiabooks.com/

हादी मुझे एक महल में ले गया जो दरअस्ल मेरे ही लिए बनाया गया था इसमें आराम व सुकून के सारे अस्बाब मोहय्या थे। मैंने कुछ देर आराम किया कुछ खाया पिया, सफ़र की तकान दूर हुई तो हादी ने मुझ से मेरा हाल अहवाल पूछा कि बताओ पिछली तीन मनाज़िल के सफ़र में तुम पर क्या गुज़री ?

मैंने कहा अलहम्दो-लिल्लाह, उस ख़ुदा का शुक्र है जो आलमीन का पैदा करने वाला है और बन्दों पर बावजूद गुनाहों के अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। रास्ते में जो भी गुज़रा वह सब मेरे अपने किये की सज़ा थी और अगर तुम साथ होते तो सय्याहक की यह मजाल न थी कि वह मुझे इस तरह परीशान करता। बहरहाल जो होना था वह हुआ। गुज़श्त हर चे गुज़श्त। आख़िर मैं सलाम्ती से तुम तक पहुँच गया, तुम से मिला, राह की सारी कुलफ़तें दूर हो गईं और सारे ग़म ज़ायल हो गये।

हादी ने जवाब दिया कि चलो ख़ैर मैं तुम्हारे हमराह नहीं था। इस लिये तुम उसके मक्रो-फ़रेब में आ जाते थे और तकालीफ़ उठाते थे लेकिन अब गो मैं तुम्हारे साथ हूँ मगर तुम उससे बिलकुल अमान में नहीं हो। मेरी हैसियत फ़क़त एक हुज्जत की है। मेरा काम

https://downloadshiabooks.com/

र्फ़ यह होगा कि मैं तुम्हें उसके मक्र व हीले से आगाह रता रहूँ। मगर याद रक्खो वह यानी सय्याहक अस्बाब आलाते-क़ावीयह से लैस है। वह पूरी कोशिश करेगा ; तुम्हें गुमराह कर दे और अगर अब तुम उसके कहने आकर बहके तो शायद हलाक हो जाओगे और मैं म्हारी कोई मदद न कर सकूंगा। क्योंकि मेरी हुज्जत म पर तमाम हो चुकी होगी। इन मनाज़िल में तुम्हारे वाब का सामान सिर्फ़ एक असा और एक सिपर है। गर यह कम है। आज जुमा है आज तुम अपने अयाल ख़ान्दान वालों को देख आओ शायद वह तुम्हारे लिये ोई अमले-ख़ैर करें जिससे तुम्हारा तोशये सफ़र कुच्छ ढ़ जायेगा। तुम्हें इन्हे देखे हुए भी काफ़ी दिन गुज़र ए हैं।[1]

मैंने कहा हादी तुम जानते हो कि मैं अपने पस-ान्दगान से मायूस हो चुका हूँ। क्यों कि उन की सारी क्र सिर्फ़ अपने लिये है और ज़िन्दा रह जाने वाले मरने ालों को बहुत जल्द भूल जाया करते हैं। मैं पहले जब या था तो मेरी मौत को एक हफ़्ता भी न गुज़रा था

1—कभी कभी रूहों की अपने मोताअल्लेक़ीन के पास आने की इजाज़त मिलती है।

https://downloadshiabooks.com/

मगर वह लोग जो कुच्छ कर रहे थे अपने लिये कर रहे थे मुझे उन से अब कोई उम्मीद न रही।

हादी ने कहा कि नहीं तुम आज ज़रूर जाओ। उन्हें पैग़म्बरे अकरम का यह क़ौल नहीं याद होगा कि "उज़-कुरू अमवा-तकुम बिल-ख़ैर" यानी अपने मरने वालों का तज़केरा अच्छे अल्फ़ाज़ों में किया करो और तुम जाओ तो शायद तुम उन्हें याद आ जाओ और शायद तुम्हारे जाने की वजह से ही ख़ुदा उनके दिल में तुम्हारी याद डाल दे। अगर उनसे मायूस हो तो ख़ुदा से तो मायूस मत हो "व मन लुज लुज" जब कोई दरवाज़ा खटखटाता रहेगा तो कभी तो खुलेगा और "वला तक़नतू मिन रहमतिल्लाहे इन्ना रहमतल्लाह क़रीबुन मिनल मोहसेनीन" यानी अल्लाह की रहमत से मायूस न हो क्योंकि उसकी रहमत नेक बन्दों के बहुत क़रीब है।

बहर हाल हादी के इसरार पर मैं घर गया। देखा मेरे ज़माने में जो घर की इज़्ज़त व तौक़ीर थी वह ख़ाक में मिल चुकी है। घर का दरवाज़ा बन्द है, मोआश के अस्बाब ख़त्म हो चुके हैं। बच्चे पसमुर्दा व ख़स्ताहाल हैं कोई उनकी ख़बर नहीं लेता। मुझे रंज हुआ और बे-अख़्तियार मेरी ज़बान से निकला। ऐ अरहमुर-राहेमीन मेरे बच्चों पर और मुझ पर रहेम फ़रमा कि तू सब का

https://downloadshiabooks.com/

कारसाज़ है। मेरी इस दुआ के साथ मेरे अयाल को भी
ं याद आया और वह मेरे ज़माने की फ़ारेग़ुल-बाली को
ाद करके रोने लगे और मेरे लिए दुआए-ख़ैर करने लगे
स मैं वापस आया। मैंने देखा हादी के पास एक निहायत
सील घोड़ा खड़ा है। जिसके ज़ीन मुरस्सा है और
गाम सोने की है। मैंने हादी से दरयाफ़त किया कि
ादी ! यह घोड़ा कहाँ से आया ? हादी मुस्कुराया और
वाब दिया।

तुम्हारे अयाल ने यह घोड़ा तुम्हारे लिये भेजा है और यह अल्लाह की रहमत है जो घोड़े की सूरत में तुम्हारे सामने मौजूद है और अब इससे आगे का सफ़र पैदल तै करना बहुत मुश्किल था। घोड़ा इस सिलसिले में बेहतरीन रहेगा और तुम्हारी दुआ उन लोगों के हक़ में क़ुबूल हुई अब इसके बाद वह लोग आराम व आसाइश में रहेंगे।

तुमने देखा कि तुम्हारा एक मरतबा वहां जाना कितना मुफ़ीद रहा। तुम्हारे लिए भी और उनके लिए भी और ऐसा मालूम होता है कि लोग एक दूसरे के हक़ में दुआए-ख़ैर करने के फ़वाएद से दारे-ग़फ़लत यानी दुनिया में बे ख़बर हैं। हालांकि पैग़म्बर सल० का इरशादे गिरामी है कि अगर तीन दिन गुज़र जाएं और लोग एक

https://downloadshiabooks.com/

दूसरे की ख़ैरो-आफ़ियत दरयाफ़्तत न करें तो उनके दरमियान का रिश्तये ईमानी टूट जाता है।

पस मैं अपने हुजरे में आया, देखा कि एक निहायत हसीन व जमील हूर तख़्त पर बैठी है। उसके चेहरे से ऐसा नूर निकल रहा है जिससे पूरा हुजरा रौशन है और आँखों में चका चौंध पैदा हो रही है। हादी ने बताया इस हूर से तुम्हारा अक़्द कर दिया गया है और आज रात यह तुम्हारे लिए वादी-उस-सलाम से भेजी गई है। यह कहकर हादी कमरे से बाहर चला गया।

मैं और वह तन्हा रह गये। जब मैं उसके क़रीब गया तो वह मेरी ताज़ीम के लिए खड़ी हो गई और उस ने मेरे होथों को बोसा दिया और हम एक दूसरे के पहलू ब पहलू बैठ गये मैंने रात इसी ख़ूबसूरत व आरामदेह हुजरे में बसर की।

★★★★★

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ६

अगली मन्ज़िल की तरफ़ सफ़र हादी के हमराह

जब सुबह हो गई और हादी भी आ गया। अब हमें अगली मंज़िल की तरफ़ कूच करना था। इस लिए मैं तैयार होकर उठा अपने घोड़े पर सवार हुआ, असा हाथ में लिया सिपर को कमर पर लटकाया और हादी ने मुझे परवानये राहदारी लाकर दिया कि अगली मनाज़िल के लिये इसकी ज़रूरत थी। हम लोग रवाना हुए और हुदूदे शहर से बाहर निकल आए और ऐसी रेतेली सर-ज़मीन पर पहुँचे जो जंगल की मानिन्द कीचड़ वाली और दलदल थी इसमें ऐसे जानवर देखे जो बन्दरो से मुशाबेह थे। मगर सब आदमी थे। जिनकी शकलें बन्दरों की जैसी हो गई थीं। उनके जिस्मों पर बाल नहीं थे। वह चलते भी दो टाँगों पर थे। दुम भी नहीं थी मगर सूरत बन्दरों जैसी थी और उनकी फ़ुरूज और शर्मगाहों से खून और पीप जोश मार कर निकल रही थी। जिसमें से शदीद बदबू आती थी।

https://downloadshiabooks.com/

मैंने हादी से पूछा कि यह जानवर कैसे हैं और यह ज़मीन कौन सी है ? इस लिए कि इन जानवरों के तुफ़न से दिमाग़ फटा जाता है और दम घुटा जाता है। उसने जवाब दिया कि यह ज़मीन ज़मीने-शहवत है और यह लोग ज़िनाकार हैं। ख़बरदार रास्ता न छोड़ना। अगर तुम राह से बेराह होकर भटके तो हलाक हो जाओगे। मैंने डर के मारे अपने घोड़े की लगाम को मज़बूती से पकड़ लिया कि कहीं ऐसा न हो कि यह सीधे रास्ते से भटक जाए। रास्ता अगरचे सीधा व हमवार था मगर कीचड़ वाला और दलदली बहुत था। बाज़ औक़ात तो घोड़ा उसमें घुटनों तक धस जाता था।

मैंने सोचा कि अच्छा हुआ कि इस रास्ते में यह घोड़ा मेरे पास मौजूद था। ख़ुदा मेरे अयाल पर रहम करे कि उन्होंने यह मेरे लिये भेजा है। सच है जिसने शादी की और निकाह किया उसने अपना निस्फ़ दीन महफ़ूज़ कर लिया।

अब हमने देखा कि बाज़ लोगों को जो जानवरों से मुशाबेह थे उनको सूली (दार) पर कीलों के ज़रिये लटका रक्खा है और उनके आज़ाए तनासुल को आहनी मेखों से दार के तख़्त से ठोंक दिया है और इसके अलावा

https://downloadshiabooks.com/

बाज़ को सलाख़ों से मार रहे हैं। वह लोग कुत्तों की तरह आवाज़ें निकाल रहे हैं। इसके जवाब में मारने वाले कहते हैं "इख़-स-ऊ फ़ीहा वला तोकल्लेमून" यानी दूर हो जाओ और बको मत (इख़सू अरबी में कुत्ते को भगाने के लिये कहते हैं) गोया सूरए सज्दा की आयात १२ का मज़मून सामने था कि "वलौ तराऽ इज़िल मुज्रेमूना नाकेसू रोऊसेहिम इन्दा रब्बेहिम० रब्बना अब्सरना व समेना फ़र-जेना नामल सालेहन इन्ना मूक़ेनून०" यानी गोया तू देखेगा कि गुनाहगार अपने परवरदिगार के सामने सर झुकाए खड़े हैं और कहते हैं कि बारे-इलाहा हमने देखा और सुना। अब तू हमें वापस पल्टा दे तो हम नेक अमल करेंगे और अब हमें यक़ीन हासिल हो गया है। यह सब एहकाम शरा के ख़िलाफ़ शहवत की तस्कीन करने वाले थे।

नागहां सय्याहक हज़रात भी आन मौजूद हुए बाज़ लोगों पर उन्होंने बाक़ायदा हमला कर दिया, बाज़ घोड़ों को भड़काने लगे, बाज़ ने रास्ते के अतराफ़ की ज़मीन की तरफ़ बुलाया। मैंने देखा कि रास्ते के अतराफ़ की ज़मीन इतनी ख़ुश्क थी कि उस पर घोड़ों के सुमों के निशान भी न पड़ते थे मगर मैं हादी की हिदायत के बमोजिब अपने घोड़े की लगाम मज़बूत पकड़े सीधे रास्ते पर चला जा रहा था न मुझे दलदल की परवाह थी न

https://downloadshiabooks.com/

कीचड़ की। बस यही फ़िक्र थी कि सड़क से हट न जाऊँ (क्योंकि राह-रास्त पर चलने ही में नजात है)।

मैंने देखा कि जो लोग अपने सय्याहकों के कहने में आकर रास्ते से हट कर दाएं बाएं चलने लगे वह चन्द क़दम बाद ही रेत, मिट्टी और कीचड़ में गर्दन तक धँस गए। इनका निकलना बिल्कुल मुहाल मालूम होता था और जो निकले भी तो कीचड़ में लथड़े हुए सियाह कि उनका पहचानना मुश्किल था बल्कि कुच्छ ही देर में इस कीचड़ की हिद्दत से उनके गोश्त गल कर गिरने लगे। ऐसा मालूम होता था कि यह दरअस्ल कीचड़ नहीं है बल्कि पिघली हुई तारकोल है।

इस मंज़र को देखकर मैं सहम गया और अब मैंने अपने घोड़े की लगाम को और मज़बूती और एहतियात से थाम लिया और अपने आप से कहता था कि उस ख़ुदा का शुक्र है जिसने मुझे गुनाह से महफ़ूज़ रक्खा "अल्हम्दो लिल्लाहिल्लज़ी लम मिनल-सवादिल-महज़म" मैंने सुना कि दूसरे मुसाफ़िर भी बुलन्द आवाज़ से शुक्रे ख़ुदा अदा कर रहे थे।

मैंने हादी से कहा कि पैग़म्बरे-अकरम का इरशाद है कि अगर किसी को मुसीबत में गिफ़्तार देखो तो आहिस्ता से शुक्रे ख़ुदा करो कि तुम इस मुसीबत में

https://downloadshiabooks.com/

:फ़्तार नहीं हो। मगर आहिस्ता इस लिये कि साहेबे-ोबत को रंज न हो।

हादी ने कहा यह हुक्म दुनिया के लिए था क्यों अल्लाह को एक मानने वाले वहां ज़ाहिर-बज़ाहिर हतरम थे। मगर यहाँ बरज़खी जज़ा व सज़ा का मला है। इस लिये ब-आवाज़ बुलन्द शुक्र करो ताकि लोग अज़ाब में मुब्तेला हैं उनकी मुसीबत और रंज इज़ाफ़ा हो और यह इस लिये कि जो बात उन पर फ़ी थी ज़ाहिर हो जाए और तारीकी रौशनी से, धापन बीनाई से और ख़्वाब बेदारी से बदल जाए और लूम हो जाये कि दुनिया जुल्मत-कदा और पसमुरदा। "व इन्नद-दारल-आख़ेरता ल-हेयल-ह-य-वानो" (रए अनकबूत आयत ६४) बल्कि अस्ल में आख़ेरत ज़िन्दगी ही हक़ है। इस लिए मैंने शुक्रे-ख़ुदा के :फ़ाज़ बुलन्द आबाज़ से दोहराए।

पस मैंने देखा कि उन लोगों की मुश्किलात और ाब में चन्द दर चन्द इज़ाफ़ा हो गया। ज़मीन में ीद ज़लज़ला की कैफ़ियत पैदा हो गई। हवायें तूफ़ानी र तारीक हो गईं और आसमान से ओलों की तरह ार बरसने लगे। रास्ते के दोनों तरफ़ क़यामत का

https://downloadshiabooks.com/

समां था और अज़ाब में गिरफ़तार लोग इस पिघले हुए तारकोल जैसी दलदल में धंसे जाते थे। और अगर कोशिश कर के निकल आते तो आसमान से उन पर पत्थर गिरता और फिर कील की मानिन्द ज़मीन में धंस जाते थे। मैं यह शदीद अज़ाब देखकर लरज़ने लगा था।

मैंने हादी से दरयाफ़्त किया कि यह ज़मीन कौन सी है और यह लोग जो मुब्तिलाए अज़ाब हैं कौन हैं ? इन का अज़ाब बड़ा सख़्त है। इस लिये कि आसमान से पत्थरों की शदीद तरीन बारिश हो रही है। हादी जो मेरे सर के ऊपर हवा में परवाज़ करता चला जाता था, ख़ुद उसका रंग ख़ौफ़ और दहशत से ज़र्द था और उसके अपने आज़ा में कमज़ोरी आ गई थी कि परवाज़ में दिक़्क़त महसूस करता था उसने बतलाया यह ज़मीन भी ज़मीने शहवत ही है और यह अज़ाब में मुब्तेला लोग वह हैं जो लवाता के आदी थे (यानी मर्दों का लड़कों से बदफ़ेली करना)। अब तुम अपनी रफ़तार को तेज़ कर दो ताकि इस सर ज़मीन से हम जल्द अज़ जल्द बाहर निकल जाएं। इस लिए कि अगर यहा ज़्यादा तवक़्क़ुफ़ किया तो मुम्किन है कि हम भी अज़ाब में गिरफ़तार हो जाएँ।

https://downloadshiabooks.com/

"अर्रजी बेफ़ेले क़ौमिन अविद्दख़ेलो फ़ीहिम वलम ख़रुज फ़-होवा मितहुम" यानी वह शख़्स जो किसी क़ौम फ़ेल पर राज़ी हो या उनमें पहुँचे और वहां से निकल जाए तो उनका हश्र भी उन्हीं के साथ होगा।

मैंने हादी से कहा कि क्या इस ज़मीन की कीचड़ ौर दलदल दरअस्ल इन्सान की शहवत का माद्दा है जो स सूरत में यहां मौजूद है। मेरे घोड़े के लिये तेज़ चलना हुत मुश्किल है।

हादी ने कहा हां मगर तुम्हारे लिये इस के बग़ैर ारएकार नहीं, तुम्हें तेज़ चलना पड़ेगा। तुम ऐसा करो सपर से अपने सर को ढांप लो ताकि कोई पत्थर तुम्हारे र पर न पड़े और घोड़े को दो चार चाबुक रसीद करो ाकि तौफ़ीक़े-इलाही से जल्द अज़ जल्द यहाँ से निकल ाको। जैसा कि सूरए निसा की आयत ९७ में इरशाद आ है कि "अलम तकुन अर्ज़ुल्लाहे वासेअतन फ़तोहा-जेरू ीहा०" यानी क्या अल्लाह की ज़मीन वसीय न थी कि ुम अल्लाह की बन्दगी के लिये कहीं और चले जाते। ास दो फ़रसख़ चले होंगे कि इस बला रसीदा और ाफ़त ज़दा ज़मीन से हम बाहर निकल आये और शुक्रे-ुदा बजा लाये।

https://downloadshiabooks.com/

मैंने अपने हवास को मुज्तमा किया और चन्द चाबुक घोड़े को रसीद किये, पहलू पर ऐड़ लगाइ। घोड़े ने अपनी दुम को हरकत दी एक झुर झुरी सी हुई और हवा से बातें करने लगा। हादी जो तमाम रास्ते मेरे सर के ऐन ऊपर मिस्ल शहबाज़ के परवाज़ करता रहा था कुच्छ पीछे रह गया और मैं उसी तेज़ रफ़्तारी के साथ उड़ने लगा "साबेक़ू इलाऽ मग़फ़े-रतिम मिर्रब्बेकुम व जन्नतिन अ़रज़ोहा क-अर्ज़िस्समाऽए वल-अर्ज़ो" (आयत २१ सूरए हदीद) यानी अल्लाह की मग़फ़ेरत की सब्क़त करो कि उसकी जन्नत की वस्अत आस्मान व ज़मीन है।

इतने में सय्याहक मलऊन मेरे पास पहुँच गया। उसे देखकर मेरा घोड़ा भड़क गया और मैं ज़मीन पर गिर गया। हड्डी पसली एक हो गई और घोड़े के भी अगले दोनों पैर रास्ते से हट कर कनारों से बाहर निकल गए औरें दोनों अगले पैर दलदल में धंस गये। बड़ी मुश्किल से घोड़े ने अपने को बाहर निकाला कि इतने में हादी पहुँच गया। उसने मेरे जिस्म पर हाथ फेरा कि टूटी हुई हड्डियां जुड़ गईं और उसने मुझे घोड़े पर दोबारा सवार करके मज़बूती से गोया बाँध दिया और खुद घोड़े की लगाम पकड़ कर आगे आगे चला। चन्द

https://downloadshiabooks.com/

क़दम चले थे कि हमने यह मैदाने-बला भी पार कर लिया।

मैंने हादी से शिकायतन कहा कि हादी तुम जब भी मुझ से दूर हो जाते हो यह कम्बख़्त सय्याहक न मालूम कहाँ से आन मरता है और यह मुझे तकलीफ़ें पहुँचाता है। हादी बोला जब भी वह क़रीब आता है मैं दूर चला जाता हूँ और यह भी ख़ुद तुम्हारे आमाल ही की वजह से है।

अब आगे एक और ज़मीने-शहवत थी। हम इस में दाखिल हुए। इस ज़मीन के लोग शिकम परस्त थे। दाईं तरफ़ के लोग चेहरों से गधे, गाय और दूसरे चौपाये मालूम होते थे। मालूम हुआ कि यह लोग अपनी शिकम पुरी ज़रूर करते थे मगर सिर्फ़ माले हलाल खाते थे इस लिये इन पर कुछ ऐसा ज़्यादा अज़ाब नहीं था। मगर जो लोग बाईं तरफ़ थे उन की सूरतें सुअरों, रीछों की मानिन्द थीं और उनके पेट बहुत बड़े बड़े थे। मालूम हुआ कि यह लोग खाने में हलाल व हराम की तमीज़ नहीं करते थे। यह अपना और पराया सब माल बिला तकल्लुफ़ हड़प कर जाते थे। इन के आज़ा पतेले थे। सूरत मस्ख़ होने के अलावा इन पर अज़ाब भी हो रहा था। गोया पेट में आग भरी हुई है "ऊलाएका कल-अनआमे बल हुम

https://downloadshiabooks.com/

अज़ल्ला सबीला" यानी यह लोग चौपायों के मानिन्द हैं बल्कि इससे भी वदतर (सूरए आराफ़ आयत १७९) हम तेज़ी से इस ज़मीन से गुज़रते हुए एक और मंज़िल पर पहुँच गये जहाँ एक मुसाफ़िर ख़ाना था। यह मुसाफ़िर ख़ाना एक चटियल मैदान में वाक़े था। यहां कोई छीज पैदा नहीं होती थी बल्कि यहां आलमे-आख़ेरत के मुसाफ़िर कुछ आराम करते हैं और वह ज़ादो तोशा जो उन की पुश्त पर लदा होता है उसमें से कुछ इस्तेमाल करते हैं। मेरे आज़ा चूंकि घोड़े से गिरने की वजह से दर्द बहुत कर रहे थे इस लिये हादी ने मेरे तोबड़े में से जो मेरी पुश्त पर लदा हुआ था। एक डिबिया निकाली उसमें से कुछ दवाई निकाली और मेरे जिस्म पर मालिश की मेरा दर्द ख़त्म हो गया और मैं तन्दुरुस्त हो गया। मैंने हादी से पूछा कि यह दवाई कौन सी थी। उसने कहा यह बातिनी हम्द थी। जब भी तुम्हें दुनिया में कोई नेमत मुयस्सर आती तो तुम बे-अख़तियार मुनअ़मे-हक़ीक़ी का शुक्र करते थे और हम्द बजा लाते थे। क्योंकि अल्लाह की हम्द ज़्यादा करना दुनिया में हर दर्द की दवा है सिवाय मर्ज़ मौत के। इस लिये आख़ेरत में भी हम्द का यह ख़ासा है कि जो हर नेमत को मुनअगे हक़ीक़ी की जानिब से अता समझ कर उसकी हम्द करता रहा

https://downloadshiabooks.com/

तो यह हम्द आख़ेरत की भी हर बला की दवा है। जैसा कि हदीसे क़ुदसी में इरशादे रब्बुल इज़्ज़त है 'ह-म-दनी अ़ब्दी वालम अन्ना नेमल्लती लहू मिन इन्दी व अन्नल-बलाया अल्लती इन्दा फ़ातो अ़न्ह फ़बे-तत्वली अश्हदो-कुम फ़-इन्नी ओज़ीफ़ो लहू इला-नेमद्-दुनिया ने-मल-आख़े-रते वद-फ़ओ अन्हो बलाया अल-आख़ेरते कमा रफ़ातो अन्हो बला-यद्-दुनिया" यानी इस मेरे बन्दे ने मेरी हम्द व शुक्र यह समझ कर किया कि इसे मिलने वाली नेमतें मेरी तरफ़ से हैं और यह भी अक़ीदा रखा कि जो बलाएं इससे दफ़ा हुईं वह भी मेरे ही लुत्फ़ो-करम की वजह से। तो ऐ मेरे फ़रिश्तो तुम गवाह रहो कि मैं इसकी दुनिया और आख़ेरत की नेमतों में इज़ाफ़ा करूँगा और आख़ेरत में इस से बलाएँ इसी तरह दूर करूँगा जिस तरह दुनिया में बलाएं दूर की थीं।

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ७

दारुल-सुरूर की मंज़िल

यहां रात बसर हुई और सुबह को सफ़र फिर शुरू हुआ। हादी ने सफ़र से शुरू होने के क़ब्ल ही मुझे बतला दिया था कि आज शाम तक हम लोग ज़मीने शहवत से बाहर निकल जाएंगे। लेकिन अबके अज़ाब और आफ़तें ज़बान के गुनाहों से मुताआल्लिक़ होंगी। अव्वल रोज़ की बलाएं शर्मगाहों की शहवत की वजह से थीं। मगर आज वाली बलाए कल की बलाओं से बहर-हाल कम न होंगी। यह ज़मीन बे-आबो-गयाह होगी। बेहतर यह होगा कि घोड़े पर पानी का ज़खीरा लाद कर चलो और ख़ुद-हत्तल इम्कान पैदल चलो और सिपर उठाओ कि आज इस सिपर के साथ होने की अहमियत ज़्यादा है।

मैंने कहा कि यह सिपर या ढाल कैसी है? जवाब दिया यह तुम्हारे रोज़ा रखने की वजह से है। तुम अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिये भूके प्यासे रहे और इस रोजे ने तुम्हारी शर्मगाहों बल्कि पूरे वजूद को अल्लाह की ना-

https://downloadshiabooks.com/

फ़रमानी से बाज रक्खा "फ़-इन्ना सूमा जन्नतुन मिनन्नारें क़मा अन्नहू व जा-अ" यानी रोज़ा आतशे जहन्नम की सिपर है।

हम रवाना हुए ही थे कि सय्याहक फिर आ गया मैंने कहा मलऊन मुझ से दूर हो जा। उसने कहा तुम खुद ही मुझसे परे क्यों नहीं हट जाते। पस मैं उससे चन्द क़दम दूर हट गया और हादी के साथ सफ़र जारी रक्खा मगर सय्याहक भी मेरे बाईं हाथ की तरफ़ साथ साथ चलता रहा।

इस रास्ते के दोनों तरफ़ मुख़्तलिफ़ सूरतों के जानवर नज़र आते रहे। यानी कुत्ते, भेड़िये, लोमड़ियां, बन्दर, चूहे, सांप, बिच्छू, भिड़ें, (बर्रे) वग़ैरह वग़ैरह। किसी का रंग ज़र्द, किसी का नीला। हर तरह का जानवर हर रंग का जानवर। यह जानवर आपस में लड़ रहे थे, एक दूसरे पर हमला कर रहे थे। एक दूसरे को फाड़े खाते थे। मौक़ा मिलते ही एक दूसरे को काट खाता था। इन में से बाज के कान और मुँह से आग निकलती थी कहीं कहीं सराब सा नज़र आता। यह जानवर दौड़ कर वहाँ जाते और जब पानी न मिलता तो मायूस होकर वापस पलट आते। इन में कुछ जानवर मुरदार खा रहे

https://downloadshiabooks.com/

थे। कुछ जानवर गहरे कुंओं में गिर पड़ते थे और उनके गिरते ही कुंए से धुंवां, चिंगारियाँ और शोले निकलने लगते थे।

मैंने हादी से दरयाफ़्त किया कि यह कुंए किन लोगों के लिए हैं ? उसने जवाब दिया यह उन लोगों के लिये हैं जो दूसरे मोमनीन का मज़ाक़ उड़ाते थे, ज़बान से इशारों से, मुंह टेढ़ा करके, आँख व अबरू के इशारों से। इनका ठिकाना यही है, जैसा कि इरशाद हुआ "वैलुन ले-कुल्ले होमा-ज़तिन लोमा-ज़ते" यानी वाए हो उन पर जो ऐबजू और ताना देते हैं और यह मुरदार खाने वाले वह हैं जो लोगों की ग़ीबत करते थे और जिन के कानों से आग निकल रही है यह ग़ीबत सुनने वाले हैं और यह जो एक दूसरे को भेड़ियों, कुत्तों और बिल्लियों की तरह फाड़े खाते हैं यह वह हैं जो एक दूसरे को गालियाँ बकते थे, तोहमत लगाते और नासज़ा कहते थे और यह ज़र्द चेहरे वाले और दो ज़बान वाले जो हैं यह ऐब-जू झूटे और चुग़लखौर हैं।

इस ज़मीन की हवा सख़्त गर्म थी। मैं बार बार हादी से पानी मांगता था वह कभी मुझे थोड़ा बहुत पानी देता था और कहता था यह रास्ता जिसमें पानी नहीं मिले गा बहुत ज़्यादा है और तुम्हारे पास पानी का

https://downloadshiabooks.com/

ज़ख़ीरा कम है। हमें यह पानी आख़िर तक चलाना है। मैंने कहा कि तुमने पानी कम क्यों लिया ? जवाब दिया कि तुम्हारी ज़रफ़ियत और इस्तेदाद इससे ज़्यादा की न थी। मैंने सवाल किया कि इस्तेदाद कम क्यों रह गई ? बोला तुम ने इसे ख़ुद कम रक्खा है, इस लिये कि तुम ने आवे-तक़वा कम रक्खा, इसे ख़ुश्क कर लिया। फिर ज़्यादा इस्तेदाद कहाँ से आती ? जितना तक़वा ज़्यादा होता उतना ही इस राह में पानी ज़्यादा मिलता। अब कुछ नहीं हो सकता। क्या तुमने सूरए मूमेनून की पहली आयत नहीं पढ़ी "क़द अफ़लहल-मूमेनूना हुम फ़ी सलाते-हिम ख़ाशेऊना वल्लज़ीना हुम अ़निल-लग़वे मोरेज़ून" यानी उन मोमेनीन ने फ़लाह पाई जो अपनी नमाज़ों में ख़ुशू करते हैं और लग़वियात से बचते हैं और तुमने न लग़वियात से परहेज़ किया न नमाज़ में ख़ुशू बरता। ज़ाहिर है जैसा करोगे वैसा भरोगे। "फ़-मइं-यामल मिसक़ाला ज़र्रतिन ख़ै-रइं-यरह व मइं-यामल मिसक़ाला ज़र्रतिन शरंइं-यरह" यानी जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देखेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह भी उसे देखेगा।

हादी ने मेरी तवज्जोह एक तरफ़ दिलाई कि देखो उस तरफ़ तुम्हें क्या नज़र आता है ? मैंने देखा

https://downloadshiabooks.com/

कि दूर उफ़क़ पर सियाही व सफ़ेदी और आग के शोले बाहम मरबूत और गुड-मुड हैं अब जो ग़ौर किया तो एक सरसब्ज़ व शादाब बाग़ था हरे भरे दरख़्त थे जिन में मेवे लदे हुए थे यकायक उनमें आग लग गई है और वह जल रहे हैं। मैंने घबरा कर हादी से पूछा यह क्या माजरा है ? हादी ने मुझे बताया कि हय बाग़ मोमनीन के ज़िक्र व अज़कार व तस्बीह व तहलील से बनाये गये थे मगर जब उन्होंने अपनी ज़बान से झूट बोला, ग़ीबत की और दूसरे मोमनीन पर तोहमत लगाई तो यह बाग़ जल कर भस्म[1] हो गये। यानी गुनाहों ने नेकियों को ख़त्म कर दिया। अगर उनका ईमान मुस्तक़िर हीता तो वह लोग इन बाग़ों को अहमियत देते और इन्हें जलाने के लिये ऐसी आग न भेजते। जब यह लोग यहाँ पहुँचें गे और उनपर हक़ीक़ते हाल मुन्कशिफ़ होगी तो अफ़सोस करेंगे मगर अब अफ़सोस करना फ़ायदा न देगा। इसी लये ईमान और आमाले-ख़ैर के नतीजे से जो दर-अस्ल दुनिया में हमारी निगाहों से पोशीदा होता है। अंम्बिया

१—सरकारे दोआलम ने एक मरतबा सहाबा से फ़रमाया कि जो एक मरतबा ला-इलाहा-इल्लल्लाह कहता है अल्लाह उसके लिये बेहिश्त में एक दरख्त उगाता है। सहाबा ने अर्ज़ की कि इस तरह तो हमारे बे-शुमार दरख्त हो जायेंगे। फ़रमाया हां, ब-शर्ते कि तुम गुनाह करके उन्हें तबाह न कर डालो।

https://downloadshiabooks.com/

लैहिस्सलाम ने मुसलसल ख़बरदार किया और ख़ुदावन्द
ालम ने भी क़ुरआने-करीम के शुरू में ही तक़वा को
मान बिलग़ैब से मशरूत फ़रमाया है " होदंल-लिल
त्क़ी-नल्लज़ीना यूमेनूना बिल-ग़ैब व युक़ीमूनस्सलाता"
ानी यह क़ुरआन उन साहेबाने तक़वा के लिये हिदायत
जो ग़ैब पर ईमान लाये और उन्होंने नमाज़ को क़ायम
या ।

जब हम उन जले हुए बाग़ात के नज़दीक पहुँचे तो
खा कि यकायक ठंडी ठंडी हवा चली उस हवा ने ख़ाक-
तर को उड़ा दिया और थोड़ी देर में वह बाग़ पहले
ी तरह सर-सब्ज़ व शादाब और मेवा दार हो गये ।
हरें जारी हो गईं और ताएराने-ख़ुश एल्हान चहचहाने
गे । यानी मोमनीन ने फिर नेकी की या तौबा की वह
ाग़ फिर उग आए । मैंने सोचा यह माजरा जो मैंने
हां देखा अगर दुनिया वालों को मालूम हो जाये तो वह
ाग़ों के जल जाने की वजह से हसरत व यास से मर
ायें गे ।

हादी ने बतलाया कि यह वादी-उस्सलाम की
ाव्वल सरज़मीन है कि यहाँ अमन व सलामती है । अब
म नये असा और सिपर को घोड़े की ज़ीन से लटका

https://downloadshiabooks.com/

दो और घोड़े को बाग़ में चरने के लिए छोड़ दो ताकि जब हम दोबारा सफ़र शुरू करें यह कुछ खा पी लेगा।

हादी ने कहा हमारे पास दस दिन की मोहलत है ताकि तुम्हारी क़ूवत व इस्तेदाद में इज़ाफ़ा हो जाये। क्योंकि इससे आगे के रास्ते में चोर डाकू और रहज़न बहुत हैं और इनसे मुक़ाब्ला करने की क़ूवत तुम में बहुत कम है लिहाज़ा इस जुमा को तुम दुनिया का चकर लगा आओ। मुम्किन है तुम्हारे पसमान्दगान तुम्हारे लिये कोई तोहफ़ा भेजें जो तुम्हें आइन्दा सफ़र में काम आये।

मैंने हादी से कहा कि तुम तो कहते थे कि हम वादी-उस्सलाम की ज़मीन में आ गये हैं। क्या वादी-उस-सलाम में भी चोर और डाकू होते हैं? क्या तुम मुझे मोअत्तल करना चाहते हो। अफ़सोस तुम मेरे बावफ़ा दोस्त थे और अब बेवफ़ा होते जा रहे हो। यह कहकर मैं रोने लगा।

हादी बोला मेरे दोस्त मेरी वफ़ादारी तुम्हारी दूर-अन्देशी पर मुन्हसिर है। तुम्हें नहीं मालूम है कि आइन्दा का रास्ता कितना तंग व सख़्त है। हमारा वादी उस्सलाम का रास्ता वादी-ए-बरहूत के क़रीब से गुज़रे गा जहाँ तरह तरह के अ़ज़ाब हैं। अगर ज़रा भी लर्ज़िश

https://downloadshiabooks.com/

हुई तो फिसल कर वादी-ए-बरहूत में गिर पड़ो गे। वहाँ मैं भी तुम्हारी मदद को न आ सकूंगा। इस रास्ते में तुम्हारा सत्याहक तुम्हें मुसलसल बहकाने की कोशिश करे गा। अगर तुम पर दस दिन का क़याम दुश्वार है तो फिर वादी-ए-बरहूत में दो महीने पड़े रहो गे।

मैंने कहा क्या तुम्हारा मतलब यह है कि क़यामत के पुले-सिरात का मरहला मुझे इस वक़्त दरपेश है। जब कि ऐसा नहीं है। उसने जवाब दिया कि पहले ही कह चुका हूँ कि यहां जो कुछ हो रहा है वह क़यामत के अहवाल का अक्स है। इस रास्ते को भी तुम पुले-सिरात का अक्स समझो। इन मनाज़िल से बग़ैर गुज़रे चारएकार नहीं है। अक़लमन्दी का तक़ाज़ा यह है कि वाक़ेआत से पेश आने के पहले उसका इलाज मुहैय्या कर लो।

क़िस्सा मुख़तसर मैं शबे-जुमा में घर गया। देखा मेरी बीवी ने दूसरी शादी कर ली है और शौहर के ख़ुश करने में मशग़ूल है। औलाद तमाम मुताफ़र्रिक़ हो चुकी है। उनकी भी शादियां हो चुकी हैं और अब वह अपने अपने काम में मशग़ूल हैं। बल्कि तमाम कारोबार में औलाद मुताफ़र्रिक़ हो चुकी हैं। मैं एक दरख़्त के दो शाख़े प बैठा रहा और मायूस हो कर अपनी गली की

https://downloadshiabooks.com/

एक दीवार पर जा बैठा। मैंने लोगों को दुनिया के मामलात में ग़र्क़ पाया। काश यह लोग आख़ेरत की फ़िक्र करते। यह लोग सब अपनी आल औलाद की फ़िक्र में मस्त थे। उस वक़्त मुझे रसूल अल्लाह की एक हदीस याद आई कि "हेलाकुर-रोजेले फ़ी आख़ेरिज़्ज़माने बैयदे ज़ौजतिन व इनलम तकुन ज़ौजतुन फ़बेयदे अकरुबा-एही व औलादेही" यानी आख़िर ज़माने के लोग अपनी ज़ौजा की वजह से हलाक होंगे और ज़ौजा न होगी तो औलाद व अइज़्ज़ा कीं वजह से हलाक हो जायेंगे।

मैं इसी फ़िक्र में ग़र्क़ था कि मेरी नज़र अपने घर के बालाख़ाने पर पड़ी। मैंने देखा कि मेरा लड़का अपनी बीवी के साथ और लड़की अपने शौहर के हमराह बैठे हैं और मेवाजात खा रहे हैं। उनके बच्चे भी उनके पास हैं आपस में बातें भी करते जाते हैं।

एक ने कहा यह फलों के दरख़्त मरहूम हाज क़ोचानी ने लगाए थे। अब वह ज़ेरे ख़ाक पहुँचे और हम उनके फल खा रहे हैं। दूसरा बोला कि बदबख्त वह तो इस वक़्त बेहिश्त में फल और मेवे खा रहे होंगे। एक बोला तुम ठीक कहते हो। मरहूम मुझसे बड़ी मोहब्बत करते थे। मुझे पैसे देते थे और मुझे खुश कर देते थे। खुदा उन पर रहमत नाज़िल करे। दूसरा बोला जब भी

https://downloadshiabooks.com/

मुझे ज़रूरत होती वह मुझे काग़ज़ व किताब व क़लम बाज़ार से लाकर दिया करते थे। तीसरे ने कहा वह ख़ुद मुल्ला थे और हमें भी पढ़ा कर मुल्ला बना देना चाहते थे। वह सब मुझे इसी तरह अच्छे अल्फ़ाज़ से याद कर कर रहे थे कि उन्होने आपस में कहा आज शबे-जुमा है आओ उनके लिए क़ुरआन पढ़ें। एक ने सूरए दहेर की और दूसरे ने सूरए दख़ान की तिलावत की। मैं सुनता रहा, यहां तक कि उन्होंने इन सूरतों का सवाब मेरी रूह के लिये ईसाल किया। मैं यह देखकर कितना ख़ुश और मसरूर हुआ कि बयान से बाहर है। मैंने उनके हक़ में दुआए ख़ैर की और अपनी मंज़िल की तरफ़ परवाज़ कर गया।

★★★★★

बेहतरीन मजालिस का मजमुआ

ज़हरा का लाल

छप कर तैयार है

हैदरी कुतुब ख़ाना

14/15, मिरज़ा अली स्ट्रीट, इमामाबाड़ा रोड़

बम्बई-400 009

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ८

आख़री मंज़िल वादी-उस्सलाम

जब मैं वापस लौट कर आया तो देखा कि सफ़र के लिये घोड़ा तैय्यार है और हादी एक ख़ोरजीन को घोड़े पर लाद रहा है। मैंने पूछा यह ख़ोरजीन कहां से आई। हादी ने बतलाया कि एक फ़रिश्ता दे कर गया है और उस ने कहा है कि इस ख़ोरजीन में तोहफ़ा है। जनाब ज़हरा सलवातुल्लाह व सलामुल्लाह अलैहा की तरफ़ से कि यह असर सूरए दख़ान का है सूरए दख़ान उन्ही मोअज़्ज़मा से मन्सूब है और दूसरी ख़ोरजीन में तोहफ़ा है मौलाए काएनात अली इब्न अबी तालिब की तरफ़ से कि यह सूरए दहर की तिलावत का असर है। क्योंकि सूरए दहर उन जनाब से मन्सूब है। उन दोनों ने यह हदाया तुम्हारे लिए भेजे हैं और उन्होंने सिफ़ारिश की है कि हम वादी-ए-बरहूत से ज़रा दूर वाली राह अख़तियार करें ताकि वहाँ की बादे सुमूम तुम तक न पहुँचे।

मैंने हादी से कहा क्या यह मुम्किन है कि हम यह ख़ोरजीन खोल कर देखें कि इसमें हमारे लिये क्या तहाएफ़ हैं। उसने कहा अभी इसकी ज़रूरत नहीं है।

https://downloadshiabooks.com/

जब इनकी ज़रूरत होगी यह ख़ुद खुल जायेंगी। कहो तो अब चलें ? मैंने कहा ज़हे सआदत ज़हे नसीब चुनानचे मैं घोड़े पर सवार होकर हादी के हमराह आगे चल दिया।

चलते चलते हम ज़मीने हिर्स पर पहुँचे। वहाँ मैंने एक क़ौम को देखा जो कुत्तों की शक्ल में मस्ख़ थी। इन कुत्तों में बाज़ मोटे ताज़े थे बाज़ कमज़ोर और सहरा में जगह जगह लाशें पड़ी थीं। कुत्ते इन लाशों को खाने आते तो आपस में लड़ पड़ते थे और एक दूसरे को फाड़ खाते थे। यहाँ तक कि दोनों लड़ने वाले गिरोह बेदम होकर गिर जाते और लाश वैसी की वैसी ही पड़ी रह जाती थी। फिर और कुत्तों के गिरोह के गिरोह आते थे। इनमें से ताक़तवर कुत्ते कमज़ोर कुत्तों को मार भगाते मगर ख़ुद भी लाश में से न खा पाते। क्योंकि फिर इन में आपस में लड़ाई हो जाती। पूरे मैदान में जंग व जदल का समां था। गोया "इनद्दुनिया जे-यफ़तुन व तालेबोहा किलाब" यानी दुनिया मुर्दा लाश के मानिन्द है और तालिबाने दुनिया कुत्तों की तरह हैं।

कुछ कुत्ते ऐसे भी थे जो लाशों से गोश्त तो खा रहे थे मगर उनके सरों में से धुवां और दुबर (पुश्त) में से आग निकलती थी उन की यह हालत देखकर कुत्ते उनके

https://downloadshiabooks.com/

नज़दीक न आते थे। हादी ने बतलाया कि यह लोग रिशवत ख़ोर और माले यतीम खाने वाले हैं "इन्नल्लज़ीना य कोलूना अमवातुल-यतामा या कोलूना फ़ी ब-तूनेहिम नारन" यानी जो लोग माले यतीम खाते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं।१

१–बिल्कुल इन कैफ़ियात से मिलती हुई हुज़ूर अकरम की मशहूर व मारूफ़ हदीस है जो किताब रूह रेहान में किताब काफ़ी से ब हवाला जनाब शहज़ादा अब्दुल अज़ीम इब्न अब्दुल्लह तहरीर है जिसका सिलसिला हज़रत अमीर अलै० तक पहुंचता है। आप फ़रमाते हैं कि मैं फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के साथ पैग़म्बरे अकरम सल० की ख़िदमत में वारिद हुआ तो मैंने देखा कि पैग़म्बरे अकरम शिद्दत से गिरया फ़रमा रहे हैं। मैंने अर्ज़ किया मेरे माँ बाप आप पर क़ुरबान, आप क्यों गिरया फ़रमा रहे हैं। आपने फ़रमाया ऐ अली मैं जिस शब को मेराज पर गया था तो मैंने अपनी उम्मत की चन्द औरतों को देखा जिनपर अज़ाब किया जा रहा था। इस वक्त मैं उनकी फ़िक्र में पड़ गया और रोने लगा। ऐ अली मैंने एक औरत को देखा जो अपने पिस्तानों के बल लटकी हुई थी। दूसरी औरत को देखा जो अपने बदन का गोश्त खा रही थी और आग उसके नीचे भड़क रही थी। तीसरी औरत को देखा कि अपनी ज़बान के बल लटकी हुई थी और जहन्नम का गर्म पानी उसके हलक़ में डाला जा रहा था। चौथी औरत को देखा कि उसके पैर उसके हाथों से बन्धे हुए थे और सांप बिच्छू उसपर मुसल्लत थे। एक और पांचवीं औरत को देखा जो अन्धी गूंगी और बहरी थी और एक आग के ताबूत (बक्स) में बन्द थी और उसका जिस्म कोढ़ और सफ़ेद दाग़ से टुकड़े टुकड़े हो रहा था। एक और

(शेष पृष्ठ १०३ पर)

https://downloadshiabooks.com/

मैंने कहा हादी तै तो यह पाया था कि हम वादिये बरहूत से दूर दूर चलेंगे। क्या हम रास्ता भूल गये। उसने कहा नहीं यह वादिये बरहूत का परतो है। बरहूत की बादे सुमूम हम तक नहीं पहुँचेगी।

(पृष्ठ १०२ का शेषांश,

औरत को देखा जो अपने पैरों के बल एक आग के तनूर में लटकी हुई थी। एक और औरत को देखा जिसका आगे और पीछे का गोश्त आग की कैंचियों से जुदा किया जा रहा था। मैंने एक औरत और देखी जिसका सर सुअर के सर की तरह था और उसका बदन गधे के बदन की तरह और उसपर हज़ारों क़िस्म के अज़ाब नाज़िल हो रहे थे। मैंने एक औरत को देखा जिसकी शक्ल कुत्ते जैसी थी। आग उसके पीछे से दाखिल हो रही थी और मुंह से बाहर निकल रही थी और मलाएका आग के गुर्ज से उसको मार रहे थे। जनाब फ़ातिमा ज़हरा सला० ने अर्ज़ की कि ऐ पदरे बुज़ुर्गवार फ़रमाइये कि इन औरतों के दुनिया में आमाल क्या थे। आपने फ़रमाया ऐ नूरे-दीदा वह जो कि पिस्तान के बल लटकी हुई थी वह और थी जो अपने शौहर को बिस्तर पर आने से मना करती थीं और जो पैरों के बल लटकी थी वह औरत थी जो बग़ैर शौहर की इजाज़त के घर से बाहर जाया करती थी और जो अपने बदन का गोश्त खा रही थी वह अपने बदन को बनाव सिंघार करके लोगों को दिखाया करती थी और वह जिसके हाथ पैरों से बन्धे थे, सांप बिच्छू उस पर मुसल्लत थे वह नजासत के मुताल्लिक़ परवाह न करती थी और ग़ुस्ल जनाबत व हैज़ व निफ़ास की पाबन्द न थी। बल्कि इसी तरह अपनी नमाज़ों की अहानत करती थी और वह जो कि अन्धी गूंगी बहरी थी ज़िना से बच्चे पैदा करके उनकी निस्बत अपने शौहर से देती

(शेष पृष्ठ १०४ पर)

https://downloadshiabooks.com/

हम ज़मीने हिर्स से ख़ारिज हो कर ज़मीने हसद में दाख़िल हो गए। हसद के सहरा में बहुत सारे कारख़ाने थे। उनमें काले काले आदमी सय्याहक क़िस्म के काम कर रहे थे। मशीनों के चलने से कान पड़ी आवाज़ सुनाई न देती थी। गर्दो-ग़ुबार ने आसमान को ढाँप लिया था। मशीनों के चलने की आवाज़ से ज़मीन हिल रही थी और कारख़ाने की मशीनें जिनके इंजन और पहिये और पंख व पर लोहे से ज़्यादा संगीन थीं। बड़ी बड़ी मोटरों की तरह सहरा में दौड़ती फिरती थीं। उनमें से एक देव

(पृष्ठ १०३ का शेषांश)

थी और वह औरत जिसका गोश्त क़ैंचियों से काटा जाता था वह ना-महरमों से बिल्कुल पर्दा न करती थी और वह औरत जिसका बदन आग से जलाया जा रहा था और वह अपनी आंतें खा रही थी वह औरत थी जो दूसरी औरतों को ज़िना के लिए मर्दों के पास ले जाती थी। वह औरत जिसका सर सुअर के सर की तरह और बदन गधे की तरह था वह चुग़ल खोर और झूठी थी और वह औरत जिसकी शक्ल कुत्ते की तरह थी और आग उसके पीछे से दाख़िल होकर मुंह से निकलती थी वह हसद करने वाली थी और उसके बाद आपने फ़रमाया कि अफ़सोस उस औरत पर जो अपने शौहर को ग़ज़बनाक करे और ख़ुशा-बहाल उस औरत का जो अपने शौहर को ख़ुशहाल करे।

हुज़ूरे अकरम सल० ने यह तमाम कैफ़यात सफ़र मेराज में आलमे बर्ज़ख़ में मुलाहेज़ा फ़रयाईं। वरना क़यामत तो अभी बहुत दूर है और वहां की जज़ा व सज़ा तो दाएमी है। •

https://downloadshiabooks.com/

हैकल मशीन रास्ते के बिल्कुल क़रीब आकर रुक गई और मेरा सय्याहक भी काले धुवें की तरह उड़ता हुआ आन मौजूद हुआ। मैंने पलट कर देखा तो हादी का दूर तक पता न था। सय्याहक मुझ से बोला कि ज़रा इस कारख़ाने का तमाशा तो देखो। तुमने दुनिया में ऐसा कारख़ाना न देखा होगा।

मेरा दिल तो बहुत चाहा कि मैं भी ज़रा इस मशीन का तमाशा देखूं मगर राय चूंकि सय्याहक की थी और मैं उस कम्बख़्त की वजह से बहुत तकालीफ़ उठा चुका था मैंने उसकी बात पर कान नहीं धरा। घोड़े को महमेज़ किया और ज़बान पर जारी हुआ "क़ुल-आऊज़ो बे रब्बिल फ़लक़ मिन-शर्रे-मा-ख़लक़" यह सूरा मैंने आख़िर तक पढ़ा। सय्याहक बोला कि बेचारा दुनिया में पढ़ता रहा। चाहिए था कि इस पर अमल भी करता मगर अब क्या फ़ायदा।

मेरे ऊपर ख़ौफ़ तारी हो गया और सय्याहक उस मशीन के पहलू में पहुँच कर ग़ायब हो गया। मैं समझा कि मरदूद चला गया। और सोचने लगा कि यह हादी कहां चला गया। मैं इसी ख़याल में गुम था कि कम्बख़्त सय्याहक एक मोहीब डरावनी सूरत जानवर की शक्ल में फिर आया। उसे देखकर घोड़ा भड़का और राह से बे

https://downloadshiabooks.com/

राह हो गया और मशीन के क़रीब ही गिर गया। मैं भी गिरा और मेरे आज़ा में हिस बाक़ी न रही। अब मैं उठ भी नहीं सकता था। दूर के कारख़ाने मेरे नज़दीक पहुँच गये। इनमें से शोले निकल रहे थे और मेरी तरफ़ आ रहे थे। यह कारख़ाने मुझे निगल जाना चाहते थे। वह सय्याहक ख़बीस मुझ पर क़हक़हे लगा रहा था, मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा था और कहता था कि और कहो "मिन शर्रे हासेदिन इज़ा हसद" वह कहता था कि ऐ बदबख़्त हासिद किसी आलिम ने हसद से भी कभी नजात पाई है। तू जो चन्द मनाज़िल मेरे पंजे से निकल गया मेरा जिगर तूने ख़ून कर दिया। अब मैं देखता हूँ तू यहां से कैसे निकलेगा उसने मुझे जकड़ लिया।[1]

उसके तमस्ख़ुर उड़ाने पर मेरे ख़ून में जोश पैदा हुआ हालांकि मैं कमज़ोर था मगर मैं उससे लड़ पड़ा। लेकिन वह क़वी था इस लिये कम्बख़्त ग़ालिब आने लगा जब मैंने देखा कि उस पर ग़ल्बा पाना मुश्किल होता जा रहा है तो बे-अख़्तियार मेरी ज़बान से निकला या अली मदद, या अली मदद। यह कहना था कि वह सारी मशीनें मेरे क़रीब आ चुकी थीं और मेरा काम तमाम

१—उल्मा में हसद ज्यादा होता है।

https://downloadshiabooks.com/

किया ही चाहती थीं एकदम फ़रार कर गईं और इस फ़रार के दौरान इन में ऐसी धक्कम-पेल हुई कि वह आपस में टकरा गईं और टुकड़े-टुकड़े हो गईं। सय्याहक भी जो भागना चाहता था वह एक देव-हैकल मशीन के नीचे दब गया। उसकी हड्डी पस्ली एक हो गई। मैंने कहा ख़बीस मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा था अब तू ख़ुद इस क़ाबिल है कि तेरा मज़ाक़ उड़ाया जाय। तेरा अंजाम ठीक हुआ तू इसी क़ाबिल था। चाह कुन रा चाह दर-पेश। सय्याहक से यह मेरा आख़री मारका था।

मैं कोशिश कर के किसी न किसी तरह मेन रोड पर आ गया कि यही सिराते मुस्तक़ीम और दुरुस्त रास्ता था। वह तो सय्याहक ने घोड़ा भड़का कर मुझे राह से बे राह कर दिया था। सड़क पर आकर मैं बेदम हो कर पड़ गया। उठने की ताक़त थी न चलने की सकत। फ़ेज़ा की गर्मी, बदबू और धुएं की वजह से मेरा बुरा हाल था। जोड़ जोड़ दुखता था और मुझे शदीद प्यास लगी हुई थी। इतने में मैंने देखा कि हादी मेरी तरफ़ दौड़ता हुआ आ रहा है। उसने आते ही वह खोरजीन खोली जिसमें हज़रत अली अलै० का भेजा हुआ तोहफ़ा बन्द था उसमें से उसने एक साफ़ शफ़्फ़ाफ़ बिल्लौर की बोतल निकाली। बिल्लौर की बोतल से

https://downloadshiabooks.com/

ऐसा नूर साते था कि सारा जंगल रौशन हो गया। इस बोतल में निहायत साफ़ ठण्डा और मीठा पानी था। वह पानी हादी ने मुझे पिलाया, उसके पीने से प्यास भी जाती रही और जिस्म की शिकस्तगी भी दूर हो गई। मेरी तवानाई लौट आई और मेरा बातिन साफ़ हो गया गोया "इन्नल अब्रारा यशरेबूना मिन कासिन काना मिज़ाजोहा काफ़ूरा" की तफ़्सीर सामने आ गई। यानी नेक लोगों को वह मशरूब पीने को दी जायेगी जिसमें काफ़ूर की आमेज़िश होगी।

हमने देखा कि बेचारा घोड़ा इस हंगामा दारोगीर की ताब न ला सका और मर गया। अब घोड़ा तो था नहीं चारो नाचार मैंने अपना पुश्तारा अपनी कमर पर लादा, ख़ोरजीन हादी ने पकड़ी और आगे रवाना हुए। यह सहरा अफ़रीक़ा के सहराए आज़म की तरह बड़ा था और कारख़ानों के धुएं की वजह से तारीक और मुताअफ़्फ़न हो गया था। मैंने यह बात नोट की कि इन मशीनों में से आग के बने हुए आदमी निकल कर गिर रहे थे। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह सिगार बनाने वाली मशीन में से सिगार निकलते हैं।

हादी ने बतलाया कि वह हासिद लोग जो

https://downloadshiabooks.com/

मोमनीन से हसद रखते हैं और इस हसद का इज़हार ज़बान व हाथ से करते हैं इन मशीनों और कारख़ानों में इनका अंजाम बहुत ख़राब होता है और फ़ेशार की वजह से उनके बातिन की आतशे-हसद उनके चेहरों की राह से बाहर निकलती रहती है। क्यों कि हसद ब-मंज़िलये आग है और हसद ईमान को इस तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है "अल-हसादो या कोलुल ईमाना कमा ता कुलो नारुल-हतब" अब चूंकि रास्ते में अंधेरा बहुत था इस लिये हादी मेरे आगे चल रहा था और मैं उसके पीछे पीछे। मैंने हादी से कहा शायद हम रास्ता भूल गये क्योंकि मौला अली ने जो मेरे बारे में सिफ़ारिश की थी उसके लिहाज़ से तो मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचना ही नहीं चाहिये थी। उसने कहा हम रास्ता नहीं भटके। अस्ल में ऐसा कोई भी आदमी नहीं है जिसके दिल में थोड़ा बहुत हसद न हो। कोई कम हासिद होता है कोई ज़्यादा और अगर तुम्हारे बारे में हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की सिफ़ारिश न होती तो तुम्हारा हाल भी उन हासिदों से मुख़तलिफ़ न होता। इन गिरफ़्तारानें बला में से भी बेशतर लोग (सज़ा भुगतने के बाद) जल्द याब देर ख़ुलासी पा जायेंगे और अहले रहमत से हो जायेंगे।

https://downloadshiabooks.com/

चूंकि हवा गर्म थी, ताफ़्फ़ुन बहुत था और मेरी पुश्त पर जो वज़न लदा हुआ था वह भी परेशान कर रहा था इस लिये हम तेज़ तेज़ क़दमों से चले जा रहे थे ताकि इस ज़मीने पुर बला से जल्द बाहर निकल आयें। दूसरे मुझे यह भी ख़ौफ़ था कि अगर बदबख़्त सय्याहक हलाक न हुआ होगा तो वह फिर कहीं से आन टपकेगा।

मेरे जिस्म से बदबूदार पसीना निकल कर लिबास के ऊपर तक आ गया था। पिन्डलियां थकन की वजह से दर्द कर रही थीं। बड़ी मुश्किल से हम लोग इस ज़मीन से बाहर निकले। वहाँ से निकलना था कि लतीफ़ और ठण्डी ठण्डी हवा के झोंके आने लगे। ज़मीन से चश्मे उबलने लगे। पहाड़ों और दर्रों पर सरसब्ज़ व शादाब दरख़्त थे। हम एक चश्मे के किनारे कुच्छ सुस्ताने के लिए बैठ गए ताकि थकन दूर हो जाये तो आगे बढ़ें।

मैंने हादी से कहा ऐसा मलूम होता है कि मेरा सय्याहक उन मशीनों के नीचे दब कर हलाक हो गया। उसने कहा नहीं हरगिज़ नहीं, वह फ़ना नहीं होता। हाँ इस सरज़मीन में वह तुम्हारे पास नहीं आ सकता। क्यों कि हम वादिये बरहूत से ख़ासी दूर निकल आये हैं और अब इससे आगे ग़ुरूर व तकब्बुर की वजह से गिरफ़ताराने

https://downloadshiabooks.com/

बला की सरज़मीन है। मगर चूंकि तुम्हारे अन्दर ग़ुरूर व तकब्बुर नहीं था इस लिये तुम उन गिरफ़्तारानें बलाए तकब्बूर को नहीं देख सकोगे। अब यहां से होमगे-मोक़द्देसा व आस्माए वादीउस्सलाम का फ़ास्ला ज़्यादा नहीं है।

हम जितना जितना आगे बढ़ते जा रहे थे आबो हवा ख़ुशगवार होती जा रही थी। मेवादार दरख़्तों की कसरत होती जाती थी। यहां तक कि सरसब्ज़ व शादाब दरख़्तों से ढके हुए पहाड़ नज़र आने लगे जिन में से आबशार गिर रहे थे। इस पहाड़ के दामन में सफ़ेद हरीर के बे शुमार ख़ेमे लगे थे।

हिन्दी ज़बान में दुआओं की नई किताब

ताक़ीबाते नमाज़

और

मक़बूल दुआयें

बहुत जल्द छप कर तैयार हो रही है

हैदरी कुतुब ख़ाना

14/15, मिरजा अली स्ट्रीट, इमामावाड़ा रोड़

बम्बई-400009

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ८

वादीउस्सलाम की बहारें

हादी ने कहा कि यह होमये शहर है और लोग यहां इन ख़ेमों में रहते हैं। इन ख़ेमों के सुतून और मेख़ें सोने की और तनाबें चाँदी की थीं। जब हम इन ख़ेमों के दरमियान से कुच्छ दूर तक गुज़रे तो हादी ने कहा तुम ज़रा ठहरो, मैं तुम्हारा ख़ेमा तलाश कर के आता हूँ। मैंने कहा कि इस सरज़मीन का नाम क्या है कि यहाँ की आबो-हवा ख़ुशगवार और माहौल रूह परवर है। तबीयत चाहती है कि चन्द रोज़ यहीं क़याम करूँ।

हादी ने जवाब दिया कि इस सरज़मीन का नाम वादिये ईमन व अर्ज़े मोक़द्दस है और तुम्हें यहाँ चन्द रोज़ बहर सूरत क़याम करना ही है। यह कह कर उसने मेरे ख़ोरजीन में से एक बटुआ सा निकाला। उसमें हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा का भेजा हुआ हदिया था। उसने एक ख़ेमे की तरफ़ रुख़ किया। यह ख़ेमा सामने पहाड़ के दामन में नज़र आता था और चला गया। मेरी निगाहें उसका मुसलसल तअक़्क़ुब करती रहीं।

https://downloadshiabooks.com/

मैंने देखा कि हादी जूं ही ख़ेमे के दरवाज़े पर पहुँचा जेब से एक काग़ज़ निकाला और उसकी तहरीर को ब आवाज़ बुलन्द पढ़ा। इस बुलन्द ख़्वानी के साथ ही ख़ेमे का दरवाज़ा एक दम खुला और उस में से चन्द निहायत हसीन व जमील लड़के और लड़कियां बाहर निकलीं और फिर यह लोग बे तहाशा मेरी तरफ़ दौड़े। हादी उनके पीछे दौड़ा चला आता था। उसके बाद उस ने मेरी ख़ोरजीन में से एक और बटुवा सा निकाला और मुझसे कहा कि तुम इन लोगों के साथ ख़ेमे में जाओ। कुच्छ आराम कर लो और मेरा इन्तेज़ार करो। मैं आसिमा हो कर वापस आता हूँ और मैं तुम्हारे रहने के लिये मकान का बन्दोबस्त करके आऊँगा। मैंने कहा ऐ हादी ! मैं यहां ग़रीब मुसाफ़िर हूँ, मेरा यहाँ कोई मूनिस व साथी नहीं है। मुझे छोड़ कर तुम कहां जा रहे हो ?

उसने कहा मैं तुम्हारे ही काम से जा रहा हूँ। यह तुम्हारा वतन है। तुम इस ख़ेमे में जाओ. वहां तुम तन्हा नहीं रहोगे बल्कि तुम्हारे मूनिस व हमदर्द वहाँ मौजूद होंगे। "हूरुंम-मक़सूरातुन फ़िल ख़ेयाम०—लम्यत मिस्हुन्ना इन्सुन-क़ब्लहुम वला जान्न०" (सूरए रहमान आयत २७ व २६) यानी ख़ेमों में हसीन व ख़ूबसूरत हूरें हैं जिन्हें इस से क़ब्ल किसी इन्सान या जिन ने मस नहीं किया।

https://downloadshiabooks.com/

हादी ने इतना कहा और परवाज़ कर गया और मैं उन लोगों के साथ बाइज़्ज़त व तकरीम ख़ेमे में आ गया वहां एक हूर को एक तख़्त पर बैठा हुआ पाया। वह मेरे इस्तेक़बाल के लिये उठी। कुच्छ देर में एक ग़ुलाम जो ख़ूबसूरत व शक्ल में चन्दे आफ़ताब चन्दे माहताब था। चाँदी का एक लगन और तौलिया वग़ैरा लेकर आया। उसने मेरे हाथ मुंह ऐसें पानी से धुलाए जिसमें मुश्क व गुलाब की ख़ुशबू आ रही थी। अब जो मैंने अपनी सूरत को आईने में देखा तो महसूस हुआ कि मैं हुस्न व जमाल व ज़ेबाइश में उस हूर से किसी तरह कम न था जो मेरे लिये दफ़्तरे इलाही से मख़सूस की गई थी। "अर-रिजालो क़व्वामूना अलन-निसा" यानी मर्द औरतों पर फ़रमां-रवा हैं (सूरए निसा आयत २८)"

पस हम दोनों तख़्त पर बैठ गये, मेरी निगाहों ने ख़ेमे का जायज़ा लिया तो मालूम हुआ कि ख़ेमा पांच सुतूनों पर खड़ा हुआ है। मगर दरमियानी सुतून दूसरों से बड़ा है और जवाहर निगार है। इस पर सोने की पत्तर चढ़ी हुई थी और हीरे व जवाहेरात उसमें लगे थे। मैंने उस हूर से इम्तेहानन दरयाफ़्त किया कि इस ख़ेमे में यह पाँच सुतून क्यों लगाए गये हैं ?

https://downloadshiabooks.com/

उसने जवाब दिया इस वादी के सारे ख़ेमे पाँच ही सुतून पर खड़े हैं। क्योंकि इस्लाम की बुनयाद भी पांच ही चोज़ों पर खड़ी है। यानी नमाज़, रोज़ा, ज़कात व ख़ुम्स और विलायत और यह दरमियानी सुतून विलायत का सुतून है और अस्ल में पूरा ख़ेमा इसी पर क़ायम है। यह सुतून इन चारों से बड़ा अहेम है।[1]

मैंने कहा मैं समझता था कि इनमें से हर एक सुतून आले-मोहम्मद सल० यानी पंजतन पाक अलै० के अस्माए गेरामी से मुनासेबत रखता होगा। उसने कहा कि वह हज़रात उसूल हैं और यहाँ जो कुच्छ है वह फुरूअ से मुतालिक़ है और उन हज़रात के अन्वारे

१—सफ़ीनतुल—बहार में मोहद्दिस क़ुमी ने ज़रारा बिन ऐन से और उन्होंने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम से रवायत की है कि ईमान पांच सुतनों पर क़ायम है। नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और विलायत। ज़रारा ने अर्ज़ की कि मौला इनमें अफ़ज़ल कोन सा सुतून है फ़रमाया विलायत अफ़ज़ल है क्योंकि इन आमाल की रूह विलायत ही है। आख़िर हदीस में हज़रत ने इरशाद फ़रमाया कि अगर कोई सारी उम्र तमाम रात इबादत करे और दिन को रोज़ा रखे, तमाम माल राहे खुदा में ख़ैरात करे हर साल हज बजा लाए लेकिन उसका इमाम मासूम और बरहक़ न हो कि यह आमाल इमाम मासूम की रहबरी में बजा लाता तो .खुदा वन्द आलम उसे इन आमाल का कोई अज्र व सवाब न देगा और उसको अहले-ईमान में महसूब न किया जायेगा।

https://downloadshiabooks.com/

मोक़द्दमा का अक्स है। क्योंकि रिसालत व विलायत उसूल में दाखिल है।

तमाम आलमीन का वजूद और जो कुच्छ उनमें है वह सब बाहम मुताविक़ हैं। गोया एक ही सांचे में ढले हैं और उनमें जो फ़र्क़ नज़र आता है वह सिर्फ़ ज़्यादती व कमी, अस्ल व फ़ुरूअ, नूर व शुआऐ-नूर का फ़र्क़ है और इन्सान को कोशिश करना चाहिये कि वह इन तमाम मरातिब तक रिसाई हासिल करे और तमाम अवालिम का सर्रे सिलसिला बन जाए। उसको चाहिये कि वह इन तमाम मशरूहात का मरकज़ और ख़ुलासा बन कर मज़हरे-इस्म-इलाही और ख़लीफ़तुल्लाह बन जाए।

हर चे दर आलमे कबीर बुवद

शरह अहवाल तौबा सूए मन अस्त

यह तमाम क़ूवतें और तबानाइयां फ़ितरते आदम में दूअीयत की गई थीं। मगर उसने ख़ुद को पहचाना नहीं और इसी लिये सूरए अस्र में फ़रमाया गया कि "इन्नल-इन्साना लफ़ी ख़ुसरिन" यानी अलबत्ता यानी अल्बत्ता इन्सान ख़सारे में है और चूंकि दूसरे भी उसकी

https://downloadshiabooks.com/

सिनाख़्त से आजिज़ रहे इस लिये कहा गया है कि "काना ज़लूमन जहूलन ऐ मज़लूमन व मज्हूलुल-क़द्रे"

मैंने कहा तुम ने तालीम किस मदरसे में हासिल की। तुम्हारी तक़रीर बड़ी दिल-पज़ीर है। उसने कहा मैंने तालीम मदीना शरीफ़ में पाई है और यह सर सब्ज़ व शादाब पहाड़ियां और रूह परवर आबोहवा इससे बहुत कम बल्कि पस्त मर्तबा रखती हैं।

क़ाला रसूल अल्लाह सल० (अबू फ़ातिमा) "अना मदीनतुल-इल्म व अली बाबोहा" और मैं दस्त मुबारक फ़ातिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की परवरिश किर्दा हूँ। वह फ़ातिमा जो अपने अज़ीमुल-मर-तबत बाप की तरह मदीनतुल-हिकमत व इस्मत हैं। वह ख़ुद अलीयुन बाबोहा की मिसदाक़ हैं। वह लैलतुल-मुबारक व लैलतुल-क़द्र हैं। वह हज़ारहा शहरे इल्म से बेहतर हैं वह वह हैं कि क़ुरआन गोया उन पर नाज़िल हुआ "वफ़ीहा लफ़रोक़ो कुल्ला अम्रे हकीम" की मिसदाक़ हैं। यानी तमाम उमूर इन्हीं के ज़रिये मोक़द्दर होते हैं। वही हैं जो श-जरे ज़ैतूना हैं "ला शर-क़ै-यतुन वला ग़रबी-यतुन यका-दो ज़ैतोहा यज़ीयो वलौ-लम तम-सस्हो नारुन-नूरुन अला नूर" वह फ़ातिमा ही हैं कि "तनज़्ज़लुल-मला-ए-कतो वर-रूहो फ़ीहा बे इज़्ने रब्बेहिम मिन कुल्ले अम्र"।

https://downloadshiabooks.com/

वह ख़ुद हज़रत फ़ातिमा ज़हरा का क़सीदा पढ़ती रही और मैं झूमता रहा, वह फिर बोली कि यह तोशतये हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा है जो हादी ने मुझ तक पहुँचाया है। इस में उन मोअ़ज़्ज़मा ने तह्रीर किया है कि मेरा एक बेटा तेरे पास आ रहा है उसकी ख़िदमत करो कि वही तेरा साहब व मालिक है। ऐसा मालूम होता है कि तुमने जो आमाल ख़ैर की खेती काश्त की थी मैं ही उसका समर हूँ कि हज़रत बारी ने तुम्हारी काश्त को कमाल तक पहुँचा कर मेरी सूरत में ज़ाहिर फ़रमाया। जैसा कि सूरए वाक़ेआ की आयत नं० २५-२६ में इरशाद हुआ कि "अ-फ़-र ऐतुम मा तहरोसून० अ-अन्तुम तज़-र-ऊ-नहू अम नहनुज़्ज़ारेऊन०" यानी क्या तुमने अपनी ज़राअतों पर ग़ौर किया ? क्या तुम उन्हें उगते हो या हम उगाते हैं ?

मैं ख़ुदावन्द क़ुद्दूस की हम्द बजा लाती हूँ कि वही सज़ावार तमाम हम्द का है और तमाम तारीफ़ें उसी के लिये हैं "व आख़ेरो दावाना अनिल हम्दो लिल्लाहे रब्बिल-आलामीन"।

इसके बाद तरह तरह की खाने पीने की चीज़ें मेरे सामने हाज़िर कर दी गईं। हमने खाया पिया। जो कुच्छ

https://downloadshiabooks.com/

था वह इतना लज़ीज़ कि उसके बयान के लिये अल्फ़ाज़ नहीं मिलते। वह नेमतें थीं कि न किसी आँख ने देखीं न कान ने सुनीं। खा पी कर हम तख्त पर तकिया लगा कर आराम से बैठ गये। मैंने हूर से कहा ऐसा मालूम होता है कि तुम यहाँ की बाशिन्दा नहीं हो, उसने कहा कि हां। मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे इस्तेक़बाल के लिये आई थी और यह ख़ेमा और उसका अस्बाब अपने हमराह लाई थी। बल्कि इस वादी में यह जितने ख़ेमे आपको नज़र आ रहे हैं। यह सब इस्तेक़बाल ही के लिये भेजे गये हैं। इनमें वह लोग क़याम-पज़ीर हैं जिनका इस्तेक़बाल किया गया है। यह खुदावन्द क़ुद्दूस का मेहमान खाना है और जब आप यहाँ से आगे बढ़ेंगे तो मैं भी अस्ल जगह की तरफ़ लौट जाऊँगी।

मैंने कहा दिल चाहता है कि मैं ज़रा इन बाग़ात व खयाम और पहाड़ियों और वादियों की सैर करूँ, कुच्छ तफ़रीह हो जायेगी और मुम्किन है कि यहाँ मुझे कुच्छ अपने शिनासा चेहरे अज़ीज़ रिश्तेदार भी मिल जायें।

उसने कहा यहाँ आपके लिये बिल्कुल आज़ादी है जो आपका जी चाहे कीजिये। मगर याद रक्खें कि किसी भी ख़ेमे में दाख़िल होने से क़ब्ल अहले-ख़ेमा को सलाम

https://downloadshiabooks.com/

करना और ख़ेमे में दाख़िल होने की इजाज़त तलब करना ज़रूरी है। जब मैं यहां आई तो आपकी बड़ी लड़की का ख़ेमा मैंने देखा। आपकी ख़ातिर मैं वहां गई और उससे दोस्ती कर ली। अगर आप वहाँ जाना चाहें तो चलें मैं आपके हमराह चलती हूँ। मैंने कहा ज़रूर जाऊँगा, पस हम दोनों चल दिये। बेटी के ख़ेमे के क़रीब पहुँच कर मैंने सलाम किया, उसने मेरी आवाज़ को पहचान लिया और अपने ख़दिमों के हमराह मेरे इस्तेक़बाल के लिये दौड़ी हुई ख़ैमे से बाहर आई। हम दोनों ने एक दूसरे की ज़ियारत की और शुक्र व हम्दे ख़ुदा बजा लाये कि उसने हम गुनहगारों पर अपनी बेशुमार नेमतें और रहमतें नाज़िल फ़रमाईं। उसके बाद हम ख़ेमे के अन्दर गये और जवाहरनिगार तख़्त पर तकिया लगा कर इस तरह बैठे कि एक सफ़ में वह और उस के रुफ़क़ा और मैं और मेरे हमराही उसके सामने की सफ़ में। क्योंकि पहलू ब पहलू बैठने से आमने सामने बैठना बेहतर था—मुतकईन अलैहा मुताक़ाबेलीन।

मैंने उससे पूछा कि तुम पर इस सफ़र में क्या गुज़री। उसने कहा कि मन्ज़िल अव्वल और आराज़िये-हसद में काफ़ी तकालीफ़ बरदाश्त करना पड़ीं। ऐसा मालूम होता है कि ज़्यादातर मुसाफ़िरों को इन मनाज़िल

https://downloadshiabooks.com/

में तकलीफ़ उठाना पड़ती है, किसी को कम किसी को ज़्यादा। बाज़ जगह ऐसा महसूस हुआ कि गोया वहाँ से ख़ुलासी सिर्फ़ आपकी दुआओं की बरकतों से हासिल हुई और मैंने आपके हक़ में दुआए-ख़ैर की। यहां तक कि मेरी एक और बहन को भी यही सफ़र दरपेश हुआ और आपकी उम्र का पैमाना भी लबरेज़ होने के क़रीब हुआ तो मैंने ख़ुदा के हुज़ूर में आपके लिए दुआ की कि बारे-इलाहा मेरी वाल्दा और दीगर बहन भाई लावारिस न रह जाएं।

मैंने दरयाफ़्त किया कि वह जो तुम्हारी दूसरी बहन थी जिसने आलमे-आख़ेरत का सफ़र किया उसके मुताल्लिक़ क्या ख़ैर-ख़बर है ?

उसने जवाब दिया मेरी बहन जब यहां आई तो मैंने देखा कि वह जलालत और मरतबा में मुझसे कहीं ज़्यादा है। मैंने उससे जब उसकी सरगुज़श्त मालूम की तो मालूम हुआ कि उसने वह सदमात और प्यादा-रबी के मसाएब नहीं झेले जो हमने झेले हैं। इस लिए सिर्फ़ आराज़ी (मसाम्हा) को देखा है। मगर वह मन्ज़िल भी आसानी से गुज़र गई और बाक़ी मनाज़िल तो गोया बतौर तल-अर्ज़ उसने आसानी से तै की हैं।

https://downloadshiabooks.com/

मैंने कहा कि इसकी वजह यह है कि उस का इन्तेक़ाल तक़रीबन १८ साल की उम्र में हो गया था। इस लिये उसका मामला इतना संगीन नहीं था जितना कि हमारा। तूल उम्र की वजह से हमारे पास मासियतों का अम्बार ज़्यादा हो गया था।

उसके बाद मैं बाग़ात की सैर के लिये चल दिया। जिस दरख़्त के क़रीब मैं पहुँचता था उसकी मेवों से लदी हुई शाखें मेरी तरफ़ झुकती थीं। ताज़ा और ख़ुश ज़ायक़ा मेवे कि जो खाने से कर्म नहीं होते। इन दरख़्तों से आवाज़ आती थी कि ऐ मोमिन इन फलों में से जो तुम्हें मरग़ूब हों खाओ। इन दरख़्तों से पैदा होने वाली यह आवाज़ें भी निहायत शीरीं और दिल-पाज़ीर थीं। मैंने देखा कि गोया दरख़्तों की हर शाख़ और हर कोंपल से सदाएं आ रही थीं जिन से दिल ख़ुश हो रहा था।

इसके बाद हम अपने ख़ेमे की तरफ़ लौट आए मैंने दूर से देखा कि हादी मेरे ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ा है। मैं दौड़ कर क़रीब गया। दोनों ने एक दूसरे को सलाम किया। हादी ने कहा कि कहाँ सेरो-तफ़रीह करते फिर रहे हो। चलने की तैय्यारी करो, शहर चलो। उलमा और मोमनीन को तुम्हारे आने की इत्तेला हो चुकी है। वह सब तुम से मुलाक़ात के मुन्तज़िर हैं। ★

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय १०

वादिये बरहूत

मैंने हादी से कहा कि हादी चलने को तो मैं तय्यार हूँ मगर मेरे दिल में ज़रा सा रंज है उसने कहा बन्दए खुदा तुम वादी-उस्सलाम में हो यहां रंज व अफ़सोस का मुक़ाम नहीं है। मैंने कहा कि कहते तो तुम ठीक हो मगर तुमने देखा कि हज़रत अब्बास अलै० व हज़रत अली अकबर अलै० अभी तक लिबासे-जंग में हैं। हज़रत अली असग़र के गुलूए मुबारक पर सुर्ख़ निशान अब भी मौजूद है। पस मेरा दिल चाहता है कि मैं उनके दुश्मनों से इन्तेक़ाम लेता। उसने कहा लेकिन वह मलाइना तो वादिये बरहूत में हैं और उनसे इन्तेक़ाम लेना हज़रत हुज्जत अलै० के लिये मख़सूस है और यह उन जनाब के ज़ुहूर पर मौक़ूफ़ है।

मैंने कहा ठीक है, मगर मैं चाहता हूँ कि वादिये बरहूत में जाकर उन्हें अपने हाथों से सज़ा देकर आऊँ ताकि मेरे कलेजे की आग ठण्डी हो।

वह बोला कि उनपर खुदा वन्द आलम ने सख़्त-

https://downloadshiabooks.com/

गीर फ़रिश्ते मुक़र्रर कर रक्खे हैं। क्या तुम उन्हें खुदा और उसके फ़रिश्तों से ज़्यादा सज़ा दे सकते हो ?

मैंने कानों पर हाथ रक्खे और कहा कि हरगिज़ नहीं। बेशक कौन है जो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों से ज़्यादा इन मलाऊनों को मोअज़्ज़ब कर सके। क्योंकि वह आदिले हक़ीक़ी है। जहाँ वह रहमान व रहीम है वहां वह जब्बार व क़ह-हार भी है। मगर यह मेरे दिल की तमन्ना थी।

हादी ने कहा अल्लाह तुम्हे इन ख़यालात का अज्र ज़रूर करामत फ़रमाएगा। मगर क्या तुम नहीं जानते कि मोमिन का नूर आतिशे जहन्नम को सर्द कर सकता है और क्या तुम यह बरदाश्त करोगे कि जितनी देर तुम वहां रहो उतनी देर तक वहाँ की गर्मी में कमी आ जाए और वह उतनी देर चैन और सुकून ले सकें ?

बात बिल्कुल सही थी इस लिये मैंने हादी से कहा कि अच्छा तो इतना सही कि मुझे किसी ऐसी जगह पहुँचा दिया जाये जहाँ से मैं उन्हें अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार देख सकूं ताकि मेरे दिल को कुच्छ तो तस्कीन हो ?

क़िस्सा मुख़्तसर हादी ने जब यह देखा कि मैं किसी तरह नहीं मानता और मेरे दिल का चैन और

https://downloadshiabooks.com/

कलेजे] की ठण्डक वादिये बरहूत पर नज़र करने ही पर मौकूफ़ है तो वह मेरा पैग़ाम लेकर चला गया और उसने मेरी गुज़ारेशात ख़िदमते हज़रत रिसालत पनाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम और हज़रत अली अलै० और जनाब ज़हरा में पेश कर दीं।

इन बुज़ुर्गवारों ने जब यह सुना तो मेरे लिये दुआए-ख़ैर फ़रमाई और हज़रत रिसालत म-आब ने बारगाहे अहदियत में यूं मुनाजात की :

ऐ परवरदिगार और ऐ "ख़ुदाए-लम-यज़ल वला-यज़ाल" हम अहलेबैत हमेशा तेरी रज़ा पर राज़ी रहे इस लिये कि जो तू करता है बेहतर करता है। बन्दे को मजाले दम ज़दन नहीं है मगर तेरा एक बन्दा आज तेरे मेहमान ख़ाने में वारिद हुआ है। वह मेहमान ख़ाना जहां रंज व ग़म का गुज़र नहीं है। मगर उसे हम अहलेबैत से इतनी मोहब्बत है कि वह हमारे दुश्मनों को मोअज़्ज़ब देखना चाहता है। उसके दिल को चैन नहीं आएगा जब तक कि उसकी हाजत रवा न हो। इस लिये अपने मग़फ़ूर बन्दे के दिल को सुकून की दौलत अता फ़रमाने के लिये अग तेरी मशीअत इजाज़त दे तो उसे वादियें-बरहूत का नज़ारा करने की इजाज़त हो जाये।

https://downloadshiabooks.com/

सरकारे दो आलम की यह दुआ क़ुबूल हुई और मेरे लिये हुक्म हुआ कि मेरे इस बन्दे को वादिये बरहूत का मंज़र दिखलाओ ताकि यह अपनी आँखों से देखे कि दुश्मनाने मोहम्मद व आले मोहम्मद के साथ हम क्या सुलूक क़रते हैं। मगर इसके साथ चन्द फ़रिश्तों का होना ज़रूरी हैं ताकि इस सफ़र में इसे कोई तकलीफ़ न पहुँचे और वादिये बरहूत की हवाए गर्म इसे कोई नुक़सान न पहुँचा सके।

जैसे ही यह इत्तेला मुझे मिली दिल बाग़-बाग़ हो गया और मैंने मै अपने चन्द दीगर साथियों के वादिये बरहूत के सफ़र की तैयारी शुरू कर दी। अलग़रज़ हम रवाना हुए और फ़रिश्तों का लश्कर साथ साथ था। वह हमारे दायें बायें आगे पीछे और सरों के ऊपर परवाज़ कर रहे थे।

यहाँ तक कि हम टीले के क़रीब पहुँचे। यह टीला हम से कोई सौ क़दम दूर होगा। हमने देखा कि टीले के मशरिक़ी उफ़क़ पर सियाह बादल छाया हुआ है और इस बादल में से मुख़तलिफ़ शक्लों के बर्क़ी शहाब इस तरह बरस रहे हैं गोया बादल फट पड़ा हो और तमाम बादल आग से बना हो। इस बादल के गरजने की

https://downloadshiabooks.com/

मुहीब आवाज़ हमारे कानों तक पहुँच रही थी। जैसे ही फ़रिश्तों की नज़र इस बादल पर पड़ी उनकी ज़बान से बे अख़तियार निकला, ला हौला वला क़ूवता इल्ला-बिल्लाह।

मैंने कहा क्या हुआ ?

फ़रिश्ते ने कहा कि यह वादिये बरहूत है और यह जो शहाब ब-सूरत तीर, नैज़ा, शमशीर, खंजर व अमूद गिर रहे हैं। यह दर-अस्ल इस लानत की सूरत है जो मोमनीन दुश्मनाने आले मोहम्मद पर करते हैं और यह तमाम हर्बे दुश्मनाने अहलेबैत अलैहेमुस्सलाम पर गिर रहे हैं। मगर यह अस्ल अज़ाब नहीं है। वहां की ज़मीन लोहार की भट्टी से ज़्यादा गर्म और सुर्ख़ है। आतशी साँप और बिच्छू और दरिन्दे मौजूद हैं जो इन मलाईन को मुसल-सल अज़ाब दे रहे हैं।

हम टीले के ऊपर चढ़ गये। हमने देखा कि यह शहाबी तीर जिसके जिस्म पर पड़ते थे, पार हो जाते थे और एक एक तीर, नैज़ा व खंजर व शमशीर कई जिस्मों से पार होती थी और अगर इत्तेफ़ाक़न इनमें से कोई हर्बा ज़मीन पर गिर पड़ता था तो उठकर दोबारा अपने हदफ़ पर लगता था और इसी तरह कई कई जिस्मों के पार

https://downloadshiabooks.com/

होता था और अगर कोई उनके मुक़ाबिल से फ़रार करता तो यह शहाबी हर्बे उन फ़रारियों का पीछा करते थे। यहां तक कि यह उनको जा लेते थे। गोया इनमें शऊर मौजूद था और इन लोगों को गोया कोई उठाकर-२ ज़मीन पर पटख़ देता था। जिस तरह इस्पन्द के दाने धूनी देने के लिये अंगारों पर डाले जायें और उन्हे क़रारन हो वह लोग नालओ-फ़रयाद बलन्द कर रहे थे। उनकी आवाज़ कुत्तों के भौंकने की आवाज़ से मुशाबेह थी जो हम तक पहुँच रही थी। यह मन्ज़र मेरे लिये बड़ी मुसर्रत व शाद-मानी और रौशनीये-चश्म व सुकूने-दिल का बाएस था चुनान्चे मैं इसी टीले पर थोड़ी देर के लिये बैठ गया ताकि इस मन्ज़र से ज़्यादा से ज़्यादा लुत्फ़ अन्दोज़ हो सकूं और चूंकि मैं फ़रिश्तों से सुन चुका था कि यह शहाबी हर्बे अस्ल में मोमनीन की लानत का असर हैं। इस लिये मैंने ब आवाज़ बुलन्द कहा "अल्लाहुम्मल-अन अव्वला ज़ालेमिन ज़लामा हक़्क़ा मोहम्मदिन व आले मोहम्मदिन व आख़ेरा ताबेइन लहू अला ज़ालेका अल्लाहुम्मल-अनिल-इसाबतल-लती जा-हदातल-हुसैना अलैहिस्सलामो व शायत व ता-ब-अत व ता-ब-अत अला क़त्लेही अल्लाहुम्मल अन्हुम जमीअन" और इसके बाद मैंने कहा "अल्लाहुम्मा ख़ुस्सा अन्ता अव्वला ज़ालेमिन बिल-लाने मिन्नी व अब्दाऽ-

https://downloadshiabooks.com/

वेही अव्वलन सुम्मस्सानी वस्सालेसा वरंबेआ अल्ला-हुम्मल-अन यज़ीदब्ना मुआवियता खामेसन वल-अन उबै-दल्लाहिब्ना ज़ेयादि व उ-म-रब्ना सादिन व शिमरन व आला अबी-सुफ़याना व आला ज़ियादिन व आला-मर वाना इलाऽ यौमिल क़ियामह"

यह दोनों लान मेरे साथ तमाम मोमनीन ने और तमाम फ़रिश्तों ने पढ़े और बार बार पढ़े। वस फिर तो ऐसा मालूम होता था कि हवाए-बरहूत में शहाबी हर्बों की तादाद लाखों और करोड़ों गुनी हो गई और इतना गर्दो-गुबार आतशीं उड़ा कि फ़िज़ा तीरा व तारीक़ हो गई।

अब शहाबी अज़ाब में इतनी शिद्दत पैदा हो गई कि जिस किसी दुश्मने खुदा व रसूल व आले रसूल को वह शहाब निशाना बनाता था वह मलऊन व मरदूद शहाब के लगते ही फ़िज़ा में उछल जाता और फिर फ़िज़ा में उस पर कभी शुमाल से शहाब पड़ते कभी जुनूब से कभी मशरिक़ से शहाब की मार पड़ती कभी मग़रिब से। कभी नीचे से और कभी ऊपर से और वह मलाइना मिस्ल फ़ुटबाल के इधर से उधर उछलते थे। फ़ेज़ाओं में हैरान व सर-गर्दां थे। और काफी मुद्दत बाद ज़मीन पर पहुँचते थे। यह देख कर हम और ज़्यादा लान पढ़ते थे। यहां तक हमारी आवाज़ें बैठ गईं,

https://downloadshiabooks.com/

गले-खुश्क हो गये, ज़बानें कुन्द हो गईं और वह मलाइना मिस्ल कबाब हो गये। उनके बदन छलनी हो गए, बल्कि उनके जिस्म छलनी की तरह सूराख़ सूराख़ हो गये। मर सकते थे मगर वहां मौत नहीं है बल्कि दायमी आज़ाब है और अज़ाबे शदीद। दुनिया में यह लोग ज़ुल्म करते थे मगर मज़लूम मौत की वजह से उनके ज़ुल्म से नजात पा गए। अलबत्ता आलमे-आख़ेरत में हयात चूंकि बाकी है और मौत का वजूद नहीं है इस लिये उनका अज़ाब से छुटकारा पाना मुम्किन नहीं है। ख़्वाह उनका जिस्म कबाब और छलनी की मानिन्द-सूराख़-२ हो जाए। जैसा कि फ़रमाया गया "व इन्नद्-दारिल आख़ेरता ल-हेयल-हयावाना व कुल्लमा नज़ाहत जलूदोहुम बद्लना जुलूदन ग़ैरहा" यानी आख़ेरत का अज़ाब मुस्तक़िल है। अगर एक मर्तबा खाल जल जायेगी तो उसके बाद दूसरी खाल पैदा कर दी जायेंगी और इसी तरह मुसलसल।

मगर वहां दो बातें अजब नज़र आईं वह यह कि हमने दो असख़ास को देखा जिनकी तरफ़ आग के शोले आते थे मगर बड़े-बड़े पंखे इन शोलों को उनसे दूर करते थे। जब मैंने दरयाफ़त किया तो मालूम हुआ कि उनमें से एक हातिम ताई है और दूसरा नौशेरवाने आदिल, यह दोनों अपने कुफ्र की वजह से जहन्नम में पहुँचे। मगर एक

https://downloadshiabooks.com/

की सिफ़त सख़ावत और दूसरे की सिफ़त अद्ल पंखा बन कर उस से जहन्नम के शोलों को दूर कर रही है। क्यों कि यह दोनों सिफ़ात ख़ुदा की पसन्दीदा सिफ़ात हैं और वह किसी के अज्र को ज़ाया नहीं फ़रमाता। इस लिए कि अगरचे कुफ्र की वजह से उनके लिये जहन्नम है। मगर इन दो सिफ़ात का फ़ायदा उन्हें जहन्नम में भी मिल रहा है। यानी (बरज़ख़ी जहन्नम)

दूसरे मैंने चन्द लोगों को देखा हालांकि वह जहन्नम में थे मगर उन तक जहन्नम के शोले नहीं पहुँच रहे थे और शहाब भी उनके आगे पीछे दाएं-बाएं गिर रहे थे। इनको लग नहीं रहे थे। हालांकि अज़ाबे-जहन्नम उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचा रहा था मगर दूसरों को मुअज़्ज़ब ब अज़ाब देख कर उनके औसान ख़ता हुए जा रहे थे। चेहरों का रंग उड़ा हुआ था, हैरान थे पशेमान थे। दरयाफ़त करने पर मालूम हुआ कि यह लोग मोहिब्बाने-अहलेबैत हैं और दुश्मनाने आले मोहम्मद से उन्होंने हमेशा तबर्रा किया। मगर नमाज़ रोज़ा से ग़ाफ़िल रहे। वाजेबात को तर्क किया मोहरेमात से परहेज़ न किया। दूसरों के हुक़ूक़ भी इनके ज़िम्मे हैं। आदिले-हक़ीक़ी अपनी मासियत को माफ़ कर देता है मगर दूसरों के हुक़ूक़ माफ़ नहीं फ़रमाता। इस लिये उन्हें जहन्नम में

https://downloadshiabooks.com/

भेजा गया हैं। मगर मोहब्बते-अहलेबैत आतशे-जहन्नम से बचाने के लिये ढाल का काम दे रही है। जब यह अपनी बद-आमालियों की सज़ा भुगत चुकेंगे तो चूंकि इनका अक़ीदा सही था इस लिये इसकी शिफ़ाअत कर दी जायगी और यह इन्शा-अल्लाह अज़ाब से छूट कर रहमते-इलाही के हक़दार हो जायेंगे।

बरहूत में दुश्मनाने-आले-मोहम्मद का हश्र देख कर दिल को क़रार आ गया, रूह को तस्कीन हो गई और हम दुश्मनाने-अहलेबैत के हक़ में यह कहते हुए अपनी मंज़िल की तरफ़ आ गये कि "अल्ला हुम्मा अज़िब्हुम अज़ाबन यस्तो-ग़ैसो मिन्हो अहलुन्नारे आमीना रब्बिल-आलेमीन"।

★

पंच-सूरा (रंगीन)

हिन्दी ज़बान में छप कर तय्यार हो गया है

जिसमें :—

☆ सूरए रहमान ☆ सूरए यासीन ☆ सूरए वाक़ेया

☆ सूरए मुज़म्मिल ☆ सूरए दहेर

के अलावा और भी सूरे मौजूद हैं।

हदिया 8/-

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय ११

दर्द-मन्दाना गुज़ारिश

किताब का तरजुमा ख़त्म हुआ। यह तर्जुमा ाहेबाने इल्म व दानिश के लिये नहीं किया। क्योंकि वह जरात अस्ल किताब से कमा-हक़्क़ा इस्तेफ़ादा फ़रमा सकते । तर्जुमा दर-अस्ल अवाम के लिये है और वह इस लये कि पढ़ने वाले अपने आमाल का जायज़ा लें। मौत । पहले मौक़ा है, तौबा करें अस्तग़्फ़ार करें और अपनी फ़तार को दुरुस्त कर लें। वह अरहमुर्राहिमीन है सच्चे दल से तौबा करने वालों के सारे गुनाह माफ़ फ़रमा गा। चूंकि किताब अवाम के लिये लिखी गई है इस लये तवील इल्मी बहसों को छोड़ दिया गया ताकि दल चस्पी बरक़ार रहे और पढ़ने वाला उकताहट महसूस । करे। बाज़ जगह ख़ुलासे से काम चलाया। हवाला-गात में से अक्सर को जुज़ व मतन क़रार दिया बाज़ हवालाजात को तर्क कर दिया कि आम आदमी को हवालाजात से कुच्छ ऐसी ज़्यादा दिलचस्पी नहीं होती।

बहर हाल क़ब्र की मन्ज़िल और वहां का अहवाल,

https://downloadshiabooks.com/

सरज़मीने शहवत, सरज़मीने हसद, सरज़मीने हिर्स, हम-ज़ाद यानी शैतान का वजूद और उसकी तबाह कारियां, उसका क़दम-क़दम पर वर्ग़लाना, इन तमाम मनाज़िल पर गुनाहगारों का मोअज़्ज़ब होना, ग़ुरूर व तकब्बुर का अंजाम, बाज़ गुनाहों की वजह से नेकियों का ज़ाया हो जाना वग़ैरह। यह वह मनाज़िल हैं जो बेख़बर और ग़ाफ़िल इन्सान की आँखें खोलने के लिये काफ़ी हैं और इन्सान को दावते-फ़िक्र व अमल देती हैं। इस लिये कोशिश करें कि इन मनाज़िल के लिये ज़्यादा से ज़्यादा ज़ादे-राह हमराह हो। याद रखिये मौत के बाद नामये-आमाल बन्द है। जब हमने ख़ुद कुछ नहीं किया तो पसमान्दगान से क्या उम्मीद रक्खी जा सकती है कि वह हमारे लिये कुछ कारे-ख़ैर करेंगे। ज़िन्दगी में जो कुछ आप और हम ख़ुद कर लेंगे वही अपना है बाक़ी सब उम्मीदे-मौहूम तो हो सकती है यक़ीन की मन्ज़िल नहीं है।

ख़ुदा हर एक को तौबा और आमाले ख़ैर की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाये। आमीन रब्बुल-आलमीन।

"इन्नल्लाह व मलाएकतोहू योसल्लूना अलन-नबी या अय्योहल्लज़ीना आ-मनू सल्लू अलैहे व सल्लेमू तस्लीमा"

(दुरूद)

अहक़र - अत्हर

कराची

https://downloadshiabooks.com/

अध्याय १२

तत्तिम्मा

पुरख़तर हालात से नजात के तरीक़े

अगरचे गुज़श्ता सफ़हात में दिलचस्प अन्दाज़ में मौत के बाद की मनाज़िल की निशान्देही की जा चुकी है और मुझे यक़ीन है कि पढ़ने वाले ख़ुसूसन राहे-आख़ेरत के मुसाफ़िर हर मन्ज़िल की जानिब ख़ुसूसी तवज्जोह देते हुए इस सफ़रे पुरख़तर के लिये ज़ादे-राह की जमा आवरी की अपने इम्कान भर कोशिश करेंगे। क्योंकि इस सफ़र से किसी को मफ़र नहीं। चारो-नाचार हर एक को जाना है। चाहे ब-तय्यबे ख़ातिर जाए या बादिले-न-ख़्वास्ता, बा-ख़बर हो कर जाए या बेख़बर, इल्म व तक़वा से इस सफ़र को तै करे या जिहालत व गुमराही से। मगर इस सफ़र के अख़तियार करने में हर ज़ी-हयात मजबूर है। न इसमें इलाक़े की क़ैद है न मुल्क की, न रंग की न नस्ल की, न उम्र की क़ैद है न मज़हब की। इस लिये मैंने मुनासिब समझा कि मैं आख़िर में उन रहनुमायाने मज़हब के बताये हुए चन्द तजुरबात दर्ज कर दूं जो इस सफ़र में

https://downloadshiabooks.com/

हर एक के काम आ सकें। क्योंकि यह तजुरबात सिर्फ़ वही हस्तियां बता सकती हैं जो हक़ीक़ते-सफ़र से आशना हों और इन्हे हर मंज़िल और उसकी कैफ़ियत का कमा-हक़ा इल्म हो। लिहाज़ा वह हस्तियां सबबे-तख़लीक़े कायनात हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही वसल्लम और अहलेबैत अलैहिमुस्सलाम के अलावा दूसरी नहीं हो सकतीं। क्यों कि यही ज़वाते-मोक़द्देसा ज़रयए-नजात और रासेख़ूने-फिल-इल्म हैं। जिनकी तालीमात का ख़ुलासा यह है कि अगर किसी शख़्स को कोई सफ़र दरपेश हो तो ज़रूरी है कि उस सफ़र के लिये तोशा व ज़ादे-राह इकट्ठा करे।

चुनांचे हज़रत अमीरुल-मोमनीन अ़ली अलै० हर शब सोते वक़्त बुलन्द आवाज़ से मसजिद में एलान फ़रमाते थे कि "ऐ लोगो तैय्यार हो जाओ और अपने आख़ेरत के सफ़र की तैय्यारी कर लो" ख़ुदा तुम पर रहम फ़रमाये। मौत का मुनादी निदा दे रहा है "अल्रहील-अल्रहील" कूच की तैय्यारी करो। तुम्हें सफ़र में बहुत से ख़तरनाक मुक़ामात दरपेश हैं (नहजुल्बलाग़ा) इन ख़तरनाक मुक़ामात में पहला मुक़ाम "सकराते-मौत व जाँकनी है। (सूरए क़ाफ़ आयत १९) यह बड़ा सख़्त मुक़ाम है एक तरफ़ मर्ज़ की शिद्दत, दर्द की ज़्यादती,

https://downloadshiabooks.com/

ज़बान का बन्द होना, बदन की क़ूवतों का ख़त्म हो जाना, दूसरी जानिब अहलो-अयाल का गिरया, इन सब से हमेशा के लिये रुख़सत, बच्चों की यतीमी का ग़म, अहिल्या की जुदाई, माल व मताअ का छोड़ना जिसके जमा करने में उम्र अज़ीज़ को सर्फ़ किया था। इन तमाम बातों के साथ जाँकनी की तक्लीफ़ और मौत के बाद सफ़र की सऊबतों का तसव्वुर, ग़र्ज़ यह वक़्त अजीब वक़्त होता है। शेख़ सद्दूक़ ने हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलै० से रवायत की है कि आपने फ़रमाया कि जो शख़्स यह चाहे कि अल्लाह त्रआला इस पर सकराते-मौत को आसान फ़रमाये उसे चाहिये कि अपने अज़ीज़ों के साथ सिलये-रहेम करे और अपने वालिदैन के साथ नेकी व एहसान से पेश आये। जो ऐसा करेगा उसपर मौत की दुश्वारी भी आसान होगी और दुनयावी ज़िन्दगी में फ़क़रो-फ़ाक़ा भी उस पर मुसल्लत नहीं होगा। बल्कि हमेशा ख़ुशहाल रहेगा। हुज़ूरे-अकरम ने इरशाद फ़रमाया कि सूरए यासीन, सूरए वस्सफ़्फ़ात और क़ुनूत में "ला इलाहा इल्लल्लाहुल-हलीमुल करीम" ता आख़िर पढ़ना भी सकरात के लिये मुफ़ीद है।

दूसरा मुक़ाम – अदीलये-अन्दुल्मौत

यानी मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ पलट जाना। यह इस तरह होता है कि शैतान जाँकनी

https://downloadshiabooks.com/

के वक़्त हर शख़्स के पास जाता है और उसके दिल में वसवसे पैदा करके उसे शक में मुब्तेला कर देता है। यहां तक कि ईमान को दिल से बिल्कुल निकाल लेता है और बे-ईमान करके दुनिया से रुख़सत करता है। रवायात में मौजूद है कि इस से महफ़ूज़ रहने के लिये उसूले-दीन को दलाएल से याद किया जाय ताकि मौत के वक़्त जब याद दिलाया जाये तो शक से महफ़ूज़ रह सके। इसके लिये जाँकानी के वक़्त दुआए-अदीला का पढ़ना और पढ़ाना बहुत ज़रूरी है। यह दुआ बहुत मशहूर है। मफ़ातेह-उल-जिनां और तोहफ़तुल-अवाम वग़ैरह कुतुब में मौजूद है। तस्बीह जनाबे फ़तिमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा पढ़ने की आदत डालना। अक़ीक़ की अंगूठी पहेनना, ख़ुसूसन वह अंगूठी जिस पर मोहम्मद नबी अल्लाह व अ़ली वली अल्लाह) नक़श हो। जुमा के दिन सूरए क़द अफ़लहुल मोमनून का पढ़ना, और नमाज़ सुबह व मग़रिब के बाद सात मर्तबा बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम ला हौला-वला-क़ूवता इल्ला बिल्लाहुल अ़लीयिल-अ़ज़ीम पढ़ना मुफ़ीद है। अलावा अज़ीं दूसरी मज़हबी किताबों में दीगर दुआएं और नमाज़ें भी इस बारे में तहरीर हैं, रुजू करें।

तीसरा मुक़ाम – बहशते-क़ब्र

यह मुक़ाम साबिक़ा मुक़ामात व मनाज़िल के मुक़ाबिल ज़्यादा सख़्त व हवलनाक है। किताब मन-ला

https://downloadshiabooks.com/

महफ़रल-फ़क़ीह में तहरीर है कि मय्यत को क़ब्र के क़रीब लाकर फ़ौरन क़ब्र में दाख़िल नहीं करना चाहिये। क्यों कि क़ब्र की बड़ी हवलनाक मन्ज़िल है इस लिये मय्यत को मन्ज़िल दिला कर क़ब्र में उतारा जाये ताकि वह क़ब्र में दाख़िल होने की इस्तेदाद पैदा कर सके। इस लिये कि यह हक़ीक़त है कि मौत के बाद नफ़्से-नातेक़ा का तअ़ल्लुक़ बदन से बिल्कुल मुन्क़ता नहीं होता, बल्कि बाक़ी रहता है जिसकी वजह से वह सब कुछ देखता और महसूस करता है।

हुज़ूरे सरवरे-कायनात सल० ने इरशाद फ़रमाया कि मय्यत पर क़ब्र की अव्वल शब से सख़्त वक़्त कोई दूसरा वक़्त नहीं गुज़रता। पस तुम उस शब के लिये अपने मुर्दों पर रहेम करो सदक़ा देने से और नमाज़े वहशत पढ़ने से, जिसमें पहली रकअ़त में सूरए-हम्द के बाद आयतल-कुर्सी और दूसरी रकअ़त में सूरए-हम्द के बाद दस मर्तबा सूरए इन्ना-अन्ज़ल्ना पढ़नी चाहिए और सलाम के बाद इस नमाज़ का सवाब मय्यत का नाम ले कर उसकी क़ब्र को पहुँचाना चाहिये। इसके अलावा हर रोज़ सौ मर्तबा ला-इलाहा इल्लल्लाहुल मलेकुल हक़्क़ुल-मुबीन पढ़ना या सोने से पहले सूरए यासीन की तिलावत करना भी वहशते-क़ब्र से अमान की ज़मानत है।

https://downloadshiabooks.com/

चौथा मुक़ाम – फ़िशारे-क़ब्र

यह भी बड़ा दुश्वार-गुज़ार मुक़ाम है। क्योंकि क़ब्र हर रोज़ कहती है कि मैं मुसाफ़िर का घर हूँ। मैं वहशत का मकान हूँ और मैं करम की मंज़िल हूँ। क़ब्र बाज़ के लिये बेहिश्त के बाग़ों में से एक बाग़ है और बाज़ के आग के गढ़ों में से एक गढ़ा है। हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलै० ने इरशाद फ़रमाया कि कोई मोमिन ऐसा नहीं जिसके लिये फ़िशारे-क़ब्र न हो। अलबत्ता इससे नजात के चन्द तरीक़े हैं मसलन हज़रत अमीरुल-मोमनीन अलै० ने इरशाद फ़रमाया कि जो हर जुमा को सूरए निसाऽ की तिलावत करेगा वह फ़िशार से महफ़ूज़ रहेगा (२) जो सूरए ज़ख़रफ़ की मदावमत करेगा वह क़ब्र के जानवरों और उसके फ़िशार से महफ़ूज़ रहेगा (३) हज़रत सादिक़ आले मोहम्मद ने इरशाद फ़रमाया कि जो वक़्ते ज़वाल जुमेरात से ज़वाले रोज़े-जुमा तक मरेगा उसको ख़ुदा क़ब्र के फ़िशार से पनाह में रखेगा (४) हज़रत इमाम रज़ा अलै० ने फ़रमाया कि नमाज़े-शब की आदत फ़िशारे-क़ब्र से तहफ़्फ़ुज़ का ज़रिया है (५) हुज़ूरे अकरम का इरशाद है कि सोते वक़्त अल्हाकुमुत्तकासुरो की तिलावत फ़िशार व अज़ाबे-क़ब्र से नजात का सबब है। सरज़मीन नजफ़

https://downloadshiabooks.com/

अशरफ़ में दफ़न होने वाला शख़्स भी फ़िशारे-क़ब्र व सवाल मुन्किर नकीर से महफ़ूज़ रहेगा।

पांचवाँ मुक़ाम–सवाल मुन्किर नकीर

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलै० का इरशाद है कि क़ब्र में सवालात का मुन्किर हमारा शिया नहीं। सवालात की गुज़श्ता सफ़हात में तफ़सील मौजूद है। दफ़न के वक़्त दो मर्तबा तलक़ीन इस बारे में बेहद मददगार साबित होती है। क्योंकि रवायत में मौजूद है कि तलक़ीन को सुनकर मुन्किर नकीर से कहता है चलो हुज्जत तमाम हुई, हमारे सवालात का जवाब तो पहले ही मिल गया।

छठां मुक़ाम – बर्ज़ख़

बर्ज़ख़ की मुकम्मल हालत व कैफ़ियत पेश की जा चुकी बेहद मजबूरी की ज़िन्दगी है। हां इस अर्से में अगर कुछ काम आता है तो अपने आसारे-नेक और औलाद व अइज़्ज़ा व अहबाब के भेजे हुए नेक तोहफ़े। यानी मय्यत के लिए किए हुए आमाले ख़ैर ख़ुसूसन हदयए मय्यत की नमाज़ अव्वल रकअ़त में बाद हम्द इन्ना अन्ज़लना और दूसरी रकअ़त में बाद हम्द इन्ना-आतैना बेहद कार आमद है। एक नमाज़ में कई मुर्दे शामिल किये जा सकते हैं।

https://downloadshiabooks.com/

सातवाँ मुक़ाम – क़यामत रोज़े हिसाब

सबसे ज़्यादा हवलनाक अज़ीम व सख़्त मुक़ाम जिसके तज़्केरे से क़ुरआ़न व अहादीस भरे पड़े हैं। उनकी जानिब तवज्जोह की जाय। क़यामत में पचास मुक़ामात हैं जिनमें से एक दूसरे से ज़्यादा सख़्त है। तफ़सील किताब मनाज़िल आख़ेरह में पढ़ा जाय। मुझे उम्मीद है कि इस किताब को पढ़ने वाले हज़रात मुझ गुनहगार को अपनी दुआओं में फ़रामोश न फ़रमायेंगे।

तमत बिलख़ैर

अहक़रुन्नास : – सैं० मोहम्मद अब्बास
क़मर ज़ैदी
जुलाई 1987

https://downloadshiabooks.com/

मख़सूस दुआएँ

रज़ीतो बिल्लाह

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलै० से मन्क़ूल है कि हर नमाज़ के बाद इस दुआ को पढ़ो जो कि तोशए आख़ेरत और बाइसे क़ुबूलियत नमाज़ व दुआ है, बाइसे रहमत व नजात है। इसके पढ़ने से ईमान कामिल होता है और तादम मर्ग ज़ायल नहीं होता।

रज़ीयतो बिल्लाहे रब्बन व बिल इस्लामे दीनन व बे मोहम्मदिन सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही नबीयन व बे अलीयिन इमामन व बिल ह-सने वल हुसैने व अलीयिन व मोहम्मदिन व जाफ़रिन व मूसा व अलीयिन व मोहम्मदिन व अलीयिन वल ह-सने वल ख़लाफ़िस्सालेहे अलैहि-मुस्सलामो अ-इम्मतन व सादतन व क़ादतन बेहिम अता-वल्ला व मिन आदाएहिम अता-बर्रओ।

सलवात

सैय्यद इब्ने ताऊस ने इब्ने बाबवेया ताबे सराह ने ब सनद सहीह हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अलै० से रवायत की है कि जो कोई बाद नमाज़ सुबह व नमाज़े मग़रिब के क़ब्ल इसके कि ज़ानू बदले या किसी से हमकलाम हो एक बार इस तरह पर सलवात भेजे। जनाब रिसालत म-आब पर और उनके अहलेबैत पर। तो हक़्क़े तआला सौ हाजतें उसकी बर लाता है। सत्तर हाजतें आख़ेरत की और तीस हाजतें दुनिया की।

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम

इनल्लाहा व मलाएकतेहू यो-सल्लूना अलन्-नबी

https://downloadshiabooks.com/

या अय्योहल-लज़ीना आमनू सल्लू अलैहे व सल्लेमू तस्लीमा अल्ला हुम्मा सल्ले अला मोहम्मदे-निन्-नबी व अला ज़ुर्रीयतेही व अला अहलेबैतेही ।

दुआए - मग़फ़ेरत

यह जाहिर है कि दरगाहे क़ाज़ियुल-हाजात से अपने मक़ासिद की तलबी में अगर बिरादरे-मोमिन को मोक़द्दम किया जाय तो उसकी भी तमाम आरजूएं पूरा होती हैं और मक़ासिदे-दिली हासिल होते हैं। ज़ैल की पाक दुआ भी इसी उसूल पर है। इसके अल्फ़ाज़ से पता चला है कि यह दुआ फ़क़ीरी के दूर करने कर्ज़ को अदा करने परेशानियों को दूर करने क़ैद से छूटने और तवगरी के आने के लिये बेहद मुईन है। हदीस में है कि इस दुआ को हर नमाज़े फ़रीज़ा के बाद पढ़ने से मज्कूरा बाला फ़ायदों के साथ क़यामत तक के गुनाह बख्शे जायेंगे ।

बिस्मिल्लाह-हिर्रहमा-निर्रहीम

अल्ला हुम्मा अद्ख़िल अला अहलिल्क़ुबूरिस्सुरूरा अल्लाहुम्मा अग़ने कुल्ला फ़क़ीरिन अल्लाहुम्मा अश्बे कुल्ला जाएइन अल्लाहुम्मा अलबिस कुल्ला उरयानिन अल्लाहुम्मा अक़्ज़े दीना कुल्ले मदयूनिन अल्लाहुम्मा फ़र्रिज़ अनकुल्ले मकरूबिन अल्लाहुम्मा रुद्दा कुल्ला ग़रीबिन अल्लाहुम्मा फ़ुक्का कुल्ला असीरिन अल्लाहुम्मा अस्लेह कुल्ला फ़ासेदिन मिन उमूरिल-मुस्लेमीना अल्लाहुम्मा अश्फ़े कुल्ला मरीज़िन अल्लाहुम्मा सुद्दा फ़क़रना बे ग़नाका अल्लाहुम्मा ग़ैय्यिर सू-आ हालना बेहुस्ने हालेका अल्लाहुम्मक़्ज़े अनद्दैना व अग़नेना मिनल फ़क़्रे इन्नका अला कुल्ले शैइन क़दीर ।

https://downloadshiabooks.com/